गी

त

गु

ञ्जा

र

गीत-गुञ्जार

रचयिता

जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता

पंडितरत्न श्री चौथमलजी महाराज के सुशिष्य

श्री केवलमुनिजी महाराज 'साहित्यरत्न'

सम्पादक

श्री गणेशमुनिजी महाराज शास्त्री, 'साहित्यरत्न'
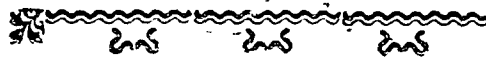
पुस्तक :

गीत गुन्जार : श्री केवल मुनि

आवृत्ति :

द्वितीय आवृत्ति

मई १९६८

मूल्य दो रुपए पच्चीस पैसे

प्रकाशक :

जैन दिवाकर दिव्य ज्योति कार्यालय

मेवाडी बाजार, ब्यावर (राजस्थान)

मुद्रक :

श्री विष्णु प्रिंटिंग प्रेस

राजामंडी, आगरा

वास्ते : राजमुद्रणालय

समर्पण

जैनदिवाकर प्रसिद्धवक्ता श्रद्धास्पद
दिवंगत गुरुदेव श्रीचौथमलजी महाराज
को
जिनका दिव्य-जीवन काव्य-सा प्रेरक
एवं इतिहास-सा रोचक था।

वि
न
या
व
न
त

—केवल मुनि

प्रकाशकीय

श्रद्धेय कविवर श्री केवल मुनि जी महाराज के लोकप्रिय गीतों का सुन्दर संग्रह 'गीत गुन्जार' के नाम से प्रस्तुत पुस्तक में संकलित हुआ है।

कवि श्री जी महाराज गायक कवि हैं, मधुर प्रवक्ता भी। उनके प्रेरणाप्रद गीत एक अभिनव स्फूर्ति तथा नवचेतना से ओतप्रोत रहते हैं।

श्रोताओं तथा जिज्ञासुजनों की माँग पर 'गीत गुन्जार' का प्रथम संस्करण सन् १६६४ में प्रकाशित हुआ था। इतना शीघ्र ही द्वितीय संस्करण निकालना पुस्तक की लोकप्रियता का स्पष्ट प्रमाण है।

इसके शुद्ध व सुन्दर मुद्रण आदि में श्री श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' तथा अन्य सज्जनों ने जो सहयोग किया है—उसके लिए हम हार्दिक धन्यवाद प्रकट करते हैं।

आशा है पूर्व संस्करण की भाँति यह संस्करण भी जिज्ञासु-जनों को अधिक रुचिकर व प्रेरणाप्रद सिद्ध होगा।

विनीत

स्वरूपचन्द तालेड़ा — अध्यक्ष

अभयराज नाहर — मन्त्री

श्री जैन दिवाकर दिव्यज्योति कार्यालय

ब्यावर (राजस्थान)

परिचय के दो बोल

संगीत अन्तर्हृदय का उच्छ्वास है। मानव की भव्य भावनाओं की सहज सरल और मधुर अभिव्यक्ति है। जीवन की कमनीय कला है,[1] जिसके अभाव मे जीवन नीरस है। महाकवि शेक्सपियर के शब्दो में "जो मानव संगीत नही जानता और उसके स्वरों पर मुग्ध नही होता वह पतित, विश्वासघाती और आत्मद्रोही है, उसका हृदय गहन अन्धकार युक्त रात से भी अधिक भयकर है वह अविश्वसनीय है।[2]

कर्मयोगी कृष्ण ने नारद से कहा, 'मेरा निवास वैकुण्ठ में नही है और न शुष्क-क्रियाकाण्ड करने वाले योगियो के हृदय में ही है। मैं तो वहां रहता हूं जहां पर मेरे भक्त तन्मय होकर सुमधुर स्वरलहरी से गाते है।[3]"

भारतीय साहित्य में संगीत की परम्परा अति प्राचीन काल से प्रचलित है। आगम, पिटक और बेदों में सर्वत्र उसका

---

(1) ज्ञातृधर्मकथा-प्रथम अध्ययन।

(2) The man that hath no music in himself, Nor is moved witn concord of sweet sounds is fit for truson, Stratage in and spoils. The nation of his spirits are dull as night. And his affliction dark as Evelbus let no such man be trusted.

(Shakespeare)

(३) नाहं वसामि वैकुण्ठे, योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति, तत्र तिष्ठामि नारद!

सुमधुर स्वर मुखरित है। संगीत पर जैन, बौद्ध और वैदिक संस्कृति के विद्वानों ने संख्याबद्ध ग्रन्थों का निर्माण किया है।[४] यह स्पष्ट है कि भारतीय संगीत में समय-समय पर परिवर्तन होता रहा है, जिस युग में जैसी जनरुचि रही उसी के अनुसार संगीत का रूप भी बदलता रहा है। लोक-संगीत में ही नही अपितु शास्त्रीय संगीत में भी परिवर्तन हुआ है।

आज सिनेमा-संगीत का युग है। सर्वत्र सिनेमा के वासनावर्धक गीतों की गूँज है। वासनाओं के दल-दल में फँसते हुए मानव को वचाने के लिये जैन श्रमणों ने सिनेमा की स्वर-लहरियों के आधार पर धार्मिक; सामाजिक, राष्ट्रीय और भक्ति-प्रधान गीतों का निर्माण किया है। प्रस्तुत पुस्तक में इसी प्रकार के गीतों का एक दमकता हुआ और महकता हुआ संकलन है। इन गीतों में प्रवाह है, माधुर्य है, जो गायको के दिल को लुभाता है।

गीतकार स्थानकवासी समाज के जाने और पहचाने हुए कवि केवलमुनिजी 'साहित्यरत्न' है। इनकी एक दर्जन से भी अधिक गीतों की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है और वे अत्यधिक लोकप्रिय भी हुई है।

प्रकृत पुस्तक में गीतकार के उन गीतों का संकलन और सम्पादन किया गया है जो जनता-जनार्दन का हृदय-हार है। ये गीत विरह और विषाद के विक्षेपग्रस्त मनका करुण-क्रन्दन नही, किन्तु आशा और उल्लास की जगमगाती ज्योति है।

सम्पादन कला मर्मज्ञ मेरे लघु गुरुभ्राता श्री गणेश मुनि शास्त्री, साहित्यरत्न ने उन सभी गीतो को विपयानुसार विभक्त

---

(४) लेखक का "भारतीय मंस्कृति मे संगीत-कला"—लेख

कर अपनी हंस-प्रतिभा का परिचय दिया है। मंगल, जागरण, उद्बोधन, सांस्कृतिक, अर्चना और बिखरे मोती के रूप में विभागों में उन्हें सजाया गया है। प्रत्येक प्रकरण के पूर्व एक संक्षिप्त और सार-गर्भित टिप्पण भी दिया गया है, जो उस प्रकरण का मर्म समझने के लिए उपयुक्त है। सम्पादक स्वयं गीतकार है, अतः उनके द्वारा किया गया प्रस्तुत सम्पादन गायकों के दिल को मोहेगा यह विश्वास किया जा सकता है।

जैन स्थानक
नागौर (राजस्थान)
११ जून १९६८

—देवेन्द्र मुनि, शास्त्री, 'साहित्यरत्न'
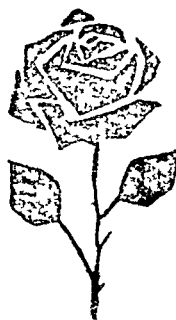
सम्पादक की कलम से

कला-और जीवन

भारत के एक प्रबुद्ध कलाचार्य ने जीवन की विशद व्याख्या प्रस्तुत करते हुए बतलाया है कि "कला ही जीवन है।" यदि गहराई से चिन्तन करते हैं तो यह स्पष्ट है; कि जिस जीवन में कला की साजसज्जा एव जगमगाहट है वही जीवन विश्व के रगमंच पर अपने अलौकिक व्यक्तित्व की चमक-दमक दिखला सकता है। इतना ही नही, किन्तु कला मानव जीवन में नव चेतना, नव जागृति एवं नव स्फूर्ति का अभिनव आलोक भर देती है। कलाविहीन जीवन अन्धकारपूर्ण है। उसमें कोई रस नही होता, और न लालित्य ही रहता है। कलाहीन जीवन जिया जाए तो क्या, और न जिया जाए तो क्या! वस्तुतः कलामय जीवन ही आदर्श और सफल जीवन है।

काव्य कला और संगीत कला

विश्व की ललित कलाओं में काव्यकला और सगीतकला का स्थान बहुत ही उच्च माना गया है। सगीत की मधुर झंकार पाकर मानव मन आह्लादित हो उठता है, काव्य और सगीत का दूध-मिश्री जैसा सुमेल है।

प्रस्तुत कृति का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होगा कि इसमे काव्यकला और सगीतकला का सुन्दर सामञ्जस्य हुआ है।

प्रतिभा

प्रत्येक मानव के अन्तर्मानस में विचारों का सुन्दर प्रवाह वर्षाकालीन नदी के समान इठलाता हुआ चलता रहता है, किन्तु उन्हें सुन्दर रूप मे अनुभव की रोशनाई से विचार-लेखनी द्वारा अभिव्यञ्जित कर देना साधारण विचारशील व्यक्तियों से सर्वदा सम्भव नही। दार्शनिक या कवि ही उसे सम्यक् प्रकार से अभिव्यक्त कर पाते है। इसमें भी जन्मजात प्रतिभा की तेजस्विता की आवश्यकता है, जो विरले व्यक्तियो मे ही सुलभ होती है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक में भी ऐसी ही प्रतिभा का आभास दिखलाई पड़ता है। गीतगुञ्जार के लेखक श्री केवल मुनि जी 'साहित्यरत्न' है। आप जैन दिवाकर प्रसिद्धवक्ता दिवंगत श्री चौथमलजी महाराज के शिष्य-रत्न है और है पंनी दृष्टि के विचारशील सत। आपकी गणना स्थानकवासी समाज के प्रमुख कवियो मे है। आपके ऊर्मिल-मानस में समय समय पर जो भाव-तरंगे उठती रही हैं, उन्हे सगीत का पुट देकर मूर्त रूप देने का प्रयास किया है।

विषय

प्रस्तुत रचना में शब्दों की रूप-सज्जा ही नहीं है, अपितु मानस के सुदीर्घ विचारों का आलोडन-विलोडन भी है। और साथ ही इतिवृत्त का चित्रण भी। साम्प्रदायिकता से संन्यास लेकर मुनि श्री ने नैतिक, सात्त्विक, धार्मिक और आध्यात्मिक पृष्ठ भूमि पर सरस तथा सरल भाषा में रागात्मक एवं काव्यात्मक शैली से गीत प्रस्तुत किये हैं। इसमें कोई सन्देह नही, मुनि श्री के गीतों में सौकुमार्य और माधुर्य का ऐसा सुखद-संगम हुआ है कि जिससे अध्येता मंत्र-मुग्ध बन जाते है। अनुप्रासों की कमनीय छटा तो गीतों मे चार चांद लगा रही है।

अपनी बात

मैं कोई सम्पादक या कवि नहीं हूँ जो कि कवि की कविता का सम्पादन कर सकूँ। पर हाँ, कभी कभी कवियों की पंक्ति में बैठ कर गुनगुनाया करता हूँ।

हमारे स्नेही साथी श्री देवेन्द्र मुनि जी शास्त्री, साहित्यरत्न के आग्रह का ही यह प्रतिफल है कि मैं श्री केवल मुनि जी के गीतों का सम्पादन इस रूप में कर सका हूँ। यद्यपि इस समय मेरा लेखन कार्य अन्य विषय पर चल रहा था, किन्तु उनकी अस्वस्थता तथा स्नेह ने ही मुझे इस ओर बाध्य किया।

मैंने प्रस्तुत पुस्तक के गीतों को छः प्रकरणों में विभाजित कर सजाने सवारने का प्रयास किया है। मंगल, जागरण, उद्बोधन, सास्कृतिक, अर्चना और बिखरे मोती। इसमें मुनि श्री के गीत कुछ प्राचीन है और कुछ नवीन। प्राचीनता और नवीनता, दोनो का मधुर संगम इस पुस्तक में है।

प्रबुद्ध पाठक प्रत्येक प्रकरण को गहराई से देखे। प्रकरण के प्रारम्भ में ही एक दिशा सकेत या टिप्पण मिलेगा, जो इस दिशा में यह एक नया ही मोड़ है। आशा है पाठकों के मन को लुभाने वाला बनेगा।

प्रस्तुत पुस्तक के गीतो का संकलन-आकलन कैसा हुआ ? कितना सुन्दर व उपादेय बना ? यह मैं कुछ नहीं कह सकता। इसका सही मूल्यांकन तो प्रबुद्ध अध्येता ही कर सकेगे।

यदि 'गीत गुंजार" द्वारा जैन समाज ज्ञान का एक भी मधुकण या स्फुलिंग प्राप्त कर सका तो मैं अपना श्रम सफल समझूँगा।

क्षमापर्व
जालोर मारवाड़
७—८—६३

—गणेश मुनि शास्त्री, 'साहित्यरत्न'

लेखक
केवल मुनि

सम्पादक
गणेश मुनि

क्रम दर्शन

विषय	गीत	पृष्ठ
मंगल	४२	१–४४
जागरण	३०	४५–८२
उद्‌बोधन	४२	८३–१३२
सांस्कृतिक	१७	१३३–१५४
अर्चना	१३	१५५–१६२
बिखरे मोती	३१	१७७–२१६

मं
ग
ल

मंगल

अहा ! कितना प्रिय, कितना रमणीय, कितना आह्लाद-प्रद शब्द है मंगल ! जिसके श्रवण करने के लिए कर्ण अहर्निश लालायित रहते हैं। प्राणी मात्र की अन्तश्चेतना जिस के लिए छटपटाती है, समस्त विश्व का केन्द्र-मंगल है। मंगल के लिए ही मानव भीमकाय समुद्रों के वक्षस्थल पर मछलियों की भाँति तैरता है। समुद्र के तल में पहुँचता है। पृथ्वी के विवर में उतरता है। निर्जन-वन के पथ पर संचरण करता है। हिमाच्छादित हिमालय की उत्तुङ्ग चोटी पर चढ़ता है। रेगिस्तान के शुष्क मैदानों में मीलों घूमता है। मेघ के गर्जन-तर्जन की चिन्ता किये बिना ही अन्धड़-तूफानों में गुज-रता है। कल्पना के पंख लगा कर अनन्त आकाश को नाप लेना चाहता है। मंगल की प्राप्ति में मन का पंछी फड़फडा कर रह जाता है, पर मंगल कहाँ ? क्या इन भौतिक पदार्थों मे मंगल है ? नही।

ओ जग के भोले प्राणी ! कहां ढूंढ़ रहे हो मंगल ! वह तो तुम्हारे ही हृदय में अठखेलियाँ कर रहा है। जरा नेत्र खोल कर निहारो ! तुम्हारे ही भीतर मंगल की असीम दुनिया जगमगा रही है। जहाँ कभी अमगल की रजनी प्रवेश कर नहीं पाती। मंगल का दिन अपनी अलौकिक प्रभास्वरता को लिए नित्य मुस्करा रहा है।

प्रस्तुत प्रकरण में गीतकार ने अपने आराध्य देव के श्री चरणों में भावों के रंगविरंगे पुष्पों का उपहार भेट कर भूले राही के लिए मंगल की एक सही दिशा सुझाई है।

—सम्पादक

महामन्त्र

१

[तर्ज : लेके पहला-पहला प्यार....।] 'सी० आई० डी०'

जपो - जपो नवकार, जपो होवे मंगलाचार।
महामत्र की महिमा है अपरंपार ॥ध्रुव॥

'नमो अरिहंत-सिद्ध-नमो आयरिय।
नमो उवज्झाय-सव्वसाहू'-वंदनीय॥
चौदह पूर्व का है सार, भवि-जीवों का आधार....

इसी नाम से तरी 'चन्दनबाला'।
'श्रीमती' के सर्प बना पुष्प-माला॥
सुनो - सुनो नर नार ! हुआ जय - जयकार....

'द्रौपदी' सती के चीर बढ़ा है।
'सीता' के अग्नि का नीर बना है॥
'सुभद्रा' की सुनी पुकार, खुले खट-खट चम्पा द्वार....

'श्रीपाल-मैना' ने ध्यान लगाया।
कुष्ठ मिटा, हुई कंचन - काया॥
आई जीवन में बहार, छाया हर्ष अपार....

इसी नाम से कई रोते-हंसे है।
बिगडे - बने कई उजड़े - बसे है॥
जपो - जपो बारबार, 'केवल मुनि' बेड़ा पार....

२

भाव-आरती

[तर्ज : आरती करो शंकर की भोले....] 'हरहरमहादेव'

आरती करो जिनवर की ! प्रेम दिनकर की ।
शान्ति शशिधर की ! आरती करो.. ।। ध्रुव ।।

अपनी देह बनाओ मन्दिर ।
शीश-स्वर्ण का कलश मनोहर ।।
हृदय-सिहासन पर विठलाओ मूर्ति परम-ईश्वर की....

प्रेम - स्नेह का दीप जलाओ ।
श्रद्धा का सुधूप लगाओ ।।
रूम-भुम नाचो रोम-रोम से रिमझिम ले जलधर की....

नयन-कमल मे भर निर्मल-जल ।
पावन-सन्मति का धर श्रीफल ।।
गीत गाओ वाणी-वीणा पर ध्वनि हो कल निर्झर की....

विविध भक्ति-भावो के अक्षत ।
नैवेद्य - चन्दन पुष्प - सुगन्धित ।।
अपर्ण करो चरन-कमलो मे पूजा कर प्रभुवर की !....

भाब - साधना, भाव - वन्दना ।
भाब - आरती, भाव - अर्चना ।।
'केवल मुनि' कल्याणकारिणी-तारिणी-भवसागर की....

भगवान ! दया कर दो　　३

[तर्ज : तू प्यार का सागर है.... ।] 'सीमा'

भगवान ! दया कर दो, शरण में तेरी आए हम ।
हे जगत पिता ! सुध लो, तुम्हारे शिशु कहलाए हम ।। ध्रुव ।।

देख लिया है भटक-भटक कर प्रभु ! सारा संसार,
तुम सा कोई नजर न आया, जिनवर ! तारनहार,
अब द्वार पड़े तेरे और कही भी नही जाएँ हम ।।

नैया टूटी सागर गहरा, सूझे न वारापार,
आओ ! स्वामी - आओ !! तुम बिन कौन लगाए पार ?
तुम जग के खिवैया हो, इसी से विनय सुनाएँ हम ।।

करुणा - सिन्धु ! दीन - दयालु ! एक तुम्हारी आश,
पावन - चरण - कमल में तेरे दढ़तम है विश्वास,
इक लगन लगी दिलकी कि तुम जैसे बन जाएँ हम ।।

पत्र-पुष्प नही, धूप-दीप नही, नही नैवेद्य नही हार,
भाव भरा मन है 'केवल मुनि' करो प्रभु ! स्वीकार,
ठुकराना नहीं भगवन् ! भेट भक्ति की लाए हम ।।

४

चन्दना पुकारे

[तर्ज टिम-टिम करते तारे....] 'चिराग कहां रोशनी कहां'

भक्तो के सहारे, 'त्रिशला' दुलारे।
आओ ! प्रभु-आओ !! तुम्हे 'चन्दना' पुकारे ॥ ध्रुव ॥

स्वर्ग मे बैठी माता, पिता कही दूर।
राजकुमारी विकी होके मजबूर ॥
सोच - सोच बाते चले दिल पे दुधारे....

तो भी कर्मो को जरा दया नही आई।
सिर मुंडा, हथकडी बेड़ी पहनाई ॥
तीन दिन तहखाने मे भूखी ही गुजारे....

सौभाग्य से प्रभु ! मेरे द्वार तुम आए।
धन्य-घडी धन्य-धन्य-दर्शन पाए ॥
लौट गये बह रही आँसुओं की धारें....

पारणा न लो तो मै न करूँ पारणा।
दान लेके देव ! दुखिया को तारणा ॥
करुणा करो हे नाथ ! शरण तुम्हारे....

हृदय की पुकार सुन प्रभु लौट आए।
पारणा लिया कि रोम-रोम हर्षाए ॥
'केवल मुनि' झूम उठी खुशी की बहारें....

जय बोलो जी ! ५

[तर्ज : हवा मे उडता जाए....] 'वरसात'

सब सज्जन दिल से बोलो ! महावीर-प्रभु की जय बोलो जी !
मन-मन्दिर के पट खोलो ! महावीर प्रभु की जय बोलो जी !!

घन-घन-घन-घन गगनांगन में, देव-दुदुभी बाजे ।
चम-चम-चमके मुखड़ा प्रभु का, देख रवि-शशि लाजे !!

रिमझिम-रिमझिम बादल जैसे, प्रभु की वाणी बरसे ।
कलकंठी केकी के सदृश, भविजन के मन हरषे ॥

छुम-छुम-छुम-छुम पायल बाजे, देव-देविया नाचे ।
रण-रण-रण के ककन करके अनुपम शोभा साजे ॥

फर - फर - फर के महेन्द्र - ध्वजा युग श्वेत चॅवर ढुरते है ।
पद्म - कमल से कोमल - पद में, रत्न मुकुट झुकते है ॥

'केवल मुनि' सुन्दर सुमनो की झर-झर वर्षा होवे ।
सुगन्ध बिन्दु शोभित पराग से सुर नर के मन मोहे ॥

●

६ मुझे पार लगाना रे !

[तर्ज : ओ नाग कहीं जा बसियो रे....।] 'नाग पंचमी'

भगवान् ! भूल ना जाना रे, मुझे पार लगाना रे ।। ध्रुव ।।
डगमग-डगमग डोल रही है, बीच भँवर में नैया।
झुला रही उत्ताल तरंगे, तुम बिन कौन खिवैया ?
करुणाकर करुणा लाना रे........

भटक-भटक कर हारा भगवन् ! कही न आसरा पाया।
चरण-कमल की छाया दे दो, द्वार तुम्हारे आया ।।
शरणागत को अपनाना रे........

भक्ति का रंग कभी न उतरे, लाख बार कोई धोये।
ज्यों-ज्यों धोये त्यो-त्यो निखरे, कभी न फीका होए ।।
प्रभु ऐसा रग चढ़ाना रे........

'केवल मुनि' नही भूँलू तुम को जैसे चन्द-चकोरा।
पतग - दीप को मयूर - घन को, कमल - कली को भौरा ।।
ऐसा वरदान दिलाना रे........

भक्ति के पुष्प चढ़ाएँ

७

[तर्ज मोहन की मुरलिया बाजे....।] 'मेला'

भक्ति के पुष्प चढाएँ हो ऽ ऽ ऽ हम गीत प्रभु के गाएँ ॥
कुण्डलपुर में जन्म लिया है, 'त्रिशला' मात दुलारे।
नृप 'सिद्धार्थ' के नन्दन प्यारे, भारत के उजियारे ॥
हम झुक-झुक शीष नमाएँ हो........

कंचनवर्ण मनोहर-आनन, कमल पुष्प—तन सोहे।
आत्म-शक्ति का तेज निराला, सुर-नर का मन मोहे ॥
हम वन्दन कर हर्षाएँ हो........

'शालिभद्र' 'सुबाहु' तारे, देवोपम सुखभोगी।
'अर्जुन' 'चन्दनबाला' तारी, तारे 'गौतम' योगी ॥
ले शरण हम भी तर जाएँ, हो........

'केवल मुनि' जय शांति सुधाकर! जय जगपति! जय स्वामी!
जय-जय-जय-जय आनन्ददाता! जय-जय अन्तर्यामी!
प्रभु-कीर्तन कर सुख पाएँ हो........

●

८
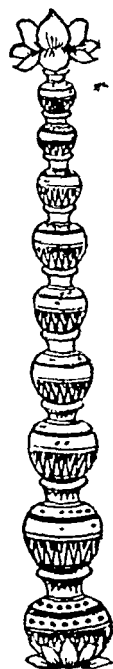
नैया मोरी पार करो

[तर्ज : जादूगर सैयां ! छोड़ मेरी....।] 'नागिन'

भंवर में नैया, तू ही है खिवैया !
तेरा है आधार, नैया मोरी पार करो ।।
ऊँची-ऊँची लहरे, नैया को घेरे ।
तारो तारणहार ! नैया मोरी पार करो ।।ध्रुव।।

घन अँधियारा, कोई न सहारा, दूर किनारा दूर है ।
पतित-पावन ! अधम उधारन ! नाम तेरा मशहूर है ।।
मै आया तेरे द्वार.......

संकटहारी ! शरण तिहारी ! लगन लगी है तेरे नाम से ।
चातक की ज्यों स्वाति बूंद से, राधा की घनश्याम से ।।
तन-मन की यही पुकार........

ओ जग स्वामी ! अन्तर्यामी ! एक तुम्हारी आश है ।
'केवल मुनि' तेरे चरण-कमल में, मेरा दृढ़ विश्वास है ।।
है विनय यही हर वार.......

●

मिलते हैं भगवान

[तर्ज : देख तेरे संसार की हालत''''] 'नास्तिक'

सम्यग् - संयम सम्यग् - दर्शन सम्यग् होवे ज्ञान ।
उसी को मिलते हैं भगवान ।
चाँद-सा निर्मल, फूल-सा कोमल, उज्ज्वल सूर्य समान
उसी को मिलते है भगवान ।।ध्रुव।।

डसे न जिसको, क्रोध का काला ।
पिये नहीं जो मद का प्याला ।।
जिस पर नही, माया का जाला ।
जले न जिसके लोभ की ज्वाला ।।
शान्त-धीर हो, नम्र - सरल हो, निर्लोभी-गुण-खान........

ईश्वर मिले न गंगा नहाए ।
ईश्वर मिले न तीर्थ जाए ।।
ईश्वर मिले न राख लगाए ।
ईश्वर मिले न धूनि रमाए ।।
भक्ति-तीर्थ हो, त्याग-पानी हो, सदाचार का स्नान........

जिसका करुणा-निर्झर मन हो ।
जिसके अमृत- सने वचन हो ।।
जिसके निश्छल-शान्त नयन हो ।
सत्य - प्रेम ही, जिसका धन हो ।।
'केवल मुनि' ज्ञान - ज्योति का, पाए वही वरदान........

१२ आश लगी है

[तर्ज : घर आया मेरा परदेशी ।''''] 'आवारा'

आश लगी है दर्शन की, चरण कमल के वन्दन की ।।टेर।।

नयना पन्थ निहार रहे, आओ ! प्राण पुकार रहे।
साध है अर्चन - अर्पण की.... ...

'सीता' जैसे राम रटे, 'राधा' जैसे 'श्याम' रटे।
ऐसी रट लग रही मन की........

तुम हो चन्द चकोर हूँ मैं, तुम श्यामल-घन मोर हूं मैं ।
कोकिल हूं मधुकानन की........

ज्योति पुंज दिव्य दिनकर हो, भव्य शान्तिमय शशिधर हो ।
माधुरी हो नन्दन वन की........

वाणी सुधारस वर्षेगे, तन मन आनन हर्षेगे ।
धन्य घड़ी है उस दिन की........

पद-रज शीश चढ़ाऊँगा, सेवा कर सुख पाऊँगा ।
'केवल मुनि' मन भावन की''''''''

●

ॐ शान्ति

१३

[तर्ज : मन डोले मेरा तन डोले''''] 'नागिन'

ॐ शान्ति ! जय ॐ शान्ति !
ॐ शान्ति की उठे पुकार रे !!
ॐ शान्ति की बाजे बांसुरियां........

राष्ट्र-राष्ट्र मे युद्ध-द्वेष की कभी न धधके ज्वाला।
रणचण्डी अब पहन न पाए नर-मुण्डों की माला ।।
अरे हां नरमुण्डों की माला–
ॐ शान्ति ! जय ॐ शान्ति !
ॐ शान्ति की हो झंकार रे........

हिरोशिमा––नागाशाकी का ध्वंस भूल मत जाना।
उद्जन-अणुबम कभी न फूटे ऐसा राग जगाना ।।
अरे रे ऐसा राग जगाना–
ॐ शान्ति ! जय ॐ शान्ति।
मन-मन के मिल जाए तार रे........

मानव-मानव रहे मित्र बन वैर—लड़ाई भूलें।
'केवल मुनि' सब सुखी रहे और प्रेम के झूले झूलें ।।
अरे हां प्रेम के झूले झूलें–
ॐ शान्ति ! जय ॐ शान्ति !
घर-घर हो मंगलाचार रे.......

●

१४ महावीर की वाणी

[तर्ज : मोहन की मुरलियां....] 'मेला'

महावीर की वाणी गाजे, ओऽऽ सुन-सुन के भविमन नाचे ॥
॥ध्रुव॥

नव-पल्लव नव-पुष्प सुफल युत, अशोकवृक्ष की छाया ।
स्फटिक-सिहासन पर शोभित वर स्वर्ण-वर्ण-सी काया ॥
मुख देख के चन्दा लाजे ओ........

दर्शन कर मोहनमूर्ति के नयन तृप्त नही होवे ।
सुरनर प्रभु को वन्दन कर कर भव-भव पातक खोवे ॥
मन भक्ति रग मे राचे ओ........

मदिर - मधुर - कल-कल निर्झर-सी अमृत-वाणी बरसे ।
पशु-पक्षी भी भाग्य सराहे, तन-मन-आनन हरसे ॥
भव-भव मे भक्ति याचे ओ........

द्वादश परिषद खिल रही ऐसे जैसे केशर-क्यारी ।
नाथ हमारे 'त्रिशला नन्दन' ! करुणा निधि ! उपकारी ॥
है देव जगत में सांचे ओ ....

गुण-रत्नाकर की गरिमा का पार कोई नही पाया ।
'केवल मुनि' इन प्रभु के जैसा और नजर नहीं आया ॥
तीनों भवनों को जांचे ओ........

आए भगवान हैं

[तर्ज : चुप-चुप खड़े हो....] 'बड़ी बहन'

दर्शन पाएं चलो ! आए भगवान हैं ।
करुणा निधान है जी, करुणा निधान है ॥ ध्रुव ॥

तेज - पुञ्ज - दिव्य - भव्य - मनोहर - काया है ।
नरेन्द्रों - देवेन्द्रों के भी रूप मन भाया है ॥
दर्शन - अनन्त है, अनन्त - ज्ञानवान है........

अरुण - कमल जैसे आनन है, नैन है ।
मधुर - सुन्दर - मृदु - अमृत - से बैन है ॥
अद्भुत - अलौकिक - अतिशयवान है........

मंद -मंद पुष्प - वृष्टि दिव्य - ध्वनि सुहावन ।
दुंदुभि - चंवर - छत्र - भामण्डल - सिहासन ॥
सुरभित अशोक वृक्ष करे छाया दान है........

सागर - सदृश प्रभु महान् गम्भीर है ।
निर्मल शशि से भी शीतल है, धीर है ॥
दिनकर से भी वे अधिक ज्योतिमान है........

'शारदा' - 'सुरेश' - गणपति गीत गाते है ।
भक्ति से वन्दन कर बलि - बलि जाते है ॥
शान्त - दान्त - वीतराग महा गुण - खान है........

सौभाग्य से सेवा पाए चरण-कमल की ।
आनन्द - सदन वर मंगल - विमल की ॥
धन्य है 'केवल मुनि' बड़े पुण्यवान है........

१६

पान करो

[तर्ज : छोड़ गए बालम...] 'बरसात'

पान करो मित्रों ! तुम भक्ति - रस का पान करो।
ध्यान करो मित्रों ! कुछ देर प्रभु का ध्यान करो। ध्रुव ॥
यदि प्राणों के एक-एक करण मे भक्ति रंग घुल जाए।
कोटानुकोटि कर्म कटे और तीर्थंकर बन जाए ॥
विमल भक्ति भावों की गङ्गा भव-भव पातक धोती।
भक्ति से हृदय-मन्दिर में, जगमग जगती ज्योति ॥
भक्ति बिन मुक्ति नही पावे, ज्ञानी सुन्दर केशी।
पशु से नीची गति वाला भी देव बना 'परदेशी' ॥
भक्त 'सुदर्शन' देव शक्ति पर, भक्ति से जय पाया।
भक्ति ने 'चन्दनबाला' का बेड़ा पार लगाया ॥
क्रिया-काण्ड सब व्यर्थ भक्ति बिन प्राण बिना ज्यों काया।
मानव छाया पुष्प-चित्र या इन्द्रजाल की माया ॥
भक्ति भाव का निर्मल निर्झर 'केवल मुनि' जहां गाता।
वही हरियाली, वही फूल फल, वही पक्षी दल आता ॥

●

गौतम स्तुति

[तर्ज : जब तुम्ही चले परदेश....] 'रतन'

माता 'पृथ्वी' के नन्द, करें आनन्द, सदा सुख पावे ।
जो 'गौतम गणपति' ध्यावे ।।ध्रुव।।

जय-जय गणेश ! जय गण नायक !
जय-जय गणधर ! जय शिवदायक !
लाखों नर - नारी देवी - देव गुण गावे ।।

दुर्भाग्य मिटे-दारिद्र्य नशे, सौभाग्य बढ़े, सम्पत्ति विलसे ।
नुपुर रणकाती लक्ष्मी रानी आवे ।।

है विघ्नविनाशक ! जग नामी ! लब्धि-सम्पन्न-निधि स्वामी !
आशा-तरु में नव-नव पल्लव प्रकटावे ।।

दुर्मति वारक ! संकट हर्ता ! शरणागत के पालनकर्ता ।
शत्रु भी मित्र बन सादर शीश नमावे ।।

'केवल मुनि' मंगलाचार करे, दे ऋद्धि-सिद्धि भंडार भरे ।
मकरन्द-गन्ध-सा दिग्दिगन्त यश छावे ।।

●

१८ महावीर के चरणों में

[तर्ज . अफसाना लिख रही हूँ........] 'दर्द'

महावीर के चरणो में जिसका सच्चा प्यार है।
भव-सिंधु के भंवर से नैया उस की पार है ।।ध्रुव।।

लाखों में कह सकता हूँ यह दावे के साथ मैं।
भगवान की भक्ति ही इस जीवन का सार है।।

बन जाओ मस्त ध्यान मे दुनिया को भूल कर।
करुणा-सिन्धु है दुखियो की सुनते पुकार है।।

इस द्वार से कोई कभी खाली नही गया।
इस नाम की, इस मत्र की महिमा अपार है।।

एक बार जाप तो जपो चाहो सो पाओगे।
'वर्धमान प्रभु' "केवल मुनि" भरते भण्डार हैं।।

तेरा ही आधार है

[तर्ज : चुप-चुप खड़े हो........] 'बड़ी बहन'

डग-मग डग-मग नाव मझधार है।
तेरा ही आधार प्रभु ! तेरा ही आधार है ।।ध्रुव।।

झंझा के झकोरे प्रभु ! झूलने-सी झूलती ।
छोटी-बड़ी लहरियों पै उतराती-डूबती ।।
आशा की किरन तू ही तू ही, पतवार है........

करुण-क्रन्दन सुन 'चन्दना' को तार दी ।
'अर्जुन माली' की नाथ ! बिगड़ी सुधार दी ।।
दयाशील देव ! क्यो देर मेरी बार है ?........

माता तू ही पिता तू ही तू ही मेरा प्राण है ।
तेरे हाथ लाज अब मेरे भगवान है ।।
दीनबन्धु ! दीन की छोटी-सी पुकार है........

मंगल - करण तू ही तारण-तरण है ।
पतित-पावन ! 'मुनि केवल' शरण है ।।
तेरी दया दृष्टि से मेरा बेड़ा पार है........

●

२०

प्रेम से गाया कर

[तर्ज · कोई रोके उसे और यह कह दे] 'सिन्दूर'

ए प्राणी ! सांझ-सवेरे तू प्रभु गीत प्रेम से गाया कर।
हृदय-मन्दिर में भक्ति का सुन्दर प्रदीप जलाया कर ।।ध्रुव।।

ॐ, 'उषभ, 'अजित' सभव' स्वामी,
'अभिनन्दन' है अन्तर्यामी ।
प्रभु 'सुमति' 'पद्म' 'सुपार्श्व' और,
'चन्दा' को शीश नवाया कर।।

श्री 'सुविधि' 'शीतल' 'श्रेयाँस' प्रभु,
है 'विमल' विमल बुद्धि दाता ।
वन्दन कर 'अनन्त' 'धर्म' प्रभु को,
'शान्ति' से शान्ति पाया कर ।।

प्रभु 'कुन्थु' 'अर, मल्लि' जिनवर,
'मुनिसुव्रत' 'नमि' नाथ हितकर ।
श्री 'अरिष्टनेमि' 'पार्श्व' स्वामी,
'महावीर' का ध्यान लगाया कर ।।

पग-पग पर आनन्द पायेगा,
'केवल मुनि' जय जय जय होगी ।
स्तुति कर चौबीस जिनवर की,
तू अपना भाग्य जगाया कर ।।

•

चाँद से !

२१

[तर्ज : चन्दा । देश पिया के जा....] 'भरथरी'

चन्दा ! महाविदेह मे जा ॥ध्रुव॥

मेरे स्वामी 'श्रीमंधर' को, वन्दन करना जगदीश्वर को ।
सादर शीश झुका......

आते जाते, जाते-आते, प्रभु से कर आना दो बाते ।
मुझ पर करुणा ला........

कहना मेरी राम कहानी, दर्शन का प्यासा एक प्रानी ।
सन्देशा ले जा........

पहाड़ पड़े है कर्म रेख बन, नदियाँ बह रही भाग्य लेख बन ।
कैसे जाऊं बता ?........

पंख नहीं जो उड़कर आऊ, चरण-कमल के दर्शन पाऊं ।
इतनी जाय सुना........

कहना मेरी नाव तिरादे, हृदय-मन्दिर में ज्योति जगादे ।
बतलादे शिव राह........

इतनी-सी शान्ति है "केवल", जैन धर्म का पाया हूँ बल ।
परमानन्द पद दा........

•

२२
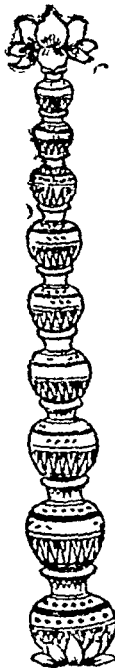
मन वीणा पर

[तर्ज : भूलूंगी-भूलूंगी....] 'शकुन्तला'

गाऊंगी-गाऊंगी-गाऊंगी मैं मन वीणा पर अपने प्रभ के।
मधुर-मनोहर-गीत ॥ध्रुव॥

चाहे तुम बेडियां पहिनादो, चाहे तुम शूली लटकादो।
अटल-अचल है मेरी भक्ति कभी न डिगने पाऊँगी ॥

प्रभु नाम मेरा जीवन है, प्रभु नाम ही मेरा धन है।
प्रभु नाम पर वारुं तन-मन सजनि ! बलि-बलि जाऊंगी ॥

चाहे तुम धन-वैभव ले लो, चाहे पेट भर गालियां दे लो।
लेकिन प्रभु न छुडाओ मुझ से, मैं यही विनय सुनाऊंगी ॥

चाहे बोलो मीठी बोली; चाहे जितनी करो ठठोली।
दुनियाँ के सुख का लालच दो, तो भी मैं न लुभाऊँगी ॥

दूर दुई की रेख करूँगी, प्रभु चरणों में लीन बनूंगी।
सोया भाग्य जगाकर अपना, "केवल" आनन्द पाऊंगी ॥

साँप जरा मुस्काया

[तर्ज . आप से मिलने का अरमान लिये....]

वीर को काट के फिर सांप जरा मुस्काया ।
जहर को उगल के भी, आज मै अमृत पाया ।।ध्रुव।।

आँख से आँख मिली, आँख बिनाई पाई ।
सब कुछ सूझ पड़ा, एक उजेला आया ।।

पहले जो आते थे, सब जहर ही पिलाते थे ।
आज ए देवता ! तूं प्रेम का अमृत लाया ।।

जहर जाता नही चन्दन के लिपटने पर भी ।
जहर भव-भव का मिटा चरण से जब लिपटाया ।।

आज सब ओर मुझे मित्र नजर आते है ।
क्रोध की आग बुझी शान्ति से शान्ति पाया ।।

नाग पंचमी को पिलाते है दूध अब तक भी ।
सांप जैसे को भी दुनियाँ में तूने पुजवाया ।।

मेरे स्वामी । तेरी तारीफ मैं करूँ कहां तक ?
तेरी ही शरण से 'केवल मुनि' आनन्द पाया ।।

●

२४

प्रीत मेरी कभी न छूटे

[तर्ज : मैंने देखी जग की रीत....] 'सुनहरे दिन'

मेरी लगी चरण से प्रीत, प्रीत मेरी कभी न छूटे ।
हो, मै गाऊं तुम्हारे गीत, गीत प्रभु ! मीठे मीठे ।।
प्रीत मेरी कभी न छटे........

प्राणों के आधार प्रभु ! नयनों के तारे हो ।
आशा की उज्ज्वल-ज्योति ! जीवन सहारे हो ।।
मेरे तुम ही सच्चे मीत ! मीत दुनियां के झूठे........

तारन - तरन ! भव सागर तिराईये ।
पतित - पावन नाथ ! पावन बनाईये ।।
है यही कामना देव ! पिऊं प्रेमामृत घूंटे........

भाग्य से ही पुण्य से ही प्रभु ! तुम्हे पाया हूँ ।
'केवल मुनि' चरणों की शरण में आया हूँ ।।
मै लूं कर्मों को जीत-जीत भव-बन्धन टूटे........

●

चौवीस जिनंद

[तर्ज : ओ नाग ! कहीं जा बसियो रे] 'नाग पंचमी'

चौवीस जिनंद ! गुण गाऊं रे मैं आनन्द पाऊं रे ।।ध्रुव।।

'ऋषभ देव जी' 'अजित नाथ जी' 'संभव' प्रभु 'अभिनन्दन' ।
'सुमति', 'पदम', 'सुपार्श्व नाथ जी' 'चन्द्र' है शीतल चन्दन ।।
मैं चरण-कमल बलि जाऊं रे....

'सुविधि','शीतल', श्रेयाँस', 'वासुपूज्य' 'विलमनाथ' गुण आगर !
'अनन्त', 'धर्म', 'श्री शान्ति' जिनेश्वर, शांति-सुधा के सागर !!
मैं झुक-झुक शीश नमाऊँ रे....

'कुन्थु', 'अर', 'मल्लि', 'मुनिसुव्रत' 'नमि' जिन मंगलकारी ।
'अरिष्ट नेमि', प्रभु 'पार्श्व नाथ जी', 'महावीर' सुखकारी ।।
मैं गौतम गणपति ध्याऊं रे....

विहरमान प्रभु गणधर, सतिया, अनन्त सिद्ध भगवान ।
'केवल मुनि' सादर वन्दन से, होय परम कल्याण ।।
भव-भव मे शरण मैं चाहूं रे....

●

२६ शादी रचा के क्या करूँ ?

[तर्ज : मेरे लिए जहान मे....] 'खानदान'

माता ! मेरी तूहीं वता, शादी रचा के क्या करूं ?
रहना नही सदा यहाँ, घरवा बसा के क्या करूँ ? ।।ध्रुव।

भोली भाली किशोरियाँ, स्वप्नों के महल सज रही।
आशाएँ उन की तोड़ कर, उन को रुला के क्या करूँ ?

एक दिन भी मां ! मुझे नही, दुनिया के खेल खेलना।
सेहरा बन्धा के क्या करूं ? कंगन बन्धा के क्या करूँ ?

मिट्टी के इस शरीर पर शृंगार कर के क्या करूं ?
कपड़े पहिन के क्या करूँ ? भूषण सजा के क्या करूँ ?

जो ढ़लने वाला रूप है, पिछले पहर की धूप है !
मुर्झाने वाला फूल है, उसपे लुभा के क्या करूँ ?

दुनियाँ के झूठे ऐश में, दुनियाँ के झूठे प्यार में।
फंस कर अमूल्य रत्न-सा, नर-तन गवाँ के क्या करूं ?

'केवल' जहाँ प्रभु बसे, मेरी वह नगरी दूर है।
रैन बसेरा है यहाँ, प्रभु को भुला के क्या करूँ ?

[तर्ज : झूले के संग झूले झूले मेरा....] 'झूला'

आनन्द के झूले झूले मेरा मन ।

फूल, कली-सा फूले फूले मेरा मन ।।ध्रुव।।

प्रभु ! दर्शन के प्यासे थे मेरे नयन ।

प्रभु - दर्शन की दिल में थी मेरे लगन ।।

पाई है आज खुशी छू कर चरन........

सुनके जादू भरे प्यारे-प्यारे वचन ।

ज्ञान ज्योति जगी खुले अन्तर-नयन ।।

मुझको तिराओ प्रभु ! तारन-तिरन........

है मंगलमयी धन्य आज का दिन ।

मैं वलिहारी जाऊँ ए त्रिशला-ललन !

हुआ 'केवल मुनि' मेरा तन-मन-मगन........

●

२८ श्रद्धे !

[तर्ज : चंदा ! देश पिया के जा....] 'भरथरी'

श्रद्धे ! हृदय मन्दिर में आ ।।ध्रुव।।

जन्म-जन्म के श्रम तम खो दे, कलमष का मल मल-मल धो दे ।
करुणा कण वर्षा........

मधु-मयी माधव बन कर आ री ! महका दे री क्यारी-क्यारी ।
आनन्द - पुष्प खिला.... ...

ला दे मनहर समय सलौना, मुखरित कर दे कौना-कौना ।
पंचम स्वर में गा.... ...

अमा मिटा कर कर दे राका, तू है रूप अध्यात्म रमा का ।
श्रेष्ठ ज्ञान-निधि दा........

ज्योति जगा, कर दे दिवाली, झिलमिल छा जाये उजियाली ।
ज्ञान का दीप जला........

श्रद्धे ! आवागमन मिटाकर, 'वर्धमान' की शरण दिलाकर ।
चिर-संगिनी बन जा........

'केवल' मंगलमयि ! सुख दायिनी !
शिव शान्ति दा ! सुधा विधायिनी !
आ अन्तर में आ........

●

[तर्ज : आई वसन्त बहार....]

चलो चले उस पार, सजनी ! चलो चलें उस पार ।।ध्रुव।।

जहां न रिमझिम सावन आये, जहाँ न पपीहे पी-पी गाये ।
जहाँ न झूठा प्यार........

जहाँ न आती राते काली, सदा ज्ञान की है उजियाली ।
एक नया संसार........

जहाँ न गीत विरह के गावे, जहां कभी न बिछुड़ने पावे ।
जुड़े रहे जहाँ तार........

जहाँ न मलय बहे मतवाली, जहाँ न ग्रीष्म की धूप कराली ।
सदा वसन्त बहार........

क्या रखा है झूठे सुख में ? कड़वे दुख से लिपटे सुख में ।
छोड़ो यह व्यापार........

सच्चा सुख है मोक्ष नगर में, सच्चा सुख है प्रभु के घर में ।
'केवल' कर इतबार........

●

३०

मैं क्या चाहता हूँ?

[तर्ज : भगवान ! तेरे घर का सिंगार जा रहा है....] 'नागपंचमी'

छाया चरण-कमल की भगवान ! चाहता हूं,
भक्ति में खुश रहूं मै वरदान चाहता हूं !
जागे करोड़ों जिसकी, सॅगीत-माधुरी से,
जीवन-सितार मे मै वह तान चाहता हू ।
जब नाम लूँ तुम्हारा, जब तुम मे लीन होऊँ,
डोले न मन जरा भी, वह ध्यान चाहता हूं !
भव-भव के ताप नाशे, हृदय में ज्योति जागे,
वाणी-सुधा का मीठा, रस-पान चाहता हूं !
ओठों की मुस्कराहट, पल भर न दूर होवे,
खिलती रहे खिजा में, बह शान चाहता हूं !
आशा है, आसरा है, 'केवल मुनि' तुम्हारा,
सब बन्धनों से छूटूँ, कल्याण चाहता हूं ।

●

भगवती अहिंसा ! ३१

[तर्ज : मन डोले मेरा तन डोले....] 'नागिन'

जय माता ! जय-जय माता ! मां ! तेरी जय-जयकार ए !
जय-भगवती-अहिंसा-जय !....

जय-अम्बे ! जय-जय महादेवी ! जय-जय-जय जगजननी !
जय-जय-भक्त-वत्सला ! जय-जय आनन्द-मंगल-करनी !
ए माता ! आनंद मंगल करनी !
तू धाता ! तू है विधाता ! तू अमृत की भण्डार ! ए !

तू माता की भी माता है, तू दुःख टालनहारी !
मां की गोदी से बिछुड़े को तू ही पालनहारी !
ए माता ! तू ही पालन हारी !
जन पाता, सब सुखसाता, जो आता तेरे द्वार ए !

तेरी सेवा से जीवन मे, अनुपम - शान्ति आए ।
चिन्ता-शोक-दुख-दैन्य नष्ट हो, भय-अशान्ति मिट जाए ।।
ए माता ! भय अशांति मिट जाए !
जो मनाता, वह हर्षाता, तू कान्ति सर्जन हार ए !

भूखे को भोजन, खग को नभ, प्यासे को जल प्यारा ।
रोगी को औषधि है जैसे, जग को तेरा सहारा ।।
ए माता ! जग को तेरा सहारा !
तू माता ! विश्व - विख्याता ! तू सब की है आधार ए !

सुर-नर-मुनिवर - गणधर - जिनवर ! गीत तेरे सब गाते ।
'केवल मुनि' सुरेन्द्र भी तेरे चरणों में शीश झुकाते ।।
ए माता ! चरणों में शीश झुकाते !
गुण गाते, शरण में आते, है उनका बेड़ा पार ए !

●

आई है याद

[तर्ज : जिन्दगी भर नहीं भूलेंगे] 'बरसात की रात'

आई है याद मुझे मेरे महावीर की आज ।
लहर आई है प्रभु के, सुयश समीर की आज ।

उफ ! पशुओं पै चल रहे हैं आज दुधारे ।
बह रही है बेगुनाहों के खून की धारें ॥
रोक दे हिंसा जरुरत है उसी धीर की आज....

आज की नारी है फेशन में, स्वार्थ में जकड़ी ।
अन्ध-श्रद्धा के, अशिक्षा के बन्धनों में पड़ी ॥
तोड़ सकता है कौन ? कड़ियाँ वे जंजीर की आज....

आज मानवता से मानव का छूट रहा है मेल ।
खेल रहा है अणुवम के खिलौने से खेल ॥
आवश्यकता है उसे समझादें, उसी वीर की आज...

'चण्डकौशिक' जिसे पीकर के जहर को भूला ।
शान्त - प्रशान्त बना प्रेम के झूले झूला ॥
सारे संसार को है प्यास, उसी क्षीर की आज....

विश्व भयभीत है एक नन्हें-से बालक की तरह ।
जल रहा है यह जगत, आज 'गौशालक' की तरह ।
चाह "केवल मुनि" है एक शान्ति, नजर अक्सीर की आज....

३३ यह कहानी है!

[तर्ज : निर्बल से लड़ाई बलवान की....] 'तूफान और दीया'

महाक्रोध से लड़ाई, महाधीर की।
यह कहानी है, 'श्रमण-महावीर' की ।।

अष्ट-कर्मों को मिटाने, आत्म-ज्योति को जगाने,
'भगवान वर्द्धमान' तप कर रहे।
कभी जंगल - उद्यान, कभी शून्य - श्मशान,
शांत-एकांत जगह में ध्यान धर रहे ।।
मन अमल-विमल, तन मेरु - सा अचल,
नही परवाह करे दुख-पीर की.......

राजगृह के निकट, 'चण्डकौशिक' विकट,
एक नाग रहे नित्य फुफकारता।
उससे डरे पशु - पंछी, डरे नर - नारी - पथी,
नही किसी भी शक्ति से वह हारता ।।
सर्प देता है व्यथा, जानी प्रभु ने कथा,
चले समझाने गति ले समीर की.......

वह नाग अतिकाला, दृष्टि - विष मतवाला,
देख बांवी पै प्रभु को खड़े जल गया।

उसने फन फैलाया, झूम-झूम लहराया,
कई बार ऊंचा धरती से उछल गया ।।
तेज-दृष्टि से निहार, डस लिया कर वार,
पीड़ा हुई विष-बुझे-तीर की........

दया-सिंधु मुस्काए, ध्यान खोल फरमाए—
"शांत ! नागराज ! शांत ! शांत !! शांत हो !!!
क्रोध त्याग दो सुजान, क्षमामृत करो पान ।
मत जीवन बिगाड़ो पथ-भ्रांत हो ।।"
सुन के प्रभु के उद्‌गार, किया नाग ने उद्धार,
'केवल मुनि' शान्ति धारी हिम नीर की........

३४ प्रेम प्रदीप जलाऊँ रे

[तर्ज : मैं उन की वन जाऊं रे....]

मैं प्रभु के गुण गाऊं रे, मैं प्रभु के गुण गाऊं।
मन-मन्दिर में उन्हें बसाऊं, प्रेम-प्रदीप जलाऊं रे ॥ध्रुव॥

रोम-रोम को कर झंकृत मैं।
गाऊं मैं पपीहे की गत्त में ॥
गायन की लय में लय होकर अपने प्रभु को पाऊं रे.......

चाहे निहारे या न निहारे।
नैया तारे या नहीं तारे।
पड़ा रहूँ चरणों में तो भी द्वार छोड़ नही जाऊं रे.......

चाहे महल हो या उपवन हो।
चाहे हो रात्रि या दिन हो ॥
पल-पल नाम रटूं मै प्रभु का, पल भर नही बिसराऊं रे.......

दया करेगे दया-सिन्धु वे।
दीनसखा ! है दीनबन्धु ! वे ॥
'केवल' श्रद्धा सुमन चढ़ाकर प्रभुवर को रिझाऊँ रे.......

३५

[तर्ज : कभी सुख है कभी दुख है....] 'जुगनू'

भावना चार हैं चारों ही अपना रंग दिखाती है।
यह किस टाइप का प्राणी है ? भावनाएँ बताती है ।।ध्रुव।।

'जो मेरा है-सो मेरा है, और तेरा भी मेरा है"।
'दानवी-भावना' संसार में विप्लव मचाती है ।।

"जो मेरा है-सो मेरा है और तेरा-सो तेरा है"।
'मानवी-भावना' जग में रहे कैसे सिखाती है ।।

'जो तेरा है-सो तेरा है, और मेरा भी तेरा है"।
यह "दैवी-भावना' है प्रेम की गंगा बहाती है ।।

"ना तेरा है-ना मेरा है' इसे 'ब्रह्म-भावना' कहते।
यही शुद्ध भावना भगवान के पद पर बिठाती है ।।

"कौरव और पाण्डव, राम-प्रभु महावीर चारों ही"।
प्रतिनिधि चार ही भावो के है नीति सुनाती है ।।

बनो भगवान् 'मुनि केवल' देवता या फिर मानव ही !
स्व-पर-कल्याणकारी-भावना जग में पुजाती है ।।

●

क्षमा याचन

[तर्ज : घर आया मेरा परदेशी....] 'आवारा'

राजा यह बोला बानी, माफ करो प्यारी रानी ।।ध्रुव।।

दुख है कि वनवास दिया, बिन अपराध ही त्रास दिया ।
शर्म से हूँ पानी-पानी........

मेरे कारण दुख पाई, वन-वन में तू भटकाई ।
कष्ट उठाये गुण-खानी........

न्याय-मार्ग प्रतिकूल गया, निर्णय करना भूल गया ।
क्रोध में हो गई नादानी........

भूल शूल-सी खटक रही, घन-सी चोटें पटक रही ।
नत शिर हूँ मैं अभिमानी........

धन्य-धन्य-आदर्श सती ! धन्य-धन्य है शीलवती !
'केवल' धन्य है महारानी........

[तर्ज : बहे अखियो से धार जिया मेरा बेकरार] 'हम लोग'

टूटे मोतियों का हार, ऐसे बहे आंसूधार, जिया मेरा बेकरार,
कहो, ना प्रिया ! मुख बोल के, दिल खोल के ।।ध्रुव।।

आज कसे उदासी छाई ? कैसे आँखें तेरी भर आई ?
रानी घर की सिगार, मीठी - मंजुल - सितार ।।
कहो, ना प्रिया ! मुख बोल के, दिल खोल के........

कांटा किसने तुम्हारे चुभाया ? दिल किसने तुम्हारा दुखाया ?
किसने करी तकरार ? प्यारी प्राणों की आधार ।।
कहो, ना प्रिया ! मुख बाल के, दिल खोल के........

तेरा सम्पन्न पीहर ससुराल है, कमी क्या है ? सभी खुश हाल है ।
करो आनन्द - विहार, तुम्हें आया क्या विचार ?
कहो, ना प्रिया ! मुख बोल के, दिल खोल के........

क्या कहा ? साधु बनते है भाई; फिर वो घर में रहे क्यों लुभाई ?
"केवल मुनि" संयम धार, वीर होते है भव-पार ।।
कहो, ना प्रिया ! मुख बोल के, दिल खोल के........

३८ सुभद्रा का उत्तर!

[तर्ज : भगवान ! तेरे घर का सिंगार जा रहा है....] 'नाग पंचमी'

प्रिय नाथ ! मेरा भाई सुकुमार जा रहा है।
मेरे पीहर का प्यारा, सिंगार जा रहा है ।।ध्रुव।।

मा का दुलारा उसकी करता है गोद खाली।
रंभा-सी भाभियों का भरतार जा रहा है........

भाई है वीर, कायर कभी नही है।
शिरमौर त्यागियों का सरदार जा रहा है........

सुख-भोग स्वर्ग जैसे, देवो-सा छोड़ वैभव।
'महावीर' के चरण में बलिहार जा रहा है........

भगवान जानते है, उनकी वियोग पीड़ा।
जिनकी हँसी-खुशी का आधार जा रहा है........

'केवल मुनि' पथिक बन शिव-पन्थ का निराला।
आनन्द प्राप्त करने सरकार जा रहा है........

प्रभु गीत गा रे ! | ३९

[तर्ज : यह कौन आया सवेरे सवेरे] 'नर्तकी'

प्रभु-गीत गा रे ! सवेरे-सवेरे ।
तू किस्मत जगा ! रेसबेरे-सबेरे !

अन्धेरा खतम कर दिया रोशनी ने,
अभी तक पड़ा रे सबेरे - सबेरे ।
धुले मन की चिन्ता फले-मन की आशा,
तू पा खुशियां पा रे सबेरे - सबेरे ।

सूर्य-किरणों ने कहा—नाम 'महावीर' का ले !
खिल के फूलों ने कहा—नाम 'महावीर' का ले !
गूंज भौरो ने कहा—नाम 'महावीर' का ले !
और विहंगों ने कहा—नाम 'महावीर' का ले !

यह ले नाम 'केवल' लगा प्रेम से धुन ,
तू ज्योति जगा रे ! सबेरे - सबेरे ।

४२

विनय धर्म

[तर्ज : जिया बेकरार है....]'बरसात'

विनय-धर्म आचार है, मानव का श्रृंगार है।
विनय-भाव से तुच्छ भी, बन जाता सरदार है ।।ध्रुव।।

पंखा, पानी, झूला झुककर फिर ऊंचा उठ जाए जी ।
जो जितना नीचा झुकता है, उतना आदर पावे हो ।।

आम्र डाल ! तूं सुन्दर फल ये बोल कहाँ से लाई जी ?
मानों हसकर बोली—मैने, झुक कर सम्पत्ति पाई हो ।।

आर्शीवाद-स्नेह मिलता है, विनय सभी को प्यारा हो ।
'अर्जुन' को जय मिली विनय से और 'दुर्योधन' हारा हो ।।

मुनि 'केवल' पूजेंगे तुम को, आदर-मान मिलेगा जी ।
जिन-शासन का मूल तुम्हारे, मन में अगर फलेगा हो ।।

जा ग र ण

जागरण

अनन्तकाल से प्राणी मोहनिद्रा में सोया पड़ा है। उसकी ज्ञानचेतना इतनी सुषुप्त है, कि यदि उसे प्रेरणा देने वाला प्रेरक न मिले तो वह एक कदम भी चल नहीं सकता। उसका मन इतना चंचल है, कि निर्देशक के अभाव में वह अपने पथ से कोसों दूर जा पड़ता है। वह अनन्तशक्ति का पुंज 'जागरण' की मधुर झंकार पाकर जाग उठेगा। उस समय उसकी समस्त चेतना में एक नया स्पन्दन, एक नई धड़कन पैदा हो जाएगी।

जैनदर्शन की भाषा मे प्रत्येक आत्मा मे परमात्मा की ज्योति समाई हुई है। उसमें परमात्मा बनने की शक्ति है, सत्ता है। किन्तु आवश्यकता है, जगने और जगाने की।

प्रस्तुत प्रकरण मे गीतकार ने उपर्युक्त लक्ष्य-बिन्दु को लक्ष्य मे रखते हुए संगीत की भाषा में नवयुवकों में ही नही, अपितु समस्त बुद्धिजीवी प्राणियो मे जागरण का शंख पूर दिया है। अहिंसा, सत्य, संगठन एवं कुरूढियो के प्रति विद्रोह की विजय-रागिनी के स्वर आलाप कर एकक्रान्ति मचा दी है।

आशा है, पाठक प्रस्तुत प्रकरण के क्रान्तिकारी गीतो का स्वागत करते हुए अपने जीवन में एक नया मोड़ देखेंगे।

—सम्पादक

१

युग की पुकार है

[तर्ज : छुप गया कोई रे....] 'चम्पाकली'

नवयुवकों ! जागो रे, युग की पुकार है,
जागरण की गूंज रही मीठी झंकार है ॥ध्रुव॥

त्याग दो खोटी-खोटी, रूढियाँ - कुरीतियाँ,
मित्रो ! अपनाओ अच्छी - अच्छी सुनीतियाँ,
भविष्य की आंखें रही तुमको निहार है.... ...

छोड़ दो ये मीठे - मीठे लड्डू खिलाना,
रुपया यह किसी अच्छे काम में लगाना,
लाखों है नंगे-भूखे, लाखों बेकार है........

दहेज से. बड़ी - बड़ी पुत्रियां कुवारी हैं,
आज मध्य-वित्त-जन विपत्ति में भारी है,
मानव से रुपया वड़ा कैसा अविचार है........

करो शुभ काम नाम चमके तुम्हारे,
'केवल मुनि' चमके जैसे चन्दा-सितारे,
उजड़ भारत में हमें लाना वहार है........

होश में आ

२

[तर्ज : आ जाओ तड़पते है....] 'आवारा'

उठ जाग मुसाफिर ! होश में आ, अब रात गुजरने वाली है ।
अलसाई आखें खोल जरा, अब रात गुजरने वाली है ।।ध्रुव।।

प्राची मे लाली फूट रही, उषा अंगडाई ले जागी ।
कलियाँ चटकी तू भी मुस्का, अब रात गुजरने वाली है ।।

क्यों रैन-बसेरे में भूला ? मंजिल है तेरी दूर अभी ।
साहस करके तू कदम बढ़ा, अब रात गुजरने वाली है ।।

यह मीठे ठगों की नगरी है, लुट गये करोड़ो परदेशी ।
चक्कर में फस मत माल बचा, अब रात गुजरने वाली है ।।

तेरे कुछ साथी माल लिए, कुछ साथी खाली हाथ चले ।
दुनिया से खाली हाथ न जा, अब रात गुजरने वाली है ।।

जो सोता है सो खोता है, जो जगता है सो पाता है ।
'केवल मुनि' इस पर ध्यान लगा, अब रात गुजरने वाली है ।।

धनवानों से !

३

[तर्ज : देख तेरे ससार की हालत....] 'नास्तिक'

देख रहे संसार की हालत, फिर भी नही कुछ ध्यान ।
अब तो सोचो रे धनवान !
सोने - चांदी के टुकड़ो का, करो न तुम अभिमान ।
अब तो सोचो रे धनवान ! ।।ध्रुव।।

समझोगे तो शांति रहेगी, नही तो खून की नदियाँ बहेगी ।
भूखी दुनियां अब न सहेगी, धन और धरती बँटके रहेगी ।।
आज 'विनोबा' बोल रहे है सुनो लगाकर कान.......

राजाओं के स्वप्न टूट गये, सदियों के साम्राज्य छूट गये ।
नवाबों के ऐश रूठ गये, शतरंजो के मोहरे फूट गये ।।
कौन-से बम की शक्ति पर तुम सोये चादर तान........

दुनिया एक मुसाफिरखाना, दो गज कफन ओढ कर जाना ।
छोड़ो लोभ का ताना-बाना, गाओ विश्व-प्रेम का गाना ।।
छोटे से जीवन के लिए मत गाओ भैरव-गान.... ...

चेतो ! अब पापड़ मत वेलो, सोने-चाँदी से मत खेलो ।
शिक्षा-दया-दान में देलो, 'केवल मुनि' आनन्द यश लेलो ।।
महलों पर बिजलियाँ गिरेगी कहता है आसमान.. .....

●

४ क्या यही तुम्हारा स्वराज है ?

[तर्ज : जरा सामने तो आओ छलिये] 'अन्नपूर्णा'

जरा हम को बताओ तो भैया ! क्या यही तुम्हारा स्वराज है ?
हाय ! कहां गए गाधी महात्मा, नही खाने को पूरा अनाज है ,
॥ध्रुव॥

शस्य-श्यामला-हिन्दू-भूमिपर, लाखों भूखे सोते है ।
सर्दी में कपड़ा नही मिलता, वच्चे विल-विल रोते है ॥
मां-वहिनो को कठिनाई आज है,
वड़ी मुश्किल से ढंक रही लाज है.... १

मिनिस्टरों के बंगले बन गये नई-नई कारे लाते है ।
वोट देने वालों के दुखड़े, उन तक पहुच न पाते है ॥
जिनके सिर पे एम० एल० ए० का ताज है,
वो कव सुनते दुखियों की आवाज है....

मांस के, मछली के, अंडो के, नये-नये बाजार खुले ।
भारत कैसे सुखी बने ? जब हिसा का व्यवहार चले ॥
अहिसा से लिया जिसने राज है,
उस देश में यह क्या रिवाज है ?....

करुणा, सत्य, प्रेम घट रहे है, कहते है पर कौन सुनें ?
मछली-मुर्गो के पालन का, कोटि-कोटि का बजट बने ॥

बाढ-दुष्काल बढ़ रहे आज है,
इनके पर्दे में हत्या का राज है....

शाक-आहारी, विपिन-विहारी, बन्दर का निर्यात करे ।
उनके जीवित शव के बदले, डालर का भण्डार भरें ।।
हाय ! कितना बड़ा यह अकाज है !
इससे डूब रहा भारत का जहाज है....

'केवल मुनि' कहे भारत वाले, स्वार्थ पाप में रंगे हुए ।
अनैतिकता-झूठ-जाल-छल, सबके मन में बसे हुए ।।
आज कष्टों से पीड़ित समाज है,
बे सुरा सब के जीवन का साज है....

विद्यार्थियों ! ५

[तर्ज : मोहन हमारे मधुवन में....] 'जन्माष्टमी'

विद्यार्थियों ! सीख यह भुलाया ना करो।
विद्या पढ़ो, विद्या से जी चुराया ना करो ।।ध्रुव।।

शिक्षा बिना अधिकार-धन-वैभव निसार है।
जीवन का रूप शिक्षा है, सच्चा सिंगार है ।।
अनपढ-गंवार-मूर्ख तुम कहलाया ना करो.......

शिक्षित कई संसार की नजरों में छा गए।
नेता बने, मंत्री बने, कुर्सी भी पा गए ।।
शिक्षा को साधन पेट का बनाया ना करो.......

टी-पार्टियों, टूरो - तमाशों को छोड़ दो ।
शैतान खोटे साथियो, से मुखड़ा मोड़ दो ।।
गंदे सिनेमा देखने तुम जाया ना करो.......

शुद्धाचरण नही है तो शिक्षा फिजूल है।
कर्तव्य, शील, सद्गुण ही शिक्षा के फूल है ।।
नैतिकता छोड़ शिक्षा को लजाया ना करो.......

'माता पिता हैं देवता' उपनिषद् कह रहे।
'आचार्य देवो भव' का भी सन्देश दे रहे ॥
अपशब्द तुम उनको कभी सुनाया ना करो........

सेवा करो कुछ देश की जाति को जगाओ।
संसार में 'केवल मुनि' शुभ नाम कमाओ ॥
ओ शक्तिपुञ्जों ! शक्ति को गंवाया ना करो........
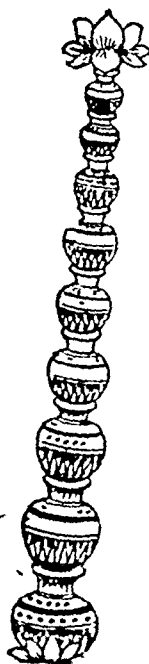
६ दहेज लेने वालों !

[तर्ज : ओ दूर जाने वाले..] 'प्यार की जीत'

ओ दहेज लेने वालों ! मानवता क्यों भुलाओ ?
क्यो कौम को बिगाड़ो, क्यो देश को डुबाओ ? ।।ध्रुव।।

सौ तोला सोना मांगे, कोई मागता है मोटर।
कोई कहता रेडियो की, कोई कहता नगद लाओ ।।

कोई कहता जा रहा है पढ़ने को वेटा लन्दन।
तुम उसका खर्चा देकर, दामाद को पढाओ ।।

दो चार लड़कियां हों, थोड़ी-सी होवे पूंजी।
मुंह मागा तुम को देदे, क्या खाएगा बताओ ?

दब जाएगा कर्ज से, ना जाने कब छूटेगा ?
अपने सम्बन्ध का तुम, दण्ड ऐसा ना दिलाओ ।।

बहू सोने जैसी देखो, सोने के स्वप्न छोड़ो।
एक लाख भी मिले तो, फूहड़' बहू न लाओ ।।

कन्या कई कुंवारी अठारह - बीस तक की।
मां-बाप रो रहे है उनके न दुख वढ़ाओ ।।

लाते गरीब कन्या देते गरीब को भी।
"केवल" समाज ऐसा, कहाँ आज है बताओ ?

●

करें प्रतिज्ञा

७

[तर्ज : तुम मुझको भूल जाओ....]

हम सब करे प्रतिज्ञा, अब से नही लड़ेगे ।
सच्चे हृदय से कहते, हम प्रेम से रहेगे ।।ध्रुव।।

हम सब है भाई-भाई, जैसे है दोनों आँखे ।
पंछी को जैसे प्यारी होती है दोनों पाँखे ।।
डाली पे फूल खिलते, हम इस तरह खिलेगे....

एक रंग-ढंग होंगें, एक धारा-एक किनारा ।
रेखाएँ दूर करके, एक होगा रूप प्यारा ।।
मिलती है गङ्गा-यमुना ऐसे गले मिलेगे....

होगा न तेरा-मेरा, जो होगा सब हमारा ।
गूंजेगा सब दिशा में, 'हम एक है' का नारा ।।
बूंदों के मेल से ही जीवन हिलोर लेंगे....

'केवल' समाज के हित, सब कुछ करें समर्पण ।
शिव-सुख तभी मिलेगा कहता है जैन दर्शन ।।
जो राग-द्वेष त्यागें, वे ही सुखी बनेगे....
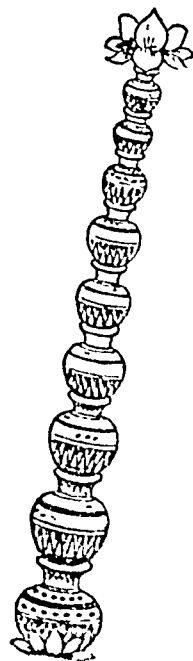
८ ओ ब्लेक करने वालो !

[तर्ज : ओ दूर जाने वाले....] 'प्यार की जीत'

ओ ब्लेक करने वालों ! क्या साथ में चलेगा ?
सरकार, डाकू, डाक्टर कोई भी लूट लेगा ।।ध्रुव।।

पापों की पूंजी प्यारे ! पचती नही कभी भी ।
कागज की नाव जल मे, डूबेगी जब गलेगा ।।

विश्वास हो या ना हो, लेकिन यह बात सच है ।
जो भाग्य में लिखा है, वो हर तरह मिलेगा ।।

पैसे की बात क्या है ? सब चीज यही रहेगी ।
श्मशान की धधकती ज्वाला में तन जलेगा ।।

एक ओर से कमाया, एक ओर से गया वह ।
नीयत है जैसे बरकत, अन्याय नही फलेगा ।।

आये अगर पकड़ में, रुपयो की होगी चटनी ।
फंदे में वो फंसेगा, गैरो को जो छलेगा ।।

उपकार कर के प्यारों ! जीवन सफल बनालो ।
महकेगा नाम 'केवल' सुयश-चमन खिलेगा ।।

●

वर्तमान भारत

९

[तर्ज नगरी मेरी कब तक यो ही बरबाद....]

'महावीर' हुए है जहां 'घनश्याम' हुए है ।
भारत यही भारत है क्या जहॉ राम हुए है ? ।।ध्रुव।।

ग्रण्डो के, मास के, शराव के बाजार है ।
'लो' मछली लो ! की राज मार्ग पर पुकार है ।।
है यही देश जहॉ कि करुणाधाम हुए है ?........

जहॉ चार-ग्राठ ग्राने में लिखा लेग्रो कसम ।
जहॉ रोटियो मे बिक रहा है शील ग्रौर धरम ।।
परमात्मा इन के लिए ग्राराम हुए है........

नेताग्रों की चलती है जहाँ तेग दुधारी ।
कहने के ग्रहिसक है मगर मॉस-ग्राहारी ।।
मर्यादा नहीं, जहॉ कुछ भी भ्रष्ट काम हुए है........

'गांधी जी' का ले नाम नया रंग ला रहे ।
कानून यूरोप जैसे, यहॉ भी बना रहे ।।
पश्चिमी—सभ्यता के वे गुलाम हुए है........

आर्यों में, अनार्यों में नाम का ही फर्क है।
यही हाल गर रहा तो सारा बेडा गर्क है ।।
किसको कहे एक राय के तमाम हुए है.......

'केवल मुनि' भारत की सभ्यता बचाइये।
अहिंसा-प्रेम-सत्य की ध्वजा लहराइये ।।
युवको ! बढ़ो आगे तुम्ही से काम हुए है.......

१० अहिंसा के दूत हैं हम

[तर्ज : हम दर्द का अफसाना....]

अहिसा के दूत है हम, कुछ करके दिखा देंगे ।
'महावीर' के सैनिक है, हिंसा को मिटा देगे ।।ध्रुव।।

हृदय-भवन में जिनके, घनघोर है अन्धेरा ।
क्रोधादि शत्रुओ का जिन में लगा है डेरा ।।
हम ज्ञान के चमकीले, वहां दीप जला देंगे........

राष्ट्रों की जातियो की मिट जायेगी लड़ाई ।
हँस-हँस गले मिलेगे भाई से जैसे भाई ।।
घर-घर मे प्रेम का वो सन्देश सुना देंगे........

भारत को विश्व सारा शिर अपना झुकायेगा ।
आध्यात्म-गुरु इसको फिर अपना बनायेगा ।।
इस देश का वो प्यारा हम नक्शा बना देंगे........

सुनते नही दुनियाँ में कोई भी गरीबों की ।
कोई न दया करता है दीन पशुओं की ।।
'जीओ स्वयं जीने दो' का पाठ पढ़ा देंगे........

आत्मा अजर-अमर है फिर किस से हम डरेंगे ।
कोई भी शक्ति हो हम 'केवल' विजयी बनेंगे ।।
देवी दया के प्रेमी लाखो को बना देंगे........

•

जाने वाले से ! ११

[तर्ज ओ जीने वाले हँसते हँसते जीना....]

ओ जाने वाले ! धीरे-धीरे जाना
कांटो से दामन को बचाना, संभल-संभल कर कदम बढाना ।
बच-बच कर के जाना ।।ध्रुव।।

सांझ कभी है-कभी सवेरा,
कभी उजेला-कभी अन्धेरा ।
तीसों दिन नहीं रहे चान्दनी,
इस को भूल न जाना.......

राह में रंग - बिरंगे पंछी ।
मद - माते - मस्ताने - पंछी ।।
मतलब के गर्जी है इन में,
तू मत प्राण फंसाना.......

उपट-पन्थ में चूर न होना ।
राजमार्ग से दूर न होना ।।
पहुँच आखिरी मंजिल पर ही,
'केवल' आनन्द पाना.......

•

१२

ओ राही !

[तर्ज : कुछ याद तो सुन कर जा....]

मानव को कुछ समझा कर जा ,
ओ राही ! राह दिखाकर जा ।।ध्रुव।।

दूर देश से तू है आया, पंथ बीच जग देख लुभाया ।
माया का जाल छुड़ा कर जा ।।

यह फूल खिले मुर्झायेंगे, यह रंग-रूप उड़ जायेगा ।
तू इन से मोह हटा कर जा ।।

दो दिन का तेरा जीवन है, सब प्रेम के झूठे बन्धन है ।
मत बन्धन में तू बन्ध कर जा ।।

बंधन से फिर बंध आयेगा, पुनः जन्म-मृत्यु पायेगा ।
निर्बन्धन ही हो कर जा ।।

'केवल' प्रभु से प्रीति लगाले, अपना जीवन सफल बनाले ।
तू जीवन वीणा बजा कर जा ।।

विलाप

१३

[तर्ज : बालम ! आन बसो, मेरे मन मे....]

बालम ! छोड़ गये, किस वन में ।।ध्रुव।।

अबला हूँ मै भोली-भाली मिटी नही मेहदी की लाली ।
कैसे काटूँ उमर बाली, यौवन निखरा तन में....

भेट प्रेम की लेकर आई, उसको तुमने क्यो ठुकराई ?
ना बोले-ना चूक बताई, रूठ गये दो दिन में...

हाय ! देव । मै किसे सुनाऊँ ? और न कोई किस पर जाऊं ?
जागो न तुम तो कैसे जगाऊँ ? हार गई खेलन मे...

पल्ला पकडा पार लगाओ, अध-वीच मे पिय छोड़ न जाओ ।
बोलो-बोलो धीर बन्धाओ, शीश धरु चरणन में...

एक वेर पिया नैन उघारो, फिर न दिखेगो मुखड़ो प्यारो ।
कुसमय फूटो भाग हमारो, यही लिखा करमन मे....

मांग सिन्दूर से मेरी भर दो, अपराधो की माफी कर दो ।
भीख सुहाग से आंचल भर दो, आँसू पूंछ नयनन मे....

'केवल' कभी नहीं मैं रोती, मृत्यु सुन कर हर्षित होती ।
मर जाते यदि देश-धर्म पर योधा होकर रण मे....

●

१४

जगो ए जैनियो !

[तर्ज : कव्वाली ...]

जगो ए जैनियों ! अब वक्त है, कुछ कर दिखाओ तुम ।
झलक जैनत्त्व की जग में, जगामग जगमगाओ तुम ।।ध्रुव।।

प्रेम की गंग मे नहाओ, मिटाओ द्वेष कीचड़ को ।
विश्व-आकाश के रजनीश बन, रौशन बनाओ तुम ।।

मिटाने पेट की ज्वाला बने कोई विधर्मी तक ।
गले उन भाइयो को प्रेम से, अपने लगाओ तुम ।।

हमारी कौम के युवक, बने है धर्म से विमुख ।
जैन कालिज को खोलो और उन को पढ़ाओ तुम ।।

रो रहे आपके भाई, करो तुम सहायता उनकी ।
हँसो उपकार को कर-कर, और सब को हँसाओ तुम ।।

वीर सन्देश की घर-घर में 'केवल' वणी वजवाने ।
उठाकर हाथ मे झन्डा, अहिसा का लहराओ तुम ।।

●

ब्रह्मचर्य की माया

१५

[तर्ज · दिल लूटने वाले जादूगर....]'मदारी'

दृढ-वक्षस्थल भुजदण्ड सबल और कंचन जैसी काया है।
आँखो में चमक,चेहरे पै दमक, यह ब्रह्मचर्य की माया है ।।ध्रु व।।

जो इसके महत्व को भूल गया, वो भूल गया सुख की गलियाँ ।
यौवन-वसन्त से पहिले ही मुर्भी, उसकी जीवन कलियाँ ।
आँखों के नीचे गड्ढे है, गड्ढो में काली छाया है....

उमंग रहे - उल्लास रहे, निर्भयता - शान्ति साथ रहे ।
प्रातः के सुरभित फूलों-सा मुख खिला-खिला दिन-रात रहे ।।
तन-मन-आनन हर्षित उसके, जिसने इसको अपनाया है....

हीरा हो लेकिन कान्ति न हो, दीपक हो लेकिन तैल न हो ।
मोती हो लेकिन आब न हो, साथी हो लेकिन मेल न हो ।।
दो कौड़ी उनकी कीमत है, जिसने यह लाल लुटाया है....

सभ्यता-संस्कृति का भूषण गुण रत्नों का आगार है यह ।
अहिंसा-सत्य का साथी है, तप का-जप का शृंगार है यह ।।
'केवल मुनि' सारे व्रतों में ब्रह्मचर्य को श्रेष्ठ बताया है....

●

१६

कैसा जमाना ?

[तर्ज : गम दिये मुस्तकिल....] 'शाहजहाँ'

एक मौजे करे, एक भूखे मरे, क्या बताना ?
हाय - हाय रे कैसा जमाना ? ।।ध्रुव।।

एक क्रीम-सेंट-तैल मगावे, एक उतने का भोजन न पावे।
यह चलेगा नहीं, जग सहेगा नही, समझाना ।।

सुन्दर भवनों मे उडती मिठाई, किसी दुखिया ने रोटी न पाई।
न दिया ही जला, नही तैल मिला, घबराना ।।

झोंपड़ी - महल में जग चलेगा, और दोनो मे मेल न होगा।
दोनो मिट जाएँगे, नष्ट हो जाएँगे, फिर क्या पाना ?

तुम गरीबों को छाती लगाओ, दो मदद उनको ऊँचे उठाओ।
'केवल' मानो कहा, जिस में सबका भला, सुख पाना ।।

संप कीजिये ! १७

[तर्ज : चुप-चुप खडे हो जरुर....] 'वड़ी वहन'

मेरे मित्रों ! फूट को बिदा कर दीजिये।
अब प्रेम कीजिए जी, अब प्रेम कीजिए ।।ध्रुव।।

मोर नृत्य करके पैर को निहारता।
अपनी कुरूपता पै चार आंसू डालता ।।
लड़ चुके खूब अब संप कर लीजिए....

सच बोलो कब तक ऐसे बने रहोगे ?
कब तक इसी तरह तने - तने रहोगे ?
तानने से टूटती है तान मत कीजिए....

दस रुपये में लाये एक तश्तरी नई।
मुफ्त में न लेवे कोई टूक-टूक हो गई ।।
बुद्धिमानो ! इस न्याय पर ध्यान दीजिए ...

पति-पत्नी लड़ गये, एक कुत्ता आ गया।
दोनो नही बोले सारी रोटियाँ वो खा गया ।।
किसका बिगाड़ हुआ इन्साफ कीजिए....

जागिए ! जागिए ! ! अब मत सोईये ।
दिल साफ कीजिए - निर्मल होईये ॥
मानना पडेगा तुम्हे आज मान लीजिए...
बीती बाते भूलिए, कांटे न चुभोइए ।
खो चुके है बहुत कुछ अब मत खोइए ॥
उन्नति समाज की हो 'केवल' ऐसा कीजिए....

१८ जागो !
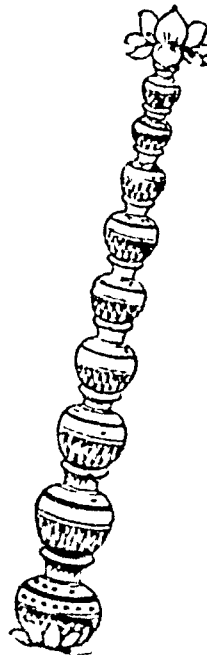
[तर्ज : आजा २ मेरी बरबाद मोहब्बत....] 'अनमोल घड़ी'

जागो ! जागो !! जागो !!!
मेरे प्रिय बन्धुओ ! सब जागा जमाना ।
ए वीर के सुपुत्रो ! अब कुछ करके दिखाना ॥ध्रुव॥

बढ़कर के संगठन से ताकत कोई नहीं ।
बिछुड़ो को मिला करके ताकत अपनी बढ़ाना ॥

अश्रद्धा-निन्दा छोड़ो, विदा कर दो फूट को ।
पवित्र प्रेम देव को स्वागत से बुलाना ॥

अपने ही घर के ज्ञान से वाकिफ़ हो तुम नहीं ।
आगम रत्नों को प्रेम से अब पढ़ना-पढ़ाना ॥

अहिंसा, सत्य, प्रेम की तिरंगी-ध्वजा को ।
मजबूत पकड़ करके कदम आगे बढ़ाना ॥

वेवा - अनाथ - जाति के दुखिया जो रो रहे ।
'केवल' मदद करना उन्हों को फिर से हँसाना ॥

प्रेरणा-स्रोत

१९

[तर्ज : ए दुनियाँ बता हमने बिगाड़ा]

नवयुवको ! उठो, कौम को मरने से बचादो ।
चक्कर मे फंसी नाव किनारे से लगादो ।।ध्रुव।।

हजारो कौमें बन गई, हजारो मिट गई ।
पिछड़ी हुई कौमे कई तरक्की कर गई ।।
तुम फिर भी क्यों पड़े हो ? जरा यह तो बता दो....

पग-पग पे रोकने को निराशाएँ खड़ी है ।
पग-पग पे उलझने को आपदाएँ अड़ी है ।।
घबराओ नही अपना कदम आगे बढ़ादो....

हे ओस 'वाल' पोर 'वाल' और पल्ली 'वाल' ।
इन 'वालों' ने ही कौम मे झगडे दिये है डाल ।।
इन 'वालों' को मिटाके एक हॉल बनादो....

तुम जातिवाद - सम्प्रदायवाद छोड़ दो ।
कुरीतियों - कुरुढियो से मोह तोड़ दो ।।
महावीर की सन्तान हो, कुछ कर के दिखादो....

होती है नौजवान के ही हाथ में कमान ।
होती है नौजवान ही जाति की आनवान ।।
'केवल मुनि' जिन धर्म का तुम जलवा दिखा दो....

२० जैन तत्त्व की झाँकी

(तर्ज : आओ बच्चो तुम्हे बतायें....) 'जागृति'

आओ मित्रों ! देखो झांकी जैनधर्म के ज्ञान की ।
यह वाणी है, वीतराग प्रभु महावीर भगवान की ।।
जय-जय-जिनवरम् ! जय-जय-जिनवरम्....

यह देखो ! 'अहिंसा' है इसमें, भरा लबालब प्यार है ।
सूक्ष्म से सूक्ष्म प्राणी को, जीने का अधिकार है ।।
"मित्ती मे सव्वभूएसु" की मधुर-मधुर झंकार है ।
कायर का नही, वीरो का यह शानदार हथियार है ।।
सबसे पहली यही पायरी मुक्ति के सोपान की....

यह देखो ! यह 'अनेकान्त' है, मेल सिखाने वाला है ।
कदाग्रह-कुतर्कवाद पर चोट लगाने वाला है ।।
विभिन्नता में अभिन्नता का रूप दिखाने वाला है ।
"थ्योरि ऑफ रिलेटीविटी" जो कहलाने वाला है ।।
'सापेक्ष' के नाम से युग ने जिसकी फिर पहचान की....

यह देखो ! यह 'कर्मवाद' है, जो शुभ-कर्म सिखाता है ।
जैसी करनी वैसी भरनी, जो करता सो पाता है ।।
प्राणी नहीं अधीन किसी के, अपना-आप विधाता है ।
स्वयं कर्म-कर्ता-भोक्ता है, बन्धता है, छुट जाता है ।।
सम्यक् निर्जरा सुवीथि है, जीवन के उत्थान की....

'अपरिग्रहवाद' समझ लो, समताभाव सिखायेगा ।
पर की गाँठ काटने वाली, मन की आग बुझायेगा ॥
तृष्णा जैसे सहस्त्रवाहु के वाहु काट गिरायेगा ।
आवश्यक से अधिक वस्तुओं से उपराम बनायेगा ॥
सर्व सिद्धियाँ चरणों में है, जिसने समता पान की....

प्रमाण, नय, निक्षेप, द्रव्य के भेद-भंग सब आला है ।
सम्यक् संयम, संवर-जप-तप, विनय-विवेक निराला है ॥
भव-भव के दुख-तपन-शमन हित शाश्वत-सुख का प्याला है ।
थोड़े से में क्या-क्या कह दूं ? मणि-रत्नों की माला है ॥
देखो-समझो-परखो भाइयो ! वातें है मतिमान की....

सर्वज्ञ-सर्वदर्शी-देवाधिदेव-परम वीतरागी है ।
तपोमूर्ति-महाव्रतधारी-सद्गुरु-सच्चे-त्यागी है ॥
उत्तम-मंगल दया-धर्म में सत्य की ज्योति जागी है ।
जिसने रत्नत्रय पहचाना, वह प्राणी सौभागी है ॥
'केवल मुनि' जिनधर्म की महिमा इन्द्रों ने भी गान की....

ललकार !

[तर्ज : दूर हटो ए दुनियाँ वालों....]

दूर रहे शैतान के बच्चे ! मै पतिव्रता नारी हूँ ।
वीर की पत्नी वीर की भगिनी वीर की राज दुलारी हूं ।।ध्रुव।।

अरे पंतगे ! क्यों सूरज से अपनी आँख मिलाता है ?
आग से खेल खेलता है क्यों सोया शेर जगाता है ?
तेरे लिए कटारी हूँ मैं प्यारी जिसकी प्यारी हूं....

आगे कदम बढ़ायेगा तो धड़ से शीश उड़ा दूंगी ।
तेरी मस्ती की दुनियाँ में पल में आग लगा दूंगी ।।
समझाती हूँ पास न आना मै जलती चिनगारी हूँ....
असल शेरनी कुत्ते के संग नहीं स्वप्न मे प्यार करे ।
छोड़ हंस को राजहंसनी कौवे संग न विहार करे ।।
क्षत्राणी-खूंख्वार-शेरनी हूँ, नही अबला नारी हूँ....

नही सुना क्या सीता ने लंका को खाक बनाया था ?
अकबर की छाती पर चढ़कर किसने छुरा दिखाया था ।।
उन्ही की हूँ अनुगामिनी मैं भारत की नारी हूँ....

रंग-रूप पर दौलत पर नहीं पतिव्रता ललचाती है ।
तीन-लोक के वैभव को भी ठोकर से ठुकराती है ।।
ऐसी सतियों के सतीत्व पर 'केवल मुनि' बलिहारी हूँ....

भारत की किस्मत जागो !

[तर्ज : हाला जवानियाँ माने....]

ो री देवियाँ ! जागो, आँखो को खोलो जागो ।।ध्रुव ।।

की किस्मत जागो ।
की दौलत जागो ।।
की इज्जत जागो ।
की अजमत जागो ।।
त्यागो अलसाई निंदिया त्यागो....

'दुर्गा भवानी' जागो ।
'झांसी की रानी जागो ।।
'सीता महारानी' जागो ।
चातुर सयानी जागो ।।
जागो री प्यारी बहिनों ! जागो ...

वीरो की जननी जागो ।
वीरो की भगिनी जागो ।।
वीरो की रमणी जागो ।
वीरो की वानी जागो ।।
जागो संस्कृति की धारा, जागो....

बिजली बन चमकी रण में।
नाहरि बन गूंजी वन मे ।।
देवी वन पूजी जग में।
लक्ष्मी बन तुम रही घर में ।।

जागो इतिहास पुराना जागो....

बैठो विद्या के रथ में।
चालो कर्तव्य के पथ में ।।
वीरत्व भरो नस-नस में।
गूंजो गरजे दिशि दश में ।।
'केवल मुनि' ज्योति जागो...

भारतीयों से !   २३

[तर्ज : सरोता कहाँ भूल आये....]

पुकार सुन लो भारतवासी ! रोवे गैय्या - मैय्या ।।ध्रुव।।

दूध - दही की नदियाँ सूखी, कटती जावे गैय्या ।
तेरह क्रोड थी, तीन क्रोड रही घटती जावे गैय्या ।।

कटे - मरे - दुख पावे सामने आज तुम्हारी गैय्या ।
जरा शर्म नही लावो, फिर भी कहते गैय्या-मैय्या ।।

बल - पौरुष ताकत सब भागी, रह गये पूरे सैय्यां ।
बीस बरस मे बुड्ढे जँचते, नौजवान कहलइया ।।

घास खाय कर दूध-दही दे, फिर भी दया न लइया ।
दया करोगे क्या तुम जब ? यह होगी जहर पिलैया ?

पालो कुत्ते - बिल्ली शौक से, नही पालते गैय्या ।
सत्य-शिक्षा की बात कहे तो, काटे ज्यों ततैया ।।

नही सुनेगे चाय पिलैया, सूखे बिस्कुट खैया ।
'केवल मुनि' कोई वीर पुरुष ही पार लगावे नैया ।।

२४ ओ सोने वाले !

[तर्ज : कोई रोके उसे और यह कह दे ...] 'सिन्दूर'

ओ सोने वाले ! जाग जरा, तू देख उजाला आया है।
काली अंधियारी में तू ने, जीवन का लाल गवाँया है ॥ध्रुव॥

दुनिया के भोले-भोले ठग, हँस-हँस कर तुझ को लूटते है।
मोह की मदिरा पीकर तूने अपना भी भान भुलाया है ॥

सोने ही सोने मे तेरा, सोना मिट्टी बनता जाता।
सोने वालो ने खोया है, जगने वालों ने पाया है ॥

तू अपनी आँखे खोल जरा, 'केवल मुनि' अपना माल बचा।
उठ-बैठ जा आगे जाना है, क्यों स्वप्नो में भरमाया है ?

जीने की कला

२५

[तर्ज : भगवान दो घड़ी जरा]....

इन्सान ! जी सके तो तू इन्सान बन के जी ;
धरती का भार बनके न हैवान बन के जी ! ।।ध्रुव।।

है जिनका पेट खाली, कभी उनकी ले खबर
ओ मौज करने वाले ! गरीबो पे कर नजर ;
गिरतो को दे सहारा तू इन्सान बनके जी !

नैया भँवर मे हो किसी की, पार लगा दे ,
आफत में कोई दब रहा हो उसको उठा दे ,
रोते हुए चेहरो की तू मुस्कान बन के जी !

अन्धो के लिए लाठी, निराशों की आश बन ,
अधियारे मे भटकते हुओ का प्रकाश बन ;
'केवल मुनि' तू विश्व की इक शान बन के जी।

२६

मैत्री के दीप

[तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर] 'मदारी'

अए मेरे प्यारे बन्धु जनो ! इस फूट कों दूर भगाओ तुम !
भाई से भाई गले मिलो, और वैर-विरोध मिटाओ तुम ।।ध्रुव।।

भारत की गुलामी का पिछला, यदि गौर से तुम इतिहास पढ़ो ।
भाई के खून के धब्बे है, पत्ते-पत्ते पर काश ! पढो ।।
चारा क्या है यदि नही जागो? और मुँह ढककर सो जाओ तुम!....

बिल्ली-बिल्ली के झगड़े में, बन्दर ने जो रंग दिखलाया ।
वही रंग 'पृथ्वीराज' और 'जयचन्द' के झगड़े में आया ।।
जिसके कड़वे फल भोग रहा भारत अब तक न भुलाओ तुम !....

इस फूट-राक्षसी ने घर क्या ? कई देश के देश उजाड़ दिये ।
धरती के दिलों के टुकड़े कर, कई नक्शे बने बिगाड दिये ।।
अपनी-अपनी ढपली लेकर मत अपना राग सुनाओ तुम !....

फूलों की बगिया में रहना, काँटों की राह में नहीं चलना ।
भावी पीढी की नजरों में, अपमान के पात्र नही बनना ।।
'केवल मुनि' हिल-मिलकर जगमग मैत्री के दीप जलाओ तुम !....

[तर्ज : अहसान तेरा होगा....] 'जंगली'

मानवता जिसमें होती है, मानव वह धन्य कहाता है
संसार उसी का यश गाता, जो प्रेम के दीप जलाता है ।।ध्रुव।।

अपने प्राण समान समझ कर, प्राणी मात्र के प्राणो को।
वह सब की भलाई करता है, वह सबको मित्र बनाता है....

दुखियों का दु:ख देख नही सकता,दुख दूर किए बिन चैन नहीं।
वह हृदय-हिमालय से अपने करुणा की धार बहाता है....

सज्जनों को ज्ञानी गुणीजनो को, जो देख प्रसन्न हो जाता है।
उनके सम्मान में सेवा के, वह सादर पुष्प चढ़ाता है....

अधमों से और अधर्मियो से वह द्वेष भाव नही रखता है।
उन्हे प्रेम से शिक्षा देता है, सन्मार्ग सदा बतलाता है....

ऐसा जिसका जीवन होता. समझो वह उत्तम आत्मा है।
वह यत्र-तत्र-सर्वत्र सदा, 'केवल मुनि' आनन्द पाता है....

•

२८ मत जा

[तर्ज : रुक जा ओ जाने वाले ! रुक जा....] 'कन्हैया'

मत जा ! ओ प्यारी वेटी ! मत जा, अकेली कहीं मत जा !!
मानलूं कि तू है वुरी नहीं,जमाना वुरा है आजकल का ॥ध्रुव

मासूम तितलियों का, मुमकिन है भटक जाना।
एक बार नीचे गिरके, मुश्किल है संभल पाना॥...

खिलती हुई कलियों को, भँवरे सदा लुभाते।
रस लूट कर - मिटाकर, कही और वे उड़ जाते॥...

मीठा जहर है, मीठी – वाते लुभाने वाली।
यह भेद – भरी – हँसियाँ, आखिर रुलाने वाली॥...

सहेली का नाम लेकर, यहां - वहाँ कही भटकती।
स्टेडी का बहाना कर, ना जाने क्या - क्या करती॥...

करती तो और ही कुछ, देती है कुछ सफाई।
युग की दुरगी चाले, कुछ समझ में न आई॥...

सुन करके कडवी बाते, तू मानियो वुरा ना।
अपना ही कड़वा कहता, यह कौल हैं पुराना॥...
"केवल" सुशीला बन कर जीवन सुधार अपना।
चल, आँखें खोलकर चल, तू ले न झूठा सपना॥...

गृहस्थ धर्म

२९

[तर्ज . दिल लुटने वाले जादूगर...] 'मदारी'

जो दम्पति गृहस्थ-धर्म पाले- जो गीत प्रभु के गाते है।
संसार में वही सुखी रहते, वही जीवन सफल बनाते है ।।ध्रु व।।

शारीरिक-वैषयिक सम्बन्ध तो, पशु-पक्षी भी करते है।
संयोग में हँसते. खुश होते, वियोग में रोते मरते है ।।
जो धर्म के रंग में रमते है, वही धन्य-धन्य कहलाते है...

उस महल में होली जलती है, जहाँ कटुता है, जहाँ अनबन है।
वह कुटिया स्वर्ग का कोना है, जहां दम्पति दो तन-एक मन है।
वही रमा के पायल बजते है, शान्ति के पुष्प मुस्काते है....

जहाँ पत्नी पति की देव तुल्य, आज्ञा का पालन करती है।
पति को नाराज नही करती, अप्रसन्नता से डरती है ।।
आई जो लहर तो चली गई, गांठे जहाँ नही लगाते है....

जहाँ पति-पत्नी को देवी समझ हृदय से आदर देता है।
जिसका पत्नी की सुख-सुविधा की ओर ध्यान भी रहता है ।।
जहां दोनो परस्पर, एक दूसरे के मन में छा जाते है....

रंग-राग में साथ-साथ रहते वही साथ जहां वैराग में हो।
'धन्नाजी' और 'सुभद्रा' से सच्चे साथी तप-त्याग में हो ।।
जीवन-यात्रा को 'केवल मुनि' वही मुक्ति तक ले जाते है....

३० जीना क्या ?

[तर्ज : जब प्यार किया तो....] 'मुगले आजम'

प्रभु नाम लिए बिन जीना क्या ?
नाम लिया नहीं, भक्ति करी नहीं, तो फिर बन्धु कीना क्या ?

जिनवर का गुणगान किया नहीं, प्रभु प्रेमामृत पान किया नहीं।
मोह-मदिरा का प्याला पिया तो, ऐसा भी पीना पीना क्या ?....

धंधों में खोई सारी उमरियाँ, पापों की बांधी तूने गठरिया।
मोती न बीने हीरे न बीने, कंकर बीने तो बीना क्या ?....

मानव हो करुणा नही लाया, दुखिया का यदि दुख न मिटाया।
हीना होकर रंग न दे तो, गोबर है, वो हीना क्या ?....

जग में कोई अमर नही आया, हर एक रिटर्न-टिकिट संग लाया।
स्वर्ग-मुक्ति के द्वार पे आकर, कुछ न लिया तो लीना क्या ?....

'केवल मुनि' कुछ लाभ उठाना, पुण्य बढ़ाना-धर्म कमाना।
आत्मानन्द में भीना नही तो, विषयो के रस में भीना क्या ?....

●

उद्बोधन

उद्‌बोधन :

प्रत्येक पदार्थ नश्वर है। यह नश्वरता का नग्ननृत्य अनादि है, अनन्त है। संयोग की पिटारी में वियोग का काला नाग फन फैलाये बैठा है। सुख की यवनिका के पीछे दुःख छिपा हुआ है। अमावस्या पूर्णिमा की इन्तजारी में बेताब है। संध्या की हर किरण अन्धकार से मचलने को बेकस है। हर्ष और विषाद का धूप-छायावत् खेल चल रहा है। अस्तु, संसृति के प्रत्येक कण में विनाश झांक रहा है।

इस विनाशशील विश्व के बीहड़तम मोह-माया के जाल में आबद्ध प्राणी सुख के स्वप्न ढूँढ़ रहा है। पर, सुख कहां ? अनन्त ज्ञानियों की वाणी में सुख का निर्झर तो उसी के हृदय में प्रवहमान हो रहा है, जो आत्मा संयम, त्याग और वैराग्य के प्रवाह में अवगाहन करता है, शान्ति का असीम सागर उसे अपने ही भीतर ठाठे मारता हुआ मिलता है।

प्रस्तुत प्रकरण में कवि ने अपनी प्राञ्जल लेखनी द्वारा संसार की असारता का जो चित्र चित्रित किया है वह अनुप्रेक्षणीय है। कविता का प्रत्येक पद मानव को त्याग-विराग का सन्देश देता है। मानव-मायाविक क्षणिक सुख के प्रलोभन में न पड़कर शाश्वत सुख की ओर अग्रसर हो यही कवि का गेयार्थ है।

—सम्पादक

१

गा प्रेम से....

[तर्ज : आ, लौट के आजा मेरे मीत....] 'रानी रूपमती'

गा, प्रेम से गा रे प्रभु-गीत,
तुझे प्रभु-गीत तिरायेगा।
गा, भक्ति का गा रे संगीत,
तुझे प्रभु-गीत तिरायेगा ॥ध्रुव॥

अच्छे पशुओं की, अच्छे विहंगों की, खाली नहीं जाती सेवा।
वृक्षो की सेवा, वेलो की सेवा, देती है फल-फूल-मेवा ॥
प्रभु-सेवा सब से पुनीत....

तारन-तरन, प्रभु ! मंगल-करन से, लगा ले लगन शान्ति पा ले।
पावन-चरण की ले-ले शरण, अपने तन-मन मे ज्योति जगाले ॥
प्रभु ही है सच्चे मीत....

प्रभु की भक्ति में ऐसी है शक्ति, यह मुक्ति में कर देती वासा।
ज्ञानी-गुनि कहे 'केवल मुनि' है चिन्तामणी पूरे आशा ॥
भक्ति से होगी जीत....

●

२

चली चली रे !

[तर्ज : चली चली रे पतंग मेरी....] 'भाभी'

चली-चली रे, उमर तेरी चली रे,
चली विषयों के संग, रंगी तृष्णा के रंग
मोह-ममता में बन रहा छली रे ।।ध्रुव।।

तेरा बचपन हुआ कहानी,
आई मदभरी-मस्त जवानी,
यह भी दिन-प्रतिदिन, जा रही है छिन-छिन,
तो भी करे नही कोई बात भली रे....

जिसके लिये पाप कमाए,
वह धन नही साथ में आए,
प्राणी जाए खाली हाथ, कुछ रहे नही साथ,
जब मुर्झाये जीवन - कली रे....

'केवल मुनि' समझ सयाना !
एक श्वास न व्यर्थ गंवाना,
कर पर-उपकार, कहे ज्ञानी बार-बार,
तुझे घड़ी बड़ी अनमोल मिली रे....

जाना ही पड़ेगा ! ३

[तर्ज · दुनिया में हम आए है तो....] 'मदरइंडिया'

संसार में आया उसे जाना ही पडेगा ।
घर और कही जाके वसाना ही पड़ेगा ।।ध्रुव।।

उड़ते हुए पंछी ने लिया रैन-वसेरा ।
उड़ना ही पड़ेगा उसे होते ही सवेरा ।।
कल रात कही और विताना ही पड़ेगा....

ववूल वोयेगा तो उसे कांटे गड़ेगे ।
और आम वोएगा तो उसे आम मिलेगे ।।
सुख चाहे उसे कांटे वचाना ही पड़ेगा....

भिखारी से लेकर वड़े से वड़े मर गए ।
लाखों यहा पे जल गए,लाखो ही गड़ गए ।।
तेरे लिए भी कफ़न मंगाना ही पड़ेगा....

'केवल मुनि' चमकेगा जो शुभ काम करेगा ।
गाएगी गीत दुनियां जो तू नाम करेगा ।।
तू मान या न मान सुनाना ही पड़ेगा....

४ भँवरे !

[तर्ज : चल उड़ जा रे पंछी कि....] 'भाभी'

घर आजारे, भँवरे ! कि अब तू पर घर में मत जाना ।।ध्रुव।।

रूप-रंग के मतवाले बन कभी न फिरना पागल से,
तृप्ति हुई क्या कभी किसी की माटी के नकली फल से ?
प्यास बुझी क्या कभी किसी की, ओस बिन्दुओ के जल से?
मृग-मरीचिका के मोह में मत भटक-भटक पछताना ।।
घर आजा रे....

सत्य-सत्य ही होता है रे, सपना आखिर सपना है,
गैर-गैर ही रहता है और अपना है सो अपना है,
अनारकली में खुशबू ढंढ़ना, व्यर्थ ताप में तपना है,
कभी न बने पराया अपना, अपने को न भुलाना ।।
घर आ जा रे....

अब तो अपने घर की राह ले पर से नाता तोड़,
बगिया - बगिया फूल - फूल पे भंवरे ! फिरना छोड़,
मिट्टी की मूरत के रंग से प्रेम कभी ना जोड़,
एक पत्नी - व्रत को 'केवल मुनि' प्रभु ने व्रत है माना ।।
घर आजा रे....

प्रभु गुण गा

५

[तर्ज . घामुरियाँ फिर से वजा....] 'ताज'

बावरिया ! प्रभु-गुण गा, हो....प्यारे बावरिया ! प्रभु-गुण गा !
जीवन न व्यर्थ गवां, हो....प्यारे ! जीवन न व्यर्थ गवां ।।ध्रुव।।

माया की मस्ती में, भूला-भूला डोले।
भूला-भूला डोले, प्रभु नाम न बोले ।।
होवेगा कैसे भला ? हो....प्यारे बावरिया ! प्रभु-गुण गा....

पापों में खोए सारी, श्वासो की पूंजी।
श्वासो की पूंजी खोए, स्वर्ग की कुंजी ।।
नर्क की राह न जा, हो....प्यारे बावरिया ! प्रभु-गुण गा....

पैसे में तेरे उलझ रहे प्राण है।
यौवन का तुझ को बड़ा अभिमान है ।।
कौन रहा है सदा ? हो....प्यारे बावरिया ! प्रभु-गुण गा....

गुजरी हुई फिर न घड़ियाँ मिलेगी।
टूटी हुई फिर न कलियाँ खिलेगी ।।
शिक्षा यह तू मान जा, हो....प्यारे बावरिया ! प्रभु-गुण गा....

दिन - रात करता है तू तेरी - मेरी।
दुनियां की है कौन-सी चीजें तेरी ?
'केवल मुनि' यह बता, हो....प्यारे बावरिया ! प्रभु-गुण गा....

४ भँवरे !

[तर्ज : चल उड़ जा रे पंछी कि....] 'भाभी'

घर आजारे, भँवरे ! कि अब तू पर घर में मत जाना ।।ध्रुव।।

रूप-रंग के मतवाले वन कभी न फिरना पागल से,
तृप्ति हुई क्या कभी किसी की माटी के नकली फल से ?
प्यास बुझी क्या कभी किसी की, ओस बिन्दुओं के जल से?
मृग-मरीचिका के मोह में मत भटक-भटक पछताना ।।
घर आजा रे....

सत्य-सत्य ही होता है रे, सपना आखिर सपना है,
गैर-गैर ही रहता है और अपना है सो अपना है,
अनारकली में खुशबू ढंढ़ना, व्यर्थ ताप में तपना है,
कभी न बने पराया अपना, अपने को न भुलाना ।।
घर आ जा रे....

अब तो अपने घर की राह ले पर से नाता तोड़,
बगिया - बगिया फूल - फूल पे भंवरे ! फिरना छोड़,
मिट्टी की मूरत के रंग से प्रेम कभी ना जोड़,
एक पत्नी - व्रत को 'केवल मुनि' प्रभु ने व्रत है माना ।।
घर आजा रे....

प्रभु गुण गा

[तर्ज : बासुरिया फिर से बजा....] 'ताज'

बावरिया ! प्रभु-गुण गा, हो....प्यारे बावरिया ! प्रभु-गुण गा !
जीवन न व्यर्थ गवां, हो....प्यारे ! जीवन न व्यर्थ गवां ।।ध्रुव।।

माया की मस्ती में, भूला-भूला डोले।
भूला-भूला डोले, प्रभु नाम न बोले ।।
होवेगा कैसे भला ? हो....प्यारे बावरिया ! प्रभु-गुण गा....

पापो मे खोए सारी, श्वासों की पूंजी।
श्वासो की पूंजी खोए, स्वर्ग की कुंजी ।।
नर्क की राह न जा, हो....प्यारे बावरिया ! प्रभु-गुण गा....

पैसे में तेरे उलझ रहे प्राण है।
यौवन का तुझ को बड़ा अभिमान है ।।
कौन रहा है सदा ? हो....प्यारे बावरिया ! प्रभु-गुण गा....

गुजरी हुई फिर न घड़ियाँ मिलेगी।
टूटी हुई फिर न कलियाँ खिलेगी ।।
शिक्षा यह तू मान जा, हो....प्यारे बावरिया ! प्रभु-गुण गा....

दिन - रात करता है तू तेरी - मेरी।
दुनियां की है कौन-सी चीजे तेरी ?
'केवल मुनि' यह बता, हो....प्यारे बावरिया ! प्रभु-गुण गा....

८ परदेशी पंछी रे !

[तर्ज : पिंजरे के पंछी रे...

परदेशी पंछी रे ! तेरा अपना यहां न कोय।
मृग-तृष्णा से झूठे सुख में, काहे जीवन खोय ? ।।ध्रुव।

दुनियाँ फानी, यौबन फानी, दो दिन की है तेरी जिन्दगानी रे !
कौन भरोसा श्वास का तेरे ? आवन होय न होय....

तेरी-मेरी करने वाले, मोह-ममता में मरने वाले रे !
तेरे तुझको भूल जायेगे, दो दिन लेंगे रोय....

मतलब के सब साथी-संगाती, बिछुडेगे सब तेरे साथी रे।
कौन है तेरा, तू है किसका ? आंख खोल कर जोय....

'केवल मुनि' प्रभु भक्ति करले, शुभ कर्मो का झोला भर ले !
पाप-कर्म जो करेगा पगले ! देगे तुझे डुबोय....

०

लोभ महा पाप है | ९

[तर्ज . छोड़ बाबुल का घर....] बाबुल'

लोभ महा-पाप है, शाप है, ताप है।
लोभ छोड़ो सज्जन ! ॥ध्रुव ॥

लालची बेच देता है ईमान को।
राष्ट्र को, कौम को, प्यारी सन्तान को ॥
आन को, शान को, धर्म-भगवान को,
लोभ छोड़ो सज्जन....

लोभ ने देश के देश फुंकवादिए।
मांस के-खून के कीच मचवा दिए ॥
लाखो लड़वा दिये, लाखों मरवा दिए,
लोभ छोड़ो सज्जन....

ब्लेक और चार सौ बीस लोभी करे।
झूठ से, छल से लोभी न बिल्कुल डरे ॥
लोभी जन अन्ध है, लोभ एक फन्द है,
लोभ छोड़ो सज्जन....

'केवल मुनि' सुख का संतोष ही द्वार है।
आत्म-शुद्धि का सन्तोप आधार है ॥
प्रेम कलिया खिलें, सच्ची शांति मिले,
लोभ छोड़ो सज्जन....

१०
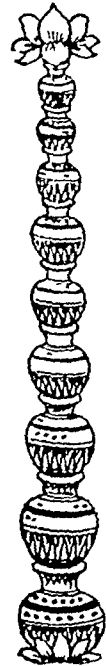
भूल रही बहिनों !

[तर्ज : छोड गए बालम, मुझे हाय....] 'बरसात'

भूल रही बहिनो ! तुम नाम प्रभु का भूल रही ।
फूल रही बहिनो ! तुम माया मोह मे फूल रही ।।ध्रुव।।

पूर्व जन्म के पुण्योदय से, सब सुख सम्पत्ति पाई ।
खाली हाथ न जाना यहां से, खो कर पूर्व कमाई ।।

रूप-जवानी आनी-जानी, गर्व न इसका करना ।
केशर काया राख बनेगी, एक दिन सबको मरना ।।

किसका पति है, किसकी पत्नी, पुत्र-पुत्री है किसके ?
जेवर-कपड़े-भवन और धन, सब है जीते जी के ।।

नहीं किसी को कडवा कहना, नही किसी से लड़ना ।
सब की सदा भलाई करना, दो दिन जग मे रहना ।

गृहस्थ-धर्म का पालन करना, जीवन-सफल बनाना ।
सुयश फैलाना 'केवल मुनि' नाम अमर कर जाना ।।

●

मीठा तराना

११

[तर्ज : मेरी याद मे तुम न आँसू वहाना....]

गरीबों के दिलों में न कांटे चुभाना।
दुआ ले गरीबो की खुशियाँ मनाना ।। ध्रुव ।।

गरीबो की आहों से साम्राज्य पलटे।
गरीबों के नालों ने कई तख्त उलटे ।।
गरीबों को दुःख दे कभी ना रुलाना....

रोम जलता दीखेगा 'नीरो' हँसेगा।
वही कष्टों में-आफतों में फँसेगा ।।
किसी को जलाकर ना हँसना-हँसाना....

गरीबो के आँसू है जलती चिनगारी।
इसी आग से खाक हुई लंका सारी ।।
पाप-बेल बोकर न फल कड़वे खाना....

फलों से लदे पेड़ फल है खिलाते।
सरि-सर कुंवे मीठे जल है पिलाते ।।
तू इन्सान बनकर के सिर ना हिलाना....

करेगा जुल्म उसका निशां न रहेगा।
जुल्म की कहानी तवारीख कहेगा ॥
किसी को मिटाकर ना जालिम कहाना....

जो सुख देगा 'केवल मुनि' सुख मिलेगा।
भला करने वाला ही फूले-फलेगा ॥
सदा याद रखना यह मीठा-तराना....

•

१२

जाना पड़े !

[तर्ज : छोड़ बाबुल का घर....] 'बाबुल'

छोड़ सुन्दर भवन, प्यारा परिवार धन ।
मित्र ! जाना पड़े ।।ध्रुव।।

बन्धु-बान्धव कोई संग आता नही ।
एक तिनका भी कोई ले जाता नही ।।
सबसे मुह मोड़कर, सबसे मोह तोड़कर-
मित्र ! जाना पड़े....

आँसू और हसी मीठा-सा प्यार है ।
तुझ को मोह मे फँसाने के हथियार है ।।
पर है सब स्वार्थी, झूठ है ना रती,
मित्र ! जाना पड़े....

आशाओ के हवा-महल चिनता है तू ।
मीठे स्वप्नो की दुनियाँ में रमता है तू ।।
महल रह जायेगे, स्वप्न उड़ जायेगे—
मित्र ! जाना पड़े....

"मुनि केवल" प्रभु-गीत गाना सदा।
अपने जीवन में ज्योति जगाना सदा ॥
अमर रहना नहीं, जग की रीति यही-
मित्र ! जाना पड़े....

१४ जाएगा

[तर्ज : आग लगी तन मन मे....] 'आन'

प्राणियों को मारेगा, मांस-अण्डे खाएगा।
नरक-पशु योनि में वही जीव जाएगा ॥ध्रु व ॥

सत्संग में संतों के कभी नहीं आएगा।
आयेगा गर तो भी दिल में न भाएगा, वह जल्दी भग जाएगा ॥
निन्दा-बुराई मे घड़ियाँ बिताएगा....

बीबी से, बच्चो से, माया से प्यार है।
खाने में, मौजों में हरदम तैयार है, नही इन्कार है ॥
दीनो को देने में नानी मर जाएगा....

बनना है जिसको अभी कीड़े-मकोड़े ।
बोलो वह कपट-झूठ-छल कैसे छोडे ? वह कैसे मुख मोड़े ?
तृष्णा के सागर में नैया डुबाएगा....

'केवल मुनि' अपनी नैया तिराना ।
अच्छे-अच्छे काम करके जीवन बनाना, प्रभु-गीत गाना ॥
प्रभु-गीत गाने में पापी शर्माएगा....

मान करना नहीं

१५

[तर्ज : छोड बाबुल का घर....] 'बाबुल'

स्वप्न संसार है, रहना दिन चार है,
मान करना नही....मान करना नही ।।ध्रुव।।

फूल फूला कि भंवरें भी आने लागे ।
लूटने के लिए गीत गाने लगे ।।
फूल था भूल में, मिल गया धूल मे, मान करना नहीं....

रूप यौवन की संध्या में लुट जायगा ।
और यौवन नशा है, उतर जायगा ।।
इन में मतवाला बन, मेरे भोले सज्जन ! मान करना नही....

आज शादी करी कल को तल्लाक दी ।
लक्ष्मी तितली-सी है, यह नही एक की ।
कहां चक्री का धन ? कहां चवदे रतन ? मान करना नही....

सरसराता फव्वारे का जल जो चढ़ा ।
मैने देखा कि वो सर के बल गिर पड़ा ।।
नेचर देती है दण्ड, रहा किसका घमंड ? मान करना नही....

धर्मकरणी किए बिन वहाँ पछताओगे ।
अच्छे काम करोगे तो सुख पाओगे ।।
कहता 'केवल मुनि' शिक्षा मानो गुनि ! मान करना नही....

१६

मौत ने उसको खाया

[तर्ज : लाडे लप्पा-लाड़े लप्पा....]

घडी-घडी पल-पल प्रभु नाम लो।
नर देह पाई है सफल कर लो ॥
हो ऽऽ हाथ में हीरा आया ॥ध्रुव ॥

चुन-चुन कलियां सेज बिछाई, पिया मिलन की आश लगाई।
मुखड़ा भी तो देख न पाई, मौत ने उस को खाया ॥

एक सेठ ने महल बनाया, दसमी का मुहूर्त कढ़वाया।
चला वो उस में रहन न पाया, मौत ने उसको खाया ॥

एक ने अपनी पुत्री व्याही, प्रेम से उसकी करी विदाई ।
वह पीछी पीहर नही आई, मौतने उसको खाया ॥

एक लाला नई मोटर लाए, बीवी-बच्चों को बिठलाये।
गए सैर को लौट न आए, मौत ने उसको खाया ॥
'केवल मुनि' उपकार किया है, गुरुवर ने यह ज्ञान दिया है।
जग मे जिसने जन्म लिया है, मौत ने उसको खाया ॥

तख़्ते पलटते हैं   १७

[तर्ज : कभी सुख है कभी दुख है....] 'जुगनु'

बिगड़ते और बनते है, उजडते और बसते है।
हजारों वर्ष से दुनियाँ के, यू ही तख्ते पलटते हैं।।ध्रु व।।

जमीं ही की नहीं हालत-यही है आस्मां की भी।
कभी सूरज चमकता है, कभी तारे निकलते हैं।।

कभी जिनमें हवा तक भी पांव धरती हुई डरती।
उन्ही महलो में चमगादड़ व उल्लू राज करते है।।

कभी जिन की निगाहो से कांपते मुकुट रत्नों के।
उन्ही आंखों में कव्वे बेधड़क हो चोच धरते है।।

कही आशाएँ बर आती कही अरमाँ मचलते है।
कही पर फूल झडते है, कही मोती बरसते है।।

कटे जंजीर कर्मो की मिटे तब खेल ये सारे।
मिले आनन्द 'मुनि केवल' मोक्ष के द्वार खुलते हैं।

•

१८ | जीवन की

[तर्ज · हवा मे उड़ता जाए मेरा लाल....] 'मेला'

दिन-दिन बीती जाये, तेरी अमूल्य-घड़ियाँ जीवन की ।
लौट न पीछी आएँ तेरी अमूल्य-घड़ियाँ जीवन की ।। ध्रुव ।।

फर-फर-फर-फर हवा से काँपे जैसे पीपल पाती ।
थर-थर काँपे मौत से ऐसे तेरी जीवन-बाती ।।

टप-टप-टप टप खाली होवे ज्यो अंजली का पानी ।
छुक-छुक-छुक-छुक रेल जाय ज्यो जावे मित्र ! जवानी ।।

टन-टन-टन-टन घड़ी बोल कर शिक्षा देवे प्यारी ।
अभी-अभी तूने जीवन की घड़ी एक और हारी ।।

काँच की शीशी जैसे तेरे तन का होवे नाश ।
'मुनि केवल' जीवन फुलड़े को जग में रहे सुवास ।।

दुनिया एक बाज़ार है | १९

[तर्ज . जिया वेकरार है....] 'बरसात'

दुनिया एक बाजार है, सौदे सब तैयार है ।
जी चाहे सो लीजिए, नही इन्कार है ।।ध्रुव ।।

दुनियाँ के बाजार मे प्यारे ! लाखो लोग ठगाए जी ।
ऐसी वस्तु लेना मित्र ! त यहाँ-वहां सुख पाए जी ।।

लिया किसीने रत्न-जवाहर, किसी ने सोना-चांदी जी ।
किसी ने मादक वस्तु, जहर मे, पजी सभी गवा दी जी ।।

'राम ने अपना जीवन सफल कर, जग में नाम कमाया जी ।
जीवन-रत्न के वदले मूर्ख, 'रावण' अपयश पाया जी ।।

शेर 'शिवा' राणा 'प्रताप' ने, शौर्य तेज अपनाया जी ।
'पन्ना' ने स्वामी-भक्ति मे प्यारा लाल कटाया जी ।।

शूल भी है और फूल भी है, यह दुनियाँ एक बगीचा जी ।
'केवल' आनन्द पाया जिस ने पुण्य का पौधा सीचा जी ।।

२० श्रीमती से !

[तर्ज : चुप-चुप खड़े हो....] 'वड़ी वहन',

फूली-फूली फिरती हो किसका गुमान है ?
भूठा अभिमान तेरा, भूठा अभिमान है ।।ध्रुव ।।
कपडो को, जेवरो को कहती मेरा-मेरा है ।
श्वास बन्द हुई फिर भोली कौन तेरा है ?
तेरा तो वही जो खुशी-खुशी किया दान है....
ज़रीदार साड़ियों से तन चमकाती हो ।
पाउडर-क्रीम से मुख दमकाती हो ।।
किसको शृँगार रही सब नाशवान है....
प्राण प्यारी कहने वाला तुझ को जलायेगा ।
तेरी जगह रानी किसी और को बनायेगा ।।
दो दिनों की जिन्दगी है बनी क्यों नादान है....
देव हो या देवी हो, राजा हो या रानी हो ।
भील हो या भीलनी हो, सेठ हो सेठानी हो ।।
अमर नही है कोई सब मेहमान है....
आई हो तो दुनियाँ से खाली मत जाइयो ।
मौज में 'केवल मुनि' प्रभु न भूलाइयो ।।
पर-लोक बना लिया वही ज्ञानवान है....

प्रभु-गीत गा ले !

[तर्ज : रुम-भुम बरसे बादरवा....] 'रतन'

पल-पल बीते उमरियाँ, मस्त जवानी जाये ।
प्रभु-गीत गा ले, गा ले, प्रभु-गीत गा ले ।।ध्रुव।।
प्यारा-प्यारा बचपन पीछे खो गया-खो गया ।
यौवन पाकर तू मतवाला हो गया-हो गया ।।
बार-बार नही पावे रे —
गगा बहती है प्यारे ! मौका है, नहा ले, गा ले....
कैसे-कैसे वाके जग में हो गये-हो गये ?
खेल-खेल कर अन्त जमी पर सो गये-सो गये ।।
कोई अमर नही आया रे—
पछी ! ये फूल रगीले, मुर्झाने वाले, गा ले....
तेरे घर मे माल-मसाले होते है-होते है ।
भूख के मारे कई बिचारे रोते है-रोते हैं ।।
उन की कौन खबर ले रे ?—
जिन के नही तन पै कपड़ा, रोटियों के लाले, गा ले....
गोरा-गोरा देख बदन क्यो फूला है-फूला है ?
चार दिनो की जिन्दगानी पे भूला है-भूला है ।।
जीवन सफल बना ले रे—
'केवल मुनि' समझाये, ओ जाने वाले ! गा ले....

२२

ऐ पंछी ! बता

[तर्ज : ऐ दुनिया बता हम ने बिगाड़ा....]

ऐ पछी ! बता किसको बताता है तू मेरा ?
मतलब के सभी साथी यहाँ कौन है तेरा ।।ध्रुव।।

लाखो हसीन मद भरी, कलियाँ बिखर गई ।
मद मस्त फूल ढल गये, बगियाँ उजड़ गई ।।
रहा राह की मजिल मे सदा किसका बसेरा....

गाफिल ! तू डूब रहा क्यो दुनियाँ के प्यार मे ?
दौलत की पीके मय बना अधा खुमार मे ।।
जाना है मुसाफिर ! तुझे होते ही सबेरा....

कर-कर के जुल्म 'शाह अकबर' चला गया ।
खू के बहा के दरिया 'सिकन्दर' चला गया ।।
कुछ साथ मे जाता नही यह अन्त मे टेरा....

दुनिया यह शब का ख्वाब है, बच्चो की कहानी ।
लहराता-उछलता हुआ दरियाब का पानी ।।
तू नेक काम करले भला होयगा तेरा....

सुन ! बात मेरी ध्यान लगा वीर चरण मे ।
'केवल मुनि' सुख पायगा प्रभु वीर शरण मे ।।
मिट जायेगा प्यारे ! तेरा चौरासी का फेरा....

# प्रेम की बाँसुरिया 	२३

[तर्ज : मन डोले, मेरा तन डोले....] 'नागिन'

मत बोले, अरे मत बोले, मत बोले, कड़वा बोल रे।
तू बजा प्रेम की वासुरिया ।।ध्रुव।।

मधुर-मधुर वचनो से भाई, सुर-नर वश हो जाए।
कटु वचनों से घर वाले भी, तेरे पास नही आए—
रे भाई! तेरे पास नही आए ।।
जब बोले, जब मुह खोले, तब बोल तू मीठे बोल रे .

वचन-वचन मे फूल खिलाना, खुशबू सदा लुटाना।
तेरे कांटे तेरे चुभेगे, कांटे नही गड़ाना—
रे भाई! कांटे नही गडाना ।।
रस घोले, दिल नही छोले, तू ऐसी वाणी बोल रे. ..

बोली-बोली ही से घर के चूल्हे दो हो जाते।
गृह-कलह का जनक इसी को, सज्जन जन बतलाते—
रे भाई! सज्जन जन बतलाते ।।
सुन भोले! मत विष घोले, तू तोल-तोल कर बोल रे....

अनजाने को भी 'केवल मुनि' मधुर वचन मोह लेते ।
प्यारे मित्रों को भी पराये, कटुक वचन कर देते –
रे भाई ! कटुक वचन कर देते ।।
हँस बोले, सब का हो ले, है उसके वचन अमोल रे ..

२४

फैशन बना के

[तर्ज · मोहन ! हमारे मधुवन मे....] 'जन्माष्टमी'

फैशन बनाके सैर करने जाया ना करो।
ए देवियों ! फैशन नये बनाया ना करो ।।ध्रुव।।

आया नया कोई खेल कि तुम देखने जाती।
सिनेमा से नई-नई तुम फैशने लाती ।।
अभिनेत्री जैसा रूप तुम सजाया ना करो....

रूज-क्रीम आदि चर्बी वाले कभी न मंगाना।
लिपिस्टिक नैलपॉलिश का पॉलिश न लगाना ।।
अण्डे मिले बिस्कुट तुम चबाया ना करो....

बारीक पेटीकोट—जम्फर और साड़ियां।
पहनो न कभी ओढ़नी निर्लज्ज-सी धोतियाँ ।।
एक-एक अपना बाल तुम गिनाया ना करो....

पुतली-सी बनकर फिरती हो तुम तांगे-कार में।
दो चोटियाँ कर सिर खुले फिरती बाजार में ।।
नारी का भूषण लाज है गंवाया ना करो....
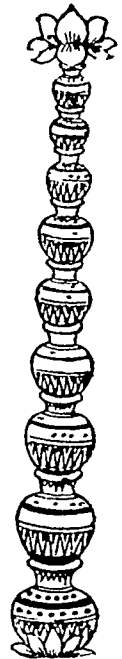
रोगी बनी हो परिश्रम से स्नेह तोड़कर ।
खर्चा बढ़ा दिया है घर के काम छोड़कर ॥
दवाओं-डाक्टरो के बिल बढाया ना करो...

भारत भूमि की देवी हो, मेडम नही हो तुम ।
अनुगामिनी हो 'सीता' की, बेगम नही हो तुम ॥
'केवल मुनि' की शिक्षाएँ भुलाया ना करो...

दुनिया की मुहब्बत में   २५

[तर्ज : बचपन की मुहब्बत को....] 'बैजूबावरा'

दुनिया की मुहब्बत मे जीवन ना गँवा देना।
भगवान की भक्ति को दिल से न भुला देना ।।ध्रुव।।

आशा की ले के प्याली, कोई द्वार तेरे आए।
सहारे के लिए कोई छाया मे आना चाहे ।।
तू आशा तोड़ उसकी ठोकर न लगा देना....

धनवान है तो देना, देना खुशी से देना।
देने को नही हो तो, मीठे ही वचन कहना ।।
कड़वी सुनाके बाते, कांटे न चुभा देना....

संसार के सागर में, नैया न भटक जाए।
तूफानी तरगो में, फस कर न अटक जाए ।।
विषयो के भँवर से, तू नैया को बचा लेना....

मरने के बाद प्राणी ! कोई नही है तेरा।
'केवल मुनि' बता फिर करता क्यों मेरा-मेरा ?
श्वासों की नगद पूंजी यो ही न लुटा देना....

२६ जीवन का रथ जाय !

[तर्ज : प्यार करो ऋतु प्यार की आई....] 'रानीरूपमती',

सांझ हुई और रात हुई फिर रात गई और दिन निकला ।
सांझ-सुबह के चक्कर में ही, जीवन का रथ जाय चला ।।ध्रुव।।

इक-दो पल नहीं, लक्ष-कोटि नही, अरव-खरब पल बीत गए ।
अति-विशाल-सागर के जैसे, कोटि-कोटि घट रीत गए ।।
पर्वत जैसा बलशाली भी, एक दिन औले जैसे गला....

आज करे सो करले भाई ! कल की पक्की आश नही ।
सांस चल रहा तरल पवन-सा, पर इसका विश्वास नहीं ।।
मौत के दांव के आगे किसी की चलती नही है कोई कला....

विश्व-गगन का रवि-शशि बन रे ! रवि-शशि नहीं तो तारा बन !
तारा नही तो दीपक का ही तू उज्जवल-उजियारा बन !
'केवल मुनि' चमकेगा जगमग करले कोई काम भला....

२७ कैसा यह ज़माना ?

[तर्ज : यह मर्द बडे दिल सर्द बडे....] 'मिसमेरी'

पुण्य-धर्म नही, शुभ-कर्म नही, कुछ शर्म का नही ठिकाना ।
राम - राम - राम ! आया कैसा यह जमाना ? ।।ध्रुव।।

भाई के लिए जीते, भाई के लिए मरते ।
अब तो भाई से भाई, मुकदमे-बाजी करते ।।
भाई से लड़ने को ढूंढे भाई कोई बहाना....

सास को पूज्य समझकर, बहू करती थी कहना ।
बहू है सास आजकल, बहू से डरते रहना ।।
कहाँ चली गई ? पूछ लिया तो आज गुनाह है माना .

आज सिनेमा बन गया, मन्दिर-मस्जिद से बढ़कर ।
होटल या रेस्टोरेन्ट है, नए बाबुओं का घर ।।
सिने-कलाकारों को कलिमें देवी-देवता माना....

मिस्टर बेकार समझते, प्रभु का नाम जपना ।
काम है बाते करना, जासूसी-नॉबिल पढ़ना ।।
भूल गये है भजन भक्ति के याद है फिल्मी गाना....

उगती पौध मे ही आज लगी है रोली ।
'केवल' है बाहर दिवाली अन्दर जलती है होली ।।
पश्चिम के रंग मे रंगगए है किसको बात सुनाना....

२८

झूठे जग में

[तर्ज : उम्मीद उन से क्या थी और कर....]

झूठे जहां मे किसको अपना बता रहे हो ?
प्यारा धर्म भुलाकर तुम कर ये क्या रहे हो ? ।।ध्रुव।।

मतलब का प्रेम जिनका, मतलब का प्यार जिनका ।
उनकी मुहब्बतो में प्रभु को भुला रहे हो ।।

तुम शाद रहना चाहो, आबाद रहना चाहो ।
फिर गैरो के दिलों को तुम क्यों जला रहे हो ?

कलपाओगे - कलपोगे, कल दोगे - कल मिलेगा ।
यह जानते हो फिर भी तुम क्यो सता रहे हो ?

ग़र मीठे आम खाने की ख्वाहिशे है दिल में ।
बंबूल बो रहे क्यों कॉटे लगा रहे हो ?

हँसना अगर जो चाहो तो तुम हँसाना सीखो ।
रोओगे खूब जी-भर तुम जो रुला रहे हो ।।

'केवल' है दुनियाँ सुपना, कोई नही यहां अपना ।
जब जाओगे अकेले कहेगे कहाँ जा रहे हो ?

पींजरे के पंछी से ! २९

[तर्ज . पछी रे ! काहे होत उदास....]

पंछी रे ! प्रेम का यह उपहार, देखले कारागार ।।ध्रुव।।

दानों पे जो नही ललचाता,
पीजरे में क्यों डाला जाता ।।
गीत सदा मस्ताने गाता,
करता मौजबहार....

पंछी ! अब तू क्यों रोता है ?
रोने से अब क्या होता है ।
क्यो अमूल्य मोती खोता है ?
कर कोई उपचार....

अब भी सुध कर ले निज घर की,
चोंच बढा के खोल ले खिड़की ।
छोड मोह-ममता पींजर की,
उड़ जा पंख पसार....

'केवल' मौज बहार करेगा,
पंछी ! जो प्रभु-चरण पड़ेगा ।
संकट-मोचन ! कष्ट हरेगा,
कर उनसे ही प्यार....

३० कहानियाँ

[तर्ज : आये भी वो गये भी वो....] 'नमस्ते'

आये कई, गये कई, जग में रही कहानियां ।
कही पे उनकी सो गई, मस्ती-भरी जवानियां ॥ ध्रुव ॥

धूप के जैसे ढल गये, मिट्टी थे मिट्टी में मिल गये ।
फूलो को मात करती थी जिनकी कभी पेशानियाँ....

परदेशी पछी प्रेम की, दुनियाँ बसा के उठ गये ।
हँसता है काल, रो रही फूलो सी कोमलाङ्गियाँ....

सारे जगत मे जगमगा, लहरा उठी आकाश में ।
खा के चपेटा काल का, वे मिट गई निशानियाँ....

उपवन में कल बसंत था, आँखो में रंग विलास का ।
बीती बहार आ गई, चारों दिशा वीरानियां....

देश की शान को बचा, कौम की लाज को बचा ।
धर्म की राह पे लुटा, हँस-हँस के जिन्दगानियाँ....

घर-घर में गीत गायेगे, दिन भी तेरा मनायेगे ।
कहें-सुनेगे प्रेम से, 'केवल' तेरी कहानियाँ....

[तर्ज : नाचो-नाचो प्यारे मन के मोर]

गाओ-गाओ प्रभु गुण-गान,
आज प्यारे ! पाया है अवसर महान ।। ध्रुव ।।

झूठा दुनियाँ का प्यार, झूठे दुनियाँ के यार,
तू झूठों में हो ना अज्ञान ।
नेकी से होती है जीवन की शान....

दुनियाँ के सरगम का झूठा है साज ।
झूठा है ताज, झूठा है राज ।
भूला है इसमें क्यो जिनवर का ध्यान....

ढल जायेगा तेरे यौवन का नूर ।
मन का गरूर, जाना जरूर,
दुनियाँ में हर एक है प्राणी मेहमान....

जीवन की बगिया में फुलवा खिलवाना ।
भगवन के चरणों में चुन-चुन चढ़ाना ।।
'केवल मुनि' तेरा होगा कल्याण....

●

३२ संध्या आई

[तर्ज : पीर-पीर क्या करता रे तेरी...]

आ रे भाई ! संध्या आई, कर जिनवर का ध्यान ।।ध्रुव ।।

फिर लिया खूब, खा लिया खूब ।
हँस लिया खूब, गा लिया खूब ।।
पक्षी घर जाते कहते है, अपना घर पहचान....

गर अपना घर नही पाएगा ।
तो यहाँ-वहाँ धक्के खाएगा ।।
सदा पराया घर धोखा है, अपना सुख की खान....

जो आना है तो जाना है ।
खिलना है तो मुर्झाना है ।।
कोमल-कलियाँ, मुर्झा करके देती है यह ज्ञान....

वह गई सुनहरी धूप कहां ?
वह गया सलौना रूप कहाँ ?
बढ़ते-ढलते, और चमकते दोनों एक समान....

सुन्दर लाली पर फूल नही ।
मनहर लाली पर भूल नही ॥
काली-अँधियारी कर देगी, लाली का अवसान....

कर सामायिक, कर प्रतिक्रमण ।
सच्चा है यह आध्यात्मिक-धन ॥
यही शान्ति देते 'मुनि केवल' करते है कल्याण....

कोई दुखी बना, कोई सुखी बना

[तर्ज : एक दिल के टुकड़े हजार हुए....] 'अनमोल घड़ी'

कर्मो की सारी माया है, कोई दुखी बना, कोई सुखी बना।
'जैसा किया वैसा पाया है,' कोई दुःखी बना कोई सुखी बना ।।

"सुचिण्णा कम्मा, सुचिण्णा फलं, भविस्सइ देवाणुप्पिया ।"
भगवान ने यह फरमाया है, कोई दुखी बना, कोई सुखी बना ।।

कोई लाल पलङ्ग पर सोता है, फूलों की सेज बिछा कर के ।
कोई फटा टाट नही पाया है, कोई दुखी बना, कोई सुखी बना ।।

कोई राजा कोई भिखारी है, कोई रानी कोई पनिहारी है ।
कोई दासी-दास कहाया है, कोई दुखी बना, कोई सुखी बना ।।

कोई ऊँचे महलो मे रहता, झोंपड़ा किसी को नही मिला ।
कोई मान-प्रेम-यश पाया है, कोई दुखी बना, कोई सुखी बना ।।

कोई राव-रङ्क बन जाता है, कोई रङ्क राव बन जाता है ।
नाचे जिस तरह नचाया है, कोई दुखी बना, कोई सुखी बना ।।

लक्ष्मी, वैभव, खुशियाँ 'केवल' 'सुबाहु' के सम्मुख आई ।
जिसने शुभ पुण्य कमाया है, कोई दुखी बना, कोई सुखी बना ।।

३४

दुनिया मतलब की

[तर्ज · हर चीज यहाँ की फानी....] 'पन्ना'

तू किससे प्रीत लगाये ? दुनिया मतलब की ।
तू अपना किसको बताये ? दुनिया मतलब की ।।ध्रुव।।

फूल खिले जब भँवरा आये, गुन-गुन करके गीत सुनाये ।
रस लेकर उड जाये, दुनियां मतलब की ।।

'परदेशी' की सुनो कहानी, 'सूर्यकान्ता' जिसकी रानी ।
हाथो से जहर पिलाये, दुनिया मतलब की ।।

मतलब हो तो पॉव दबावे, बिन मतलब कोई पास न जावे ।
नालायक बतलावे, दुनिया मतलब की ।।

प्रभु चरणो से प्रीत लगाले, 'केवल मुनि' परमानद पाले ।
गुरुदेव फरमाये, दुनिया मतलब की ।।

नम्र बन जारे प्राणी ! ३५

[तर्ज : भगत ! भर दे रे झोली....] 'वामन अवतार'

मेरी मान ! छोड अभिमान, नम्र बनजा रे प्राणी !
यह मान है अवगुण खान, मान से मिले नही सम्मान ।।ध्रुव।।
मैं हूँ पैसेवाला, मैं हूँ मोटर-बॅंगले वाला ।
मै-मैं करता रहे रात-दिन, बना फिरे मतवाला रे,
बना फिरे मतवाला ।।
है दो दिन का महमान, मान रे ! मतकर तू तूफान....
कोटी-पति कंगाल बने रे, पृथ्वी-पति भिखारी ।
रति-पति बने राख की ढेरी, महारानी पनिहारी रे,
महारानी पनिहारी ।।
तू क्यों करता है तान ? समय नहीं रहता एक समान....
नरक-लोक में बन के नारकी, सही तू असह्य-पीड़ा ।
कुत्ता-बिल्ली-गधा बना तू, बना नाली का कीडा रे,
बना नाली का कीडा ।।
तब कहाँ रही तेरी शान ? बड़प्पन की झूठी कुल-कान....
महाघमंडी लंकापति को, 'लक्ष्मण' ने संहारा ।
क्रूर-कुचाली-कुटिल 'कंस' को, 'श्री कृष्ण' ने मारा रे,
श्रीकृष्ण ने मारा ।।
बन ! विनयी सीख ले ज्ञान, ज्ञान देगा 'केवल' निर्वाण....

३६

खोवे रे उमरिया ।

[तर्ज · नगरी-नगरी द्वारे द्वारे....] 'मदर इण्डिया'

मेरा-मेरा करते करते, खोवे रे उमरियॉ ।
फूला-फूला फिरे, क्यो नही बोले रे सांवरिया ।।
आया था, जब क्या लाया था, क्या लेकर के जाएगा ?
जिसको मेरा-मेरा कहता यही पडा रह जाएगा ।।
पुण्य-पाप की तेरे संग मे जाएगी गठरियॉ....

कठपुतली-सा नाच रहा है, बधा मोह के तार मे ।
अपने को भी भूल रहा है झूठे जग के प्यार मे ।।
सब कुछ छोड के जाना होगा, एक दिन नई नगरिया....

बहार बीतेगी, आएगी, पतझड़ तेरे बाग में ।
पूर्णचन्द्र-सा सुन्दर मुखडा, जल जायेगा आग मे ।
मत कर तू अभिमान, तेरा तन माटी की गगरियॉ . .

करुणा सत्य दूर है तुझ से, झूठ गले का हार है ।
आकृति का मानव प्रकृति मे, दानव का व्यवहार है ।।
करती रहे शिकार नित्य-नई, तेरी बुरी नजरिया ...

दान-पुण्य-शुभ-कर्म कमाई, जो सग मे ले जायेगा ।
'केवल मुनि' जहॉ भी जायेगा, आनन्द-मंगल पायेगा ।।
खोटी राह छोड़कर चल तू, मुक्ति की डगरियाँ....

रहने दो

३७

[तर्ज : अहसान तेरा होगा....] 'जगली'

गुण-गान जो करना हो तो करो, तुम निदा करना रहने दो ।
औरो को बुरा कहना न कभी, जो कहता है उसको कहने दो ॥
॥ध्रुव॥

देखो ! संसार के आगन मे, कांटे भी है और फूल भी है ।
तुम फूलो से झोला भरना, कोई काटे ले तो लेने दो....

सागर के गहरे अन्तर मे, मोती और मछली दोनो है ।
तुम हस हो तो मोती चुगना, बुगले को मछली लेने दो....

औरो का उजियाला ढँक कर, राहू अपनी कालिख देता ।
तुम अपनी नैया पार करो, कोई भंवर में खे तो खेने दो....

औरो की गंदगी लेकर के तुम गंदी नाली मत बनना ।
'केवल मुनि' ईश्वर-भक्ति का, मुंह से गंगा जल बहने दो....

३८

कल का

[तर्ज : रुक जा ओ जाने वाले....] 'कन्हैया'

कल का ओ कहने वाले। कल का,बोल! अत कब होगा तेरे कल का।
सोचता है तू बडी दूर की, तेरे सास का भरोसा नही पल का ।।
।।ध्रुव।।

करना जो आज करले, कल आए या न आए ।
कल के भरोसे बैठा, बैठा ही रह तू जाए....

कल पर जो छोड़े उसके, होते न काम पूरे ।
कहते है कि 'रावण' के, कई काम है अधूरे....

दिन डूबने से पहले, मंजिल पे पहुँच जाए ।
ऐसा चतुर मुसाफिर, धोखा कही न खाए....

उड़ता हुआ 'समय नही, राह देखता किसी की ।
जो चूकता न अवसर, सुनता है बस उसी की....

'केवल मुनि' संजोले हृदय में ज्ञान ज्योति ।
उजियाला छुप न जाये, झटपट पिरोले मोती....

परदेशी से !

३९

[तर्ज . दिल लूटने वाले जादूगर....] 'मदारी'

ए भोले-भाले परदेशी ! ससार मे क्यों तू आया है ?
यहाँ से क्या लेकर जायेगा, क्या अपने संग में लाया है ?।।ध्रुव।।

जिस घर को अपना कहता है, वह घर नही रैन-बसेरा है ।
जाना होगा, जैसे जाते, पंछी होते ही सबेरा है ।।
मेरा-मेरा करने वाले ! जो कुछ है सभी पराया है....

दुनिया की रगीली गलियों मे अपनी पूंजी कई लुटा गये ।
मोह-मदिरा पीकर पागल बन, ठगियो के प्रेम मे ठगा गये ।।
जों सभल-सभल के निकला उसने ही माल बचाया है....

जी, ऐसा जी, तेरा जीवन सदियो तक खुशबू फैलाए ।
जैसे महक देकर अपनी, बगियो से फूल चला जाए ।।
उपकार किया जिसने उसने इतिहास में नाम लिखाया है....

जो खाली हाथ चला जाता, वह अच्छी ठौर न पाता है ।
सिर धुन-धुन वह पछताता है, पर-लोक मे आँसू बहाता है ।
'केवल' सुकृत ले गया वही, परलोक में आनन्द पाया है....

●

४० यौवन के अन्धे से !

[तर्ज : आ जाओ तड़पते हैं....] 'आवारा'

यौवन के अन्धे ! समझ जरा, यह रात गुजरने वाली है,
बिजली-सी चमक है मत इतरा, यह रात गुजरने वाली है ।।ध्रुव।।

तेरी आँखों में जाला छा जाएगा, तेरे कानोंमें ताला पड़ जाएगा,
तू कैसे सुनेगा शास्त्र बता ? यह रात गुजरने वाली है ।

गुलाब-सा चेहरा मुर्झाएगा, होठों की लाली उड़ जाएगी;
फिर देख किसे मुस्काएगा ? यह रात गुजरने वाली है ।

तेरी काया कंपेगी पत्ते-सी, तेरे दांत गिरेंगे फूलों-से ;
जिह्वा अटकेगी, प्रभु-गुण गा, यह रात गुजरने वाली है ।

चमकीले बाल काले-काले, तू जिन पे फूला मतवाले !
बुढ़ापा देगा सब नाज मिटा, यह रात गुजरने वाली है ।

अनमोल समय बीता जाए 'केवल मुनि' जीवन ज्योति जगा;
जो बन जाए, जो बने, बना, यह रात गुजरने वाली है ।

दो किनारे

४१

[तर्ज : न यह चांद होगा न तारे] 'शर्त'

सदा ये न दिलकश नज़ारे रहेंगे,
नहीं तुम, न साथी तुम्हारे रहेंगे।

चले जाते हैं जो घड़ी भर कहीं,
तो जिनके बिना चैन पड़ता नहीं ;
न यह प्यार होगा, न प्यारे रहेंगे।

चमन नहीं रहेगा, नहीं गुल रहेगे,
नहीं चहचहाते ये बुलबुल रहेगे,
हमेशा नही चाद-तारे रहेंगे।

नई दुनिया होगी, नया आशियाना,
नये दोस्त-दुश्मन, नया आबोदाना ;
नहीं याद फिर ये बिचारे रहेंगे।

रहा है, रहेगा यह बनना-बिगड़ना,
यह मिलना-बिछुड़ना यह बनना-उजड़ना,
यह दुनिया के बस दो किनारे रहेंगे।

प्रभु-भक्ति 'केवल' तू मन में बसा ले,
दया-प्रेम से अपना जीवन सजा ले,
यही सब वहाँ के सहारे रहेंगे।

४२

दे भक्ति भाव से

[तर्ज : तेरे द्वार खड़ा भगवान....] 'वामन अवतार'

दे भक्ति-भाव से दान, सज्जन बन जा रे दानी !
सुन, कह रहे शास्त्र-पुराण, दान से होता है कल्याण ॥ध्रुव॥

दान करेगा, पुण्य करेगा, लक्ष्मी उसकी दासी ।
जोड़-जोड़ धर जावे उसको, फिरे आत्मा प्यासी रे !
फिरे आत्मा प्यासी ॥
है दान देव-वरदान, दान है वैभव की मुस्कान....

सदा किसी की रही नही रे ! चंचल-चपला-माया ।
कभी कहां है-कभी कहाँ है, चलती-फिरती छाया रे !
चलती फिरती छाया ॥
फिर इसको अपनी मान, कर रहा है तू क्यों अभिमान....

देने से कम कभी न होता, सोच समझ बावरिया !
खाली कभी नहीं रहती है, देने वाली बदरिया रे !
देने वाली बदरिया ॥
तू कर ले स्वर पहचान, निकाल ले तू मन के अरमान....

अभय-सुपात्र-दान, दानों में, सब से श्रेष्ठ बताए।
दान की नैया में बैठे वे भव-सिन्धु तिर जाए रे!
भव-सिन्धु तिर जाए॥

सुदान से हो उत्थान, दान से बन जावे भगवान....
दानी की यश करे आरती, सम्पति चरण पखारे।
'केवल मुनि' ऋद्धि और सिद्धि पड़ी रहे नित द्वारे रे!
पड़ी रहे नित द्वारे॥

है दान-स्वर्ग-सोपान, दान से मिले मुक्ति-निर्वाण....

●
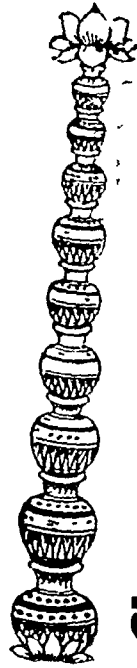
सांस्कृतिक

सांस्कृतिक

पर्व के क्षण कितने मधुर व सुहावने होते है। पर्व मानव मन में एक सात्त्विक आनन्द, एक सात्त्विक मधुरता पैदा करता है। अन्तश्चेतना में नव जागरण की स्फूर्ति भरता है। पर्व के पुण्य पलों में मानव अपने पूर्वकृत वैर-विरोध की भावना का विलीनीकरण कर विश्व के प्रति मैत्रीभाव स्थापित करता है। विपमता के गह्वर से ऊपर उठकर समता के आलोक में प्रवेश करता है।

'सांस्कृतिक' प्रकरण में मानव जीवन को छूने वाले पर्वो का व संत-सम्मेलन आदि जीवन की सुनहली घड़ियों का सुन्दर, सुललित चित्रण चित्रित किया है। वस्तुत: जीवन के ये मधुर-क्षण ही कालान्तर में, ऐतिहासिक-सम्पत्ति बनने का गौरव प्राप्त करते हैं।

अस्तु, उक्त प्रकरण के अनूठे-भावभरे गीतों का रसास्वादन करते हुए पाठक-वृन्द आनन्दविभोर हुए बिना नही रहेंगे।

—सम्पादक

क्षमा चाहता हूँ !

१

[तर्ज : तेरे प्यार का आसरा....] 'धूल का फूल'

क्षमा कीजिये सब क्षमा चाहता हूँ।
क्षमा करके सब से क्षमा चाहता हूँ ।।ध्रुव।।

संयम, तप का सार है 'उपशम',
श्रद्धा का शृंगार है 'उपशम',
ज्ञान की बगिया की बहार है 'उपशम',
सत्य ये समझ कर, क्षमा चाहता हूँ....
क्षमा करके सब से....

राग-द्वेष का मैल मिटा कर,
वैर-विरोध को दूर हटाकर,
मैत्री-भाव की ज्योति जगाकर,
हृदय-शुद्ध करके क्षमा चाहता हूँ....
क्षमा करके सब से....

शान्ति-समता को अपनाऊँ,
अपराधों की क्षमा मैं चाहूँ,
अन्तःकरण से सब को खमाऊँ,
प्रमुदित हो सब से क्षमा चाहता हूँ....
क्षमा करके सब से....

जैन-धर्म का प्राण 'क्षमा' है,
जीवन की मुस्कान 'क्षमा' है,
मानवता की शान 'क्षमा' है,
'केवल मुनि' मैं क्षमा चाहता हूँ....
क्षमा करके सब से....

२

पर्व पर्यूषण मनाना

[तर्ज : भैया मेरे ! राखी के बन्धन को....] 'छोटी बहन'

भाइयों मेरे ! पर्व-पर्यूषण मनाना,
बहिनों मेरी ! धंधों में पर्व न भुलाना,
पर्वाधिराज बधाना—२ ... ।।ध्रुव।।

अष्ट-मंगल-से, अष्ट-सिद्धि से,
पर्व के आनन्द-मय दिन आए ।
इनका प्रेम से स्वागत करिये,
ये पावन सन्देशा लाए ।।
प्रभु से प्रीति बढाना २....

मोह-अंधियारा दूर हटाने,
ज्ञान की जगमग ज्योति जगाने ।
निजानन्द का अमृत लाया,
लोकोत्तर-त्यौहार पिलाने ।।
छक करके पीना, पिलाना २....

अनमोल दिन ये अनमोल घड़ियाँ,
अनमोल अवसर चूक न जाना ।
बारह में से यदि दो घटाएँ,
बाकी रहेगा क्या वह बताना ।।
समय न व्यर्थ गंवाना २....

सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चरित्र की,
त्रिवेणी में मज्जन करिए ।
मैल मिटाइये-उज्जवल होइये,
जन्म-जन्म के पातक हरिए ॥
धर्म का लाभ कमाना २....

तृप्ति हुई नहीं, जिया भरा नहीं,
अनन्त सुमेरु खाई मिठाई ।
'केवल मुनि' कम से कम करलो,
एक बार तो तेला भाई ।
तप कर कर्म खपाना । २....

सांवत्सरी

३

[तर्ज : आओ काले नाग....]

आई-आई सांवत्सरी प्यारी रे, सुनो-सुनो सभी नर नारी रे !
क्षमा मांगिये रे, क्षमा मांगिये रे ।।
भूलो भूलो वैर क्लेश, छोड़ो-छोड़ो राग-द्वेष ।।ध्रुव।।

आज का है दिन बड़े हर्ष-उल्लास का ।
प्रथम सुपृष्ट आदि युग-इतिहास का ।।
गई हिंसा की अंधियारी रे, आई अहिंसा की उजियारी....

आज के प्रभात में सुसंस्कृति जगी है ।
मानवता, आर्य-सभ्यता की नींव लगी है ।।
देवत्त्व ने आँख उघारी रे, दानवता राक्षसी हारी रे....

'अर्जुनमाली', जैसा जीवन सुधारिये ।
'गजसुकुमाल' जैसी क्षमा शांति धारिये ।।
'श्री कृष्ण' से बनो उपकारी रे, उत्तम गुण-व्रत के धारी रे....

'काली' 'सुकाली' ने पहना तप रूप हार है ।
'नंदा' आदि रानियों ने किया बेड़ा पार है ।।
'ऐवंता, ने नैया तारी रे, महापुरुषों की बलिहारी रे....

'देवकी' महारानी जैसे दान में उदार हों ।
'सुदर्शन' जैसा प्रभु चरणों में प्यार हो ।।
कई आत्माएं हुई भव पारी रे, 'केवल मुनि' वन्दना हमारी रे....

४ हम मंगल गाएँ

[तर्ज : ओ नाग ! कही जा बसियो रे····] 'नाग पचमी'

अहो ! पर्व-पर्यूषण आए रे, हम मंगल गाएँ रे ॥ध्रुव॥

एक वर्ष में आठ-दिवस यह, अष्ट-सिद्धि से आते ।
अष्ट-कर्म-दल काटो भविजन ! शुभ-सन्देश सुनाते ॥
हम भव-सागर तर जाएँ रे, हम मंगल गाएँ रे....

अमृत-सी मीठी जिनवाणी, सुन-सुन मन हर्षाएँ ।
रोम-रोम नाचे आनन्द से खुशियाँ कही न जाएँ ॥
तन-नयन-प्राण पुलकाये रे, हम मंगल गाएँ रे....

जन्म-जन्म में मिले पत्नी-सुत, रूप-रंग-घर-माया ।
मंगलमय वीतराग-धर्म यह, पुण्य उदय से पाया ॥
हम जीवन सफल बनाएँ रे, हम मंगल गाएँ रे....

धन्य 'रुकमणी','भामा','गौरी',धन्य'काली''महाकाली'।
धन्य'गज मुनि',धन्य'सुदर्शन',धन्य है अर्जुनमाली ॥
वन्दन कर बलि-बलि जाएँ रे, हम मंगल गाएँ रे....

दान-शील-तप, करे आराधन, भली भावना भावे ।
नम्र, शांत, निष्पाप, शुद्ध बन अजर-अमर बन जावें॥
'मुनि केवल' शिव-सुख पाएँ रे, हम मंगल गाएँ रे....

●

अहा ! पर्व हमारा है

५

[तर्ज : मन भावन, मन भावन....]

मन-भावन, मन भावन, अहा ! पर्व हमारा है।
इसने लाखों के जीवन का रूप निखारा है ।।ध्रुव।।

आज देश के नगर-नगर में खुशियाँ छाई हैं घर-घर में।
जहां भाई अपने रहते, वहाँ यही नजारा है ।।

पुरुषों का त्यौहार है कोई, नारी का त्यौहार है कोई।
यह बुड्ढे-बच्चे-नारी-नर सबको प्यारा है ।।

आज कोई होगा लन्दन में, उमंग उठेगी उसके मन में।
होगा लीन धर्म-साधन में ज्ञान उजारा है ।।

द्वेष-वैर सब कलिमल धोलें, हम भी 'केवल' निर्मल होलें।
गंगा से भी पतित-पावनी बह रही धारा है ।।

●

४

हम मंगल गाएँ

[तर्ज : ओ नाग ! कही जा बसियो रे....] 'नाग पंचमी'

अहो ! पर्व-पर्यूषण आए रे, हम मंगल गाएँ रे ।।ध्रुव।।

एक वर्ष में आठ-दिवस यह, अष्ट-सिद्धि से आते ।
अष्ट-कर्म-दल काटो भविजन ! शुभ-सन्देश सुनाते ।।
हम भव-सागर तर जाएँ रे, हम मंगल गाएँ रे....

अमृत-सी मीठी जिनवाणी, सुन-सुन मन हर्षाएँ ।
रोम-रोम नाचे आनन्द से खुशियाँ कही न जाएँ ।।
तन-नयन-प्राण पुलकाये रे, हम मंगल गाएँ रे....

जन्म-जन्म में मिले पत्नी-सुत, रूप-रंग-घर-माया ।
मंगलमय वीतराग-धर्म यह, पुण्य उदय से पाया ।।
हम जीवन सफल बनाएँ रे, हम मंगल गाएँ रे....

धन्य 'रुकमणी','भामा','गौरी',धन्य'काली''महाकाली'।
धन्य'गज मुनि',धन्य'सुदर्शन',धन्य है अर्जुनमाली ।।
वन्दन कर बलि-बलि जाएँ रे, हम मंगल गाएँ रे....

दान-शील-तप, करे आराधन, भली भावना भावे ।
नम्र, शांत, निष्पाप, शुद्ध बन अजर-अमर बन जावें।।
'मुनि केवल' शिव-सुख पाएँ रे, हम मंगल गाएँ रे....

●

अहा ! पर्व हमारा है — ५

[तर्ज : मन भावन, मन भावन....]

मन-भावन, मन भावन, अहा ! पर्व हमारा है ।
इसने लाखों के जीवन का रूप निखारा है ।।ध्रुव।।

आज देश के नगर-नगर में खुशियाँ छाई हैं घर-घर में ।
जहां भाई अपने रहते, वहाँ यही नजारा है ।।

पुरुषो का त्यौंहार है कोई, नारी का त्यौंहार है कोई ।
यह वुड्ढे-वच्चे-नारी-नर सवको प्यारा है ।।

आज कोई होगा लन्दन में, उमंग उठेगी उसके मन में ।
होगा लीन धर्म-साधन में ज्ञान उजारा है ।।

द्वेष-वैर सव कलिमल धोलें, हम भी 'केवल' निर्मल होलें ।
गंगा से भी पतित-पावनी वह रही धारा है ।।

●

६ आज खमाना रे।

[तर्ज : सैयां ! दिल आना रे....] 'हमलोग'

दिल के मैल मिटाना रे, प्रेम से आज खमाना रे।
भाई-बहिनों ! तुम ।।ध्रुव।।

कषाये रुलाने वाली, चौरासी फिराने वाली।
अनन्तानुबन्धी अनन्त – संसार बढ़ाने वाली ।।
पुद्गल की परिणति तज, स्व घर मे आना रे....

राग और द्वेष छोड़ो, अन्तर की ग्रन्थी तोड़ो।
बन करके आत्माभिमुख, जिनवर से प्रीति जोड़ो ।।
दुर्लभ मानव - जीवन को सफल बनाना रे....

किसी के चुभाया कांटा, किसी के लगाया चाँटा।
कड़वा किसी से बोले, क्रोध में किसी को डांटा ।।
पैरों मे पड़कर सब से माफी चाहना रे....

पर्व–साँवत्सरी आई, पाट दो मनों की खाई।
शुद्ध-शान्त-निर्मल हो लो, क्लेश की मिटाकर काई ।।
सम्यक्-दर्शन को शुद्ध कर आनन्द पाना रे....

प्रम के प्रदीप जलाओ, प्रेम की गन्ध बसाओ।
मन के मन्दिर में 'केवल' प्रेम से प्रभु को पाओ ।।
विश्व - मैत्री के प्यारे फूल खिलाना रे....

जीवन सुधारिये

[तर्ज : जिया बेकरार है....] 'बरसात'

आरभ-पाप निवारिये, नियम-व्रत धारिये ।
पर्व-पर्यू षण आ गये, जीवन सुधारिये ।।ध्रुव ।।

आठ दिनों मे धन्धा करने बाहर गांव मत जाना जी ।
रात्रि मे भोजन नही करना, हरि-सब्जी नही खाना ।।

सामायिक-सवर-पौषध और प्रतिक्रमण भी कीजे जी ।
मानव-तन उत्तम-कुल पाये, लाभ इसी का लीजे ।।

सब जीवो की रक्षा करना, नशा-व्यसन छिटकाना जी ।
प्रेम से धर्म-ध्यान करना सब, सेवा खूब बजाना ।।

मित्रो ! एक भी वस्तु को नहीं, धुलवाना-रंगवाना जी ।
आत्मा के कीचड़ को धोना, ज्ञान का रंग चढाना ।।

पर्व दिनों मे तपस्या करलो, ब्रह्मचर्य को धारो जी ।
झूठ न बोलो, ब्लेक करो मत, निंदा-चुगली [illegible] ।।

जग के मोह से मुखड़ा मोड़ो, धर्म से प्रीति जोड़ो [illegible]
वहिनों ! पीसना-कूटना आदि घर-धन्धों [illegible]
जैन धर्म की करो उन्नति, झगड़े सभी [illegible]
'केवल मुनि' मधुमय बन कर के, [illegible] ।'

८

आज खमाइजो
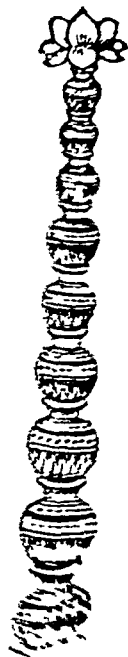
[तर्ज : म्हांरो छेल भंवर कसुवो] 'राजपूतानी'

मेरे प्यारे मित्रों ! प्यारी बहनों ! शुद्ध-मन आज खमाईजो ।
कलह-कषाय का कीचड धोकर जीवन उच्च बनाईजो ॥ध्रुव ॥

भूलें की हों यदि कभी माया-मद में फूल ।
उन भूलों को याद कर, भूलें गैर की भूल ॥
वैर-विरोध मिटाकर दिल से पावों में पड जाईजो....

आज खमाते जो नहीं, वे नही जाने तत्त्व ।
नहीं टूटे भव-शृङ्खला, नहीं मिले अमरत्त्व ॥
महावीर की वाणी सुन कर आराधक बन जाईजो....

जिन के संग में नित्य रहे, काम पड़े दिन-रैन ।
जिन से कभी किसी समय, कहे होय कटु-बैन ॥
उन से भीख क्षमा की लेने झोली आज फैलाईजो....

मंगल-मय दिन आज है, करो ज्ञान-रस-पान ।
मंगल-मय-महावीर का, करो प्रेम से ध्यान ॥
यथातथ्य कर पर्वाराधन 'केवल मुनि' सुख पाईजो....

त्यौहार प्यारा ९

[तर्ज : गम का फसाना किसको....] 'मेला'

आओ सज्जन ! आज सब को खमाएँ ।
त्यौहार प्यारा आया बधाएँ ।। ध्रुव ।।

मिलती है गंगा से यमुना की धारा ।
टूटे दिलों को ऐसे मिलाएँ ।।

माला बनायेंगे चुन-चुन के मोती ।
बिछुडे हुओ को छाती लगाएँ ।।

कभी भी किसी से हुई हो लड़ाई ।
उन से क्षमा भीख लेने को जाएँ ।।

दिल में किसी से भी रंजिश न रखे ।
रूठे हुओ को फिर से मनाएँ ।।

शपथ लेवे पापों से बचते रहेंगे ।
पहले किये उन पे आंसू बहाएँ ।।

बने सब के हम, सब को अपना बनाएँ ।
'केवल मुनि' प्रेम के गीत गाएँ ।।

●

१० राखी

[तर्ज : सपने में क्या देखा....]

ओ भाई ! प्रिय-भाई !! आओ, मैं राखी बान्धूं ।
इन तारों में छुपा हुआ है, बहिन-भाई का प्यार ।।ध्रुव ।।

प्रिय पिहर की याद दिलाने ।
बचपन की झाँकी दिखलाने ।।
हरियाले सावन में आता ये सुन्दर त्यौहार....

भाई-बहिन का रोना-हँसना ।
पल में मिलना, पल में लड़ना ।।
आँखों में फिर रहा है मेरे वह स्वर्णिम-संसार....

राखी ने पत कई की राखी ।
भारत का इतिहास है साखी ।।
इसे बान्ध करके शत्रु भी भूल गये तलवार....

भारत मां का बन्धन खोले ।
बहिनों की रक्षा का व्रत ले ।।
उसके हाथों में सजता है 'केवल' ये उपहार....

●

११

रक्षाबन्धन

[तर्ज़ : मिल के बिछुड़ गई अखियाँ] 'रतन'

किसके मैं बाधूँ ये रखियाँ ? हाय ! भैया !!

सावन में चारों तरफ है खुशाली, हरी-भरी डाली-डाली।
भूले में भूल रही सखियां....

चेहरे पे है आज बहनों के लाली, हाथों में पूजा की थाली।
उन में सुनहरी है रखियाँ....

भैया के घर जा रही फूली-फूली, दुख-दर्द सारे वे भूली।
आनन्द से हँस रही अखियाँ....

तेरे बिना सारा पिहर है सूना, फीका है बिल्कुल सलौना।
सूनी पड़ी मेरी रखियाँ....

तेरे बिना मां की गोदी है खाली, दुखियारी है बहन ब्हाली।
भाभी की लुट गई दुनियाँ....

हाय ! तुझे भाई कैसे मैं पाऊँ ? किसके तिलक मैं लगाऊँ ?
कैसी करी हाय दैया....

आजा रे, मेरे प्यारे भाई ! आजा, मेरी रखियाँ बंधा जा।
'केवल' मैं लेऊँ बलैया....

१२

अष्टाह्निक महापर्व

[तर्ज : दिवाली फिर आगई सजनी....]

पर्यू षण फिर आगये सजनी !
अपने पावन-आंचल में ये खुशिया भर-भर लाये ॥ध्रु व॥

काले-काले बड़े सलोने, बादल नभ में छाए ।
ठंडी-ठंडी बुंदियाँ बरसे, मेरे मन को भाए ॥
ग्रीष्म-ताप सब शान्त करें और हरियाली उपजाएँ....

गुरुदेव भी वीर वचन का, आनन्द रंग बरसाएँ ।
पाप-ताप-संतप्त जीव को, शान्ति-सुधा पिलायें ॥
हम भी चले सखी ! स्थानक में सोये भाग्य जगाएँ....

कर्मों के झूले झूली हैं, चौदह राजू लोक ।
पाई सुख-दुख जन्म-मृत्यु, भय-त्रास-रोग और शोक ॥
अब की सुखमय-धर्म झूलना, झूलें और झूलाये....

दुनियाँ के त्यौंहार सुखों में, दुख की रेखा लाएँ ।
बिछुड़ गये जो प्रियजन उनको बरबस याद दिलाएँ ॥
जिससे विरही की आंखों में दो आँसू आ जाये....

यह त्यौहार श्रेष्ठ है सजनी ! दुख का करता नाश ।
हृदय से जो इसे मनावे, पूरे उस की आश ॥
'केवल मुनि' मंगल-फल पाता, वीर-प्रभु फरमाये....

[तर्ज : पंजाबी....]

छूटे ना छूटे ना भाई ! साथ हमारा छूटे ना ।
टूटे ना टूटे ना यह संघ का बन्धन टूटे ना ।।ध्रुव।।

शताब्दियों में अवसर आया, भाई-भाई को गले लगाया ।
द्वेष-भाव अब प्रेम की पूंजी लूटे ना....

नदियाँ कब तक दूर बहेगी, आखिर सागर में लय होंगी ।
यदि एक बच्चा तक भी इससे फूटे ना....

साम-दाम-दण्ड-भेद चलेगे प्रतिद्वन्दी उत्पात करेंगे ।
एक अजान सदस्य भी हम से रुठै ना....

मन हो करुणा-शान्ति कगारा, वचन हो मीठे अमृतधारा ।
तन से संयम-शील-त्याग-तप छूटे ना....

'केवल' स्वर्ण-विहान करेंगे, जगती में जय-गान करेंगे ।
सच्चे हैं यह भाव हमारे झूठे ना....

१४

आज आना पड़ा

[तर्ज : छोड़ बाबुल का घर....] 'बाबुल'

छोड़ गर्मी का डर, करके लम्बा सफर, आज आना पड़ा ।।ध्रुव।।

सैंकड़ों वर्ष के टूटे दिल मिल रहे ।
जहाँ बीरान उजड़े चमन खिल रहे ।।
मन मे जागी उमंग, देखने को ये रंग, आज आना पड़ा....

कहा किसी ने कि-मरुधर में पानी है कम ।
उन की बातों का हमने किया कुछ न ग़म ।।
करने मुनि-दर्शन, भेंटने को चरण, आज आना पड़ा....

रेल में जाओगे तुम खड़े ही खड़े ।
और मोटर बिना भी रहोगे पड़े ।।
कर सुनी-अनसुनी, लेके थर्टी मनी, आज आना पड़ा....

गहरी मन्दी ने बाजार पट कर दिया ।
खर्च के डर से आने को हिचका जिया ।।
श्रीमती ने कहा, मौका है बेबहा, आज आना पड़ा....

एक अर्जी है 'केवल' भुलाना नहीं ।
प्रेम के दीप को तुम बुझाना नहीं ।।
कहना है इसलिए, क्योंकि जिसके लिए, आज आना पड़ा....

'श्री दिवाकर गुरुदेव' होते अगर ।
उनको आनन्द होता यह सब देखकर ।।
धन्य घड़ी-धन्य दिन, हो गया मन-मगन, आज आना पड़ा....

नोट—सादडी साधु सम्मेलन मे समुपस्थित एक सद्गृहस्थ के भावों का शब्द-चित्र ।

भूल सर्दी का डर — १५

[तर्ज छोड बाबुल का घर...] 'बाबुल'

भूल सर्दी का डर, मित्रो ! सोजत शहर, आज आना पड़ा ।।ध्रुव।।

एक अफसोस रहा नही गए सादड़ी ।
और आँखों से देखी नही वो घड़ी ।।
सोचा दिल ने यही, वो नहीं ये सही, आज आना पडा....

शहर अजमेर मे संघ की काया घड़ी ।
प्राण-आत्म-प्रतिष्ठा हुई सादड़ी ।।
जो कुछ बाकी रहा, काम होगा यहाँ, आज आना पड़ा....

वैसे तो मेरा अजमेर में था यह तन ।
पर बसे थे सम्मेलन में ही प्राण-मन ।।
उस समय रहा फिकर, पहुँचू कैसे उधर ? आज आना पड़ा....

एक समवसरण देखा था अजमेर का ।
और लॉकेट साइज में इस शहर का ।।
जिन्दगी है अगर, कभी देखेगे फिर, आज आना पडा....

गर्मी और सर्दी सहेली है, अब डर नही ।
संघ आगे बढ़ेगा रुकेगे नहीं ।।
'केवल मुनि' जय-जय, सब जगह है विजय, आज आना पड़ा....

१६

एक संदेश

[तर्ज . जो हम पै गुजरती है....] 'पन्ना'

जो दिल में उमंगे हों, कुछ करके दिखाना ।।ध्रु व।।

मिल करके तुम कभी-कभी, कर लेते हो प्रस्ताव ।
जलसे तक ही दिलो में, बना रखते हो प्रभाव ।।
इसी तरह से अब भी कही भूल न जाना....

आपस के भेद-भावों को, झगड़ो को भुलाकर ।
और अपने भाईयों को, गले अपने लगाकर ।।
तन-मन से सेवा करने की प्रतिज्ञा कर जाना....

पिछड़ी हुई कौमे कई, तरक्की कर गई ।
आंधी के थपेड़ों में भी, गिर-गिर उभर गई ।।
क्रान्ति के गीत गाना, कदम आगे बढ़ाना....

महावीर की वाणी का, जलवा सबको दिखादो ।
अहिंसा-सत्य के सभी को, प्रेमी बनादो ।।
और प्रेम की दुनिया में, 'केवल' वंशी बजाना....

●

१७ सातों वार की शिक्षा

[तर्ज : भैया ! मेरे राखी के बन्धन....] 'छोटी बहन'

भाई मेरे ! सातों वार यह सिखाते ।
भाई मेरे ! शिक्षा देते है आते-जाते ।।
विज्ञ-जनों को जगाते-जगाते....

'सोम' कहे मन सौम्य बनाना, 'मंगल' मंगल-वचन सुनाना ।
'बुधवार' कहे बुद्धिमान बन, 'गुरुवार' कहे गुरु-गुण गाना ।।
गुरुवर ही नैया तिराते-तिराते....

'शुक्रवार' कहे तू शुद्ध बनकर 'शनि' कहे संताप-पाप हर ।
जग में उजियाला फैलाना, 'रवि' कहे रवि सा चमक २ कर ।।
चलना तू निंदिया भगाते-भगाते....

विश्व के कण-कण देते शिक्षा, गुण-रत्नों की देते भिक्षा ।
'केवल मुनि' मतिमान समझकर, सदाचार की लेते दिक्षा ।।
जीवन को सुन्दर बनाते-बनाते....
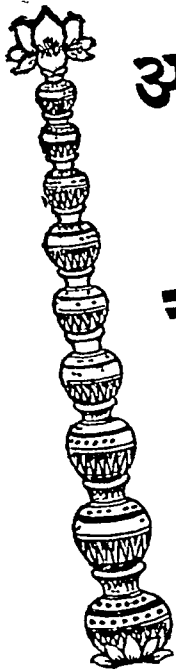
अ र्च ना

अर्चना

आराध्य देव के प्रति हृदय की सच्ची आस्था प्रकट करना 'अर्चना' है। अर्चना का अर्थ केवल पूजा-पाठ ही नहीं है, अपितु वह अन्तरात्मा की एक सुकुमार भावना की भी द्योतक है। जिससे साधक अपने साध्य से तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित कर सके। दूसरी भाषा में इसे विनय भी कहा जा सकता है। धर्म का मूल 'विनय' है। जिस प्रकार वृक्ष के मूल से स्कन्ध, स्कन्ध से शाखाएं-प्रशाखाएँ और फिर क्रमशः पत्र, पुष्प एवं फल उत्पन्न होते हैं, इसी प्रकार धर्म-वृक्ष का मूल विनय है और इसका अन्तिम फल मोक्ष है।

'अर्चना' प्रकरण में कवि ने अपने आराध्य देव—श्रद्धेय आचार्य, उपाचार्य व गुरुवर्य के प्रति जिस भक्ति-विभोर मधुर हृदय के साथ श्रद्धा के पुष्प अर्पित किये है, वे दर्शनीय है। वस्तुतः एक सच्चे भक्त हृदय की जो मधुर भावुकता होती है, वह प्रस्तुत प्रकरण में दिखलाई पड़ेगी।

पाठक, अगली पंक्तियो में उस भव्य भावुकता के सुरम्य चित्र को देखकर सौन्दर्याभिभूत हो झूम-झूम उठेगे।

—सम्पादक

आचार्य श्री के गुण !

१

[तर्ज : जब से बलम घर आए....] 'आवारा'

गुण 'आचार्य श्री जी' के गाएँ,
चरण कमलो में बलि-बलि जाएँ ।।ध्रुव।।

जन्म 'राहो' नगर में है पाए,
माता 'परमेश्वरो जी' के जाए।
'मंशाराम' के लाल कहाए ।।

जैन-शासन की सेवा बजाई,
वह न जाएगी कभी भुलाई।
पुष्प साहित्य के नव खिलाए ।।

भारतीय दर्शनो के है ज्ञानी,
जिनकी अमृत-सी मीठी है वाणी।
ज्ञान की गंगा-यमुना बहाए ।।

गावो-गाँवो मे नारे है जय के,
पूज्य ! प्यारे है लाखो हृदय के।
आज हिल-मिल जयन्तो मनाएँ ।।

सघ धन्य हुआ तुम को पाकर,
किया सत्कार नेता वनाकर।
'केवल मनि' प्रेम से गीत गाएँ ।।

२ उपाचार्य श्री का सुयश

[तर्ज : एक परदेशी मेरा दिल....] 'फागुन'

चरणों में नर-नारी नित्य आ रहे।
'उपाचार्य श्री जी' के सुयश गा रहे ॥ध्रुव॥

'उदयपुर' जन्म दे के हो गया निहाल है।
'इन्दिरा' के नन्द 'सायब लालजी' के लाल हैं ॥
पूज्यवर ! सब ही के मन भा रहे....

वर्धमान-संघ के है, पूज्य श्री शिरोमणी !
ज्ञाननिधि-दयालु है, शात है बड़े गुनी ॥
दर्शन कर बलिहारी जा रहे....

भक्ति-भरी, ज्ञान-भरी बड़ी मीठी बोली है।
एक-एक वचन में मिसरी-सी घोली है ॥
जय-जयकार सदा आपका रहे....

आनन्द में रहें 'मुनि केवल' की कामना।
युग-युग जीओ ! यही सब की है भावना ॥
शान्ति में देख सभी शान्ति पा रहे....

जय आचार्य जी ।   ३

[तर्ज : चुप-चुप खड़े हो....] 'बड़ी बहन'

वर्धमान-संघ के जय-जय आचार्य जी !
जय-उपाचार्य जी, हाँ, जय उपाचार्य जी !।।ध्रुव।।

एक-मत एक-बात एक-रंग-ढंग हो ।
संघ देवता के सभी अंग हो, उपंग हो ।।
सभी है हमारे यह शर्त अनिवार्य जी....

सच्चे सैनिकों-सी होवे आचारो की एकता ।
सभी मुनियो की होवे विचारों की एकता ।।
परस्पर रहे स्नेह-सौहार्द्र-औदार्य जी....

किसी में भी तेरा-मेरा भेद-भाव ना रहे ।
जन-मन-मानस में प्रेम की सरि वहे ।।
नेताओं की आज्ञा करे सब शिरोधार्य जी....

'केवल मुनि' समवेत-स्वरों से यह नाद हो ।
'वर्धमान-संघ फूले फले जिन्दाबाद हो' ।।
गाओ ! शुभ-प्रेम-गीत यह सब आर्य जी....

●

४

हमारी वन्दना

[तर्ज · कभी याद करके, गली पार करके....] 'सफर'

धन्य-धन्य गुरुवर! पच अग नमाकर, सदा होवे हमारी वन्दना !
॥ध्रुव॥

दर्शन तुम्हारे है आनन्दकारी ।
मगल-सदन है वाणी तुम्हारी ॥
धन्य-धर्म-दिवाकर ! धन्य-शान्ति-सुधाकर. ..

त्यागी ! तपस्वी ! महाव्रत-धारी !
करुणा के सागर ! पर-उपकारी !
राग-द्वेष मिटाकर, धन्य बने क्षमा धर....

स्वागत करेंगे—जयकार कर के ।
सम्मान देंगे—सत्कार कर के ॥
धन्य कल्प-तरुवर ! धन्य-ज्ञान-गुणाकर. ..

चरणो का हू मै 'केवल' पुजारी ।
चाहूं सदा सेवा-भक्ति तुम्हारी ॥
आत्म-ज्योति जगा कर, बने जैन-जवाहर....

•

जय-जय संघ की

[तर्ज : छोड़ बाबुल का घर...] 'बाबुल'

पूज्य आचार्य जय ! पूज्य उपाचार्य जय ! जय-जय संघ की ।।ध्रुव।।

हम को स्वर्ग से बढ़कर के 'आनन्द' मिले ।
'प्यार' के, 'प्रेम' के 'फूल' प्यारे खिले ।।
'पृथ्वी'-सा धीर-मन, 'मिश्री' जैसे वचन, जय-जय सघ की...

'शुक्ल', 'गज', 'मुक्ता', 'पन्ना', से अनमोल बन ।
'समर्थ', 'कृष्ण'-से सहस्रों का जीतेगें मन ।।
रत्न-त्रय धार कर, सुख पावे 'अमर', जय-जय-संघ की....

वैष्णवों को जो 'पुष्कर' के नहाने में है ।
ऐसी खुशियाँ हमें गुण सुनाने में है ।।
बढ़ते ही जाएगे, गीत यही गाएंगे, जय-जय संघ की....

ज्ञान-निर्मल सभी का हो, सुविचार हो ।
एक-श्रद्धा हो, एक-सा ही आचार हो ।।
पूर्ण हो सब कड़ी, आए वो शुभ घड़ी, जय-जय संघ की....

'केवल मुनि' प्रेम का दीप जलता रहे ।
ज्योति में नव-शिशु-संघ पलता रहे ॥
वीर-वाणी गूजे, कौना-कौना सुने, जय-जय संघ की....

मेरे गुरुवर ! का रहता था निश-दिन यह मन ।
सब मिलें प्रेम से कब उदय हो वो दिन ?
होंगे वे जहाँ कहीं, वहाँ कहेंगे यही, जय-जय संघ की....

६ जयन्ती आज आई

[तर्ज : ये मर्द बड़े बेदर्द बड़े] 'मिसमेरी'

पुन्यवान बड़े, गुणवान बड़े, मतिमान-परम-सुखदाई ।
उन्ही 'गुरुदेव' की जयन्ती आज आई ।। ध्रुव ।।

'गंगाराम' के नन्दन, गंगा के निर्मल जल से ।
माता 'केशर' के दुलारे, केशर के परिमल से ।।
'नीमच' नगरी में खिल कर के, यश-सुगन्ध फैलाई....

यौवन की एक झलक ने, स्वप्नों के पंख लगाए ।
अपना संसार बसाने, वर बन वहू घर लाए ।।
तभी कहा वैराग्य ने आकर—तू कहाँ रहा लुभाई....

सुख की पहली घड़ी में, सारा घर बार छोड़ा ।
पत्नी से मोह तोड़ा, भोगों से मुखड़ा मोड़ा ।।
संयम की चादर गुरुवर ने, पंचरंगो रंगवाई....

अहिंसा का मन्त्र देकर, लाखों ही जीव बचाए ।
कईयों का जीवन बदला, कईयों के व्यसन छुड़ाए ।।
अज्ञानी-भूले-भटको को, सीधी राह बताई....

मन मे करुणा का झरणा, वाणी में प्रेम का जादू ।
परम दिव्य-भव्य-मूर्ति ! निरे-निराले साधु ।।
राजमहल से तृणकुटिया तक, प्रभु की वाणी सुनाई....
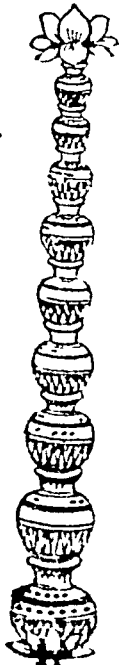
महा मालव-मरुधर में, आज भी है उनकी अर्चा ।
लाख–लाख लोग करते उनके गुणों की चर्चा ।।
गांव-गांव में, नगर-नगर में धर्म की ज्योति जगाई....

जैन-जगत के सूरज ! आभा बिखराते गए ।
जीवन की संध्या में भी, हंसते-मुस्काते गए ।।
'केवल मुनि' उपकार उन्हों के, कभी न जाए भुलाई....

o

बड़े पुण्यवान थे

७

[तर्ज : चुप चुप खड़े हो....] 'बड़ी बहन'

'जैन दिवाकर गुरुदेव !' ज्योति-मान थे ।
बड़े पुण्यवान थे जी, बड़े पुण्यवान थे ।।ध्रुव।।

वृद्धपन में भी केहरी-से ललकारते ।
पापियों के, अधमों के जीवन सुधारते ।।
असर-कारक - उपदेश रामबाण थे....

नर-नारी दौड़े आते मानों कोई माया है ।
मीठी-मीठी वाणी जैसे अमृत पिलाया है ।।
हिन्द के सितारे ! प्यारे भारत की शान थे....

दर्शन मिला कि रोम-रोम खुशी छा गई ।
'दया पालो !' कह दिया तो मानो निधि पागई ।।
त्यागी ! दिव्य—मूर्ति ! थे, करुणा की खान थे....

शान्ति-प्रसन्नता का सोता सदा बहता था ।
छोटे-छोटे गावों में मेला लगा रहता था ।
चारो ओर पूजे जाते देवता समान थे....

जैन–जैनेतर आज उनके लिए रोते हैं ।
सैकड़ों बर्षो में कभी ऐसे साधु होते है ।।
अग्रदूत ! संघ-ऐक्य-योजना के प्राण थे....

जब-जब प्यारे गुरुदेव ! याद आएँगे ।
तब-तब आँसुओं से नैन भर जाएंगे ।।
कहां गये ? "केवल मुनि" देव वरदान थे....

●

८

गुरुदेव के प्रति

[तर्ज : जब तुम्ही चले परदेश....] 'रतन'

ओ जिन-शासन के ताज ! गुरु-महाराज !
बड़े-उपकारी ! मैं बार-बार-बलिहारी ॥ध्रुव॥

घर-बार से नाता तोड़ दिया, पत्नी तक को भी छोड़ दिया ।
भर यौवन में दुनिया को ठोकर मारी....

जिस ओर भी गुरुवर जाते है, कल-युग में सत-युग लाते है ।
दर्शन को आते दौड़ – दौड़ नर – नारी....

राजाओं को उपदेश दिया, प्रभु का प्यारा सन्देश दिया ।
सब को जीवन प्यारा है, मृत्यु खारी....

घर-घर में धर्म फैलाया है, अहिंसा-प्रेम सिखाया है ।
खट खट खटकाती रोकी तेग कटारी....

लाखों में एक ही साधु है, बोली में चलता जादू है ।
वाणी है आप की अमृत से भी प्यारी....

'केवल' कहाँ तक गुण गान करुँ, जितना थोड़ा अभिमान करुँ ।
अभिनन्दन है जय होवे देव ! तुम्हारी....

गुरुदेव की स्मृति

९

[तर्ज . रुम-झुम वरसे वादरवा....] 'रतन'

दर्शन-प्यासी अँखियां है, कहाँ ढूढ़े कहाँ जाएँ ?
गुरुदेव ! कहाँ है, कहाँ है, गुरुदेव ! कहाँ है ? ।।ध्रुव।।

दर्शन करने लोग हजारों आते थे, आते थे।
दो दिन को आते, कई दिन रह जाते थे, जाते थे ।।
कितनी श्रद्धा थी तुम पर ? अब कहाँ जाएँ बताओ....

महान् संत थे, आत्म-शक्ति की माया थी, माया थी ।
देवदूत के वरद हस्त-सी छाया थी, छाया थी ।।
जहाँ जाते वही आनन्द था, धूम-धाम छाई रहती....

जैनी और अजैनी सब के प्यारे थे, प्यारे थे ।
जीवन-यात्रा के गुरुवर ! ध्रुव तारे थे, तारे थे ।।
हमको बड़ा सहारा था, हम थे चरणों में निर्भय....

कोटा' शहर मे कई वर्षो मे आये थे, आये थे ।
पहली वार कइयों ने दर्शन पाये थे, पाये थे ।।
वह भी सब ये कहते है, कैसे बतलाए क्या थे....

त्रिवेणी-संगम कर सब को दिखलाया, दिखलाया।
प्रेम इस तरह करो सभी को सिखलाया ॥
प्रेम-मूर्ति का दुनियाँ को, अंतिम–सन्देश यही था....

नवमी के दिन नन्द–भवन में स्वर्ग गए, स्वर्ग गए।
'रविवार' को 'जैन-दिवाकर !' अस्त हुए, अस्त हुए ॥
आँसू बहा कर पूछ रही सहस्रों आँखें, 'मुनि केवल'....

१०

उस पार है

[तर्ज : जिया बेकरार है....] 'बरसात'

दिवाकर ! उस पार है, छाया अन्धकार है।
सावन जलधर की तरह, बह रही आंसू धार है ।ध्रुव॥

दौड़-दौड़ कर दर्शन करने, अब हम किसके जावेंजी ?
गंगोत्री-सी निर्मल-शीतल, शिक्षा किन से पावें हो ?

धर्म पिता ! बतला दो हमको, अब है कौन हमारा जी ।
हाय-हाय रे ! नीच-काल ने, लूटा 'गुरुवर' प्यारा है ॥

आत्म-शक्ति संतत्त्व निराला, मानो स्वर्ण की रेखा जी ।
जो कहता है यही कहता है, ऐसा कहीं न देखा हो ॥

ऐसे बैठते-ऐसे बोलते, यों व्याख्यान सुनाते जी ।
कर-करके ये बाते याद, अब नैना भर-भर आते हो ॥

सोचा था 'गुरुवर' सेवा में, पाली शहर में रहेंगे जी ।
कौन जानता था पहले ही, 'गुरुवर' छोड़ चलेंगे हो ?

सब दोषों की, अपराधों की, माफी हमें दिलाना जी ।
स्वर्ग-लोक की लीला-लहर में, भूल हमें मत जाना हो ॥

'कोटा' धन्य-धन्य वे सज्जन, जो गुरु सेवा पायेजी ।
नंद-भवन मशहूर हो गया, जहां गुरु स्वर्ग सिधाये हो ।

केवल मुनि' दर्शन का प्यासा, मील सवा सौ आयाजी ।
गौतम-प्रभु की भांति अन्त में, दर्शन भी नहीं पाया हो ॥

आत्मा तारी

११
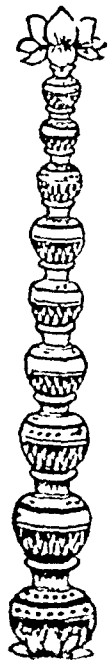
[तर्ज : जब तुम्ही चले परदेश] 'रतन',

सती कंकुजी ! पुण्यवान, हुई गुणवान, सुनो नर-नारी !
महासती आत्मा तारी....

पैंतीस वर्ष मे घर छोडा, मोह-माया से नाता तोड़ा।
दो पुत्रों के संग दीक्षा लीनी धारी....

सेवा करके सुयश लिया, एकान्तर-बेला-तेला किया।
तेतीस उपवास तक तपस्या कीनी भारी....

जब तक स्वाध्याय नही करती, एक कण भी मुंह में नहीं धरती।
कई सरस वस्तुएँ त्यागी ममत्व उतारी....

अति-सरल-शांत-गंभीर बड़ी, चरित्र-चूड़ामणि-धीर बड़ी।
सब से था सद्व्यवहार सदा हितकारी....

छत्तीस-वर्ष संयम पाला, जीवन में कीना उजियाला।
आत्मा का खटका रखती थी हरवारी....

पावन-भावना सदा ही रही, संथारा करके स्वर्ग गई।
ऐसी सतियों का शरण-परम-सुखकारी....

कहे 'राज कुँवर" बलि २ जाऊँ, कहे 'सज्जन कुँवर' गुण नितगाऊँ
ओ गुरुणीजी ! क्यों हमको आप बिसारी....

स्नेह मूर्ति

[तर्ज : दिल लुटने वाले जादूगर....] 'मदारी'

स्नेह-मूर्ति-माता 'कंकुजी' महासती जी स्वर्ग सिधाई है।
जिनके संयम की, तप-जप की नर-नारी करे बडाई है।।

अहा ! शान्ति-भाव अनूठा था, असह्य वेदना सहती थी।
कोई पूछता तबीयत कैसी है ? तो 'आनन्द है' यही कहती थी।।
महापुरुषो के समता-रस की, एक दिव्य-झलक दिखलाई है....

'मन दवा लेने से उतर गया, फिर भी इसलिये ले लेती हूँ।
स्वाध्याय-ध्यान-जप आदि बने, काया को भाड़ा देती हूँ।।
महा-भाग्यवान्-आर्याजी ने, एक दिन ऐसी फरमाई है....

करुणा-मृदुता-ऋजुता से भरा, मन-पावन था गंगा-जल-सा।
जहाँ-जहाँ भी गई, जहाँ भी रही, यश फैलाया वही परिमल-सा।।
नही कभी किसी का बुरा किया, चाही सब ही की भलाई है....

जीवन के अन्तिम चरणो में भी, शुद्ध भावना बनी रही।
आध्यात्म-साधना के अमृत से, तन से मन से मनी रही।।
जो-जो प्रतिज्ञाएं धारी, उन सब को पूर्ण निभाई है....
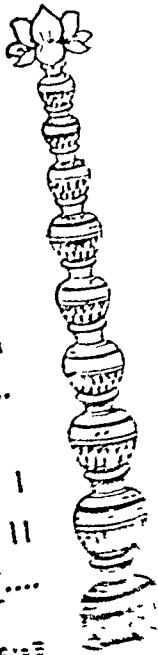
प्रकृति के तार से बंधे हुए, लाखों प्राणी नित आते हैं।
कुछ दिन अपना अभिनय करके, वह अन्त एक दिन जाते है ।।
है महत्त्व उसीका जिसने कि, जिन्दगी आदर्श बनाई है....

अब तो उनकी शिक्षाएँ ही 'केवल मुनि' एक सहारा है।
जननी के वात्सल्य की छाया, आशा का एक किनारा है ।।
कुछ कहती हुई वह भव्य-मूर्ति, अन्तर में देती दिखाई है....

वीर जयन्ती

१३

[तर्ज : प्यार करो ऋतु प्यार की आई....] 'रानी रूपमती'

जय-जय बोलो, हर्ष मनाओ, वीर-जयन्ती, आई है।
सत्य-अहिंसा के फूलों की, झोली भर कर लाई है ।।

विश्व-वाटिका की डाली पर, एक फूल जब विहंस पड़ा ।
स्वागत करने ऋतुराज ने, वन-उपवन में साज सजा ।।
पत्ता-पत्ता नाच उठा और, कोयल बोली शहनाई....

धन्य 'सिद्धार्थ' नरेश हो गए, धन्य हो गया 'कुंडल पुर'।
धन्य हो गई 'त्रिशला' माता, मंगल-गान हुए घर-घर ।।
जन्म लेते ही दिक्-कुमारिका दाई बनकर आई है....

बचपन बीता, यौवन आया, प्रभु ने वर्षीदान दिया।
संयम लेकर आत्म-शुद्धि हित, तप-सागर मे स्नान किया ।।
केवल-ज्ञान हुआ जिनवर को, आत्म-शक्ति प्रकटाई है....

तीर्थ-स्थापना कर प्रभुवर ने, मर्म धर्म का समझाया।
भूले-भटकों को मुक्ति का सुपथ सीधा दिखलाया ।।
भारत के कौने-कौने मे, प्रेम की वंशी बजाई है....
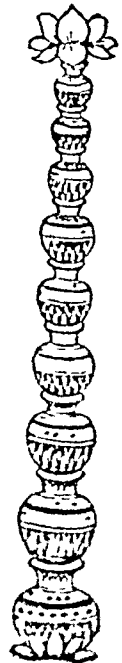
प्राणी-मात्र जीना चाहते हैं, प्राण सभा को प्यारे है।
कांटे कष्ट सभी को देते, आंसू सब के खारे हैं ॥
हिसा छोड़ो, करुणा लाओ, इसमें सब की भलाई है....

दीन-अनाथों को अपनाया, नारी का उत्थान किया।
मिथ्यावाद-पाखंड मिटाया, सदाचार का मान किया ॥
'केवल मुनि' भक्तों की नैया प्रभु ने पार लगाई है...

बिखरे मोती

बिखरे मोती

नाम से ही प्रस्तुत प्रकरण पाठकों के चित्त को चुम्बक की भाँति अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इसमें किन-किन विषयों का चयन हुआ है? कवि के हर्षोल्लासपूर्ण मानस-पटल पर समय-समय पर जिन भावों का प्रकम्पन हुआ, उन्हीं को कवि ने बड़ी खूबी के साथ लेखनी-तूलिका के द्वारा आधुनिक साजसज्जा युक्त भाषा के माध्यम से पत्र-चित्रपट पर चित्रित कर दिया है।

कविता में चुभती हुई व्यंगोक्तियाँ दिलों पर जादू-सा असर करती हैं। प्रस्तुत प्रकरण में पाश्चात्य संस्कृति में पलने वाले फैशनेबुल व्यक्तियो की तो कवि ने विद्रोहात्मक भापा में स्पष्ट खिल्ली उड़ाई है। इतना ही नही, उनका अपनी संस्कृति की ओर ध्यान केन्द्रित कराते हुए देश में बढ़ती हुई बुराइयों—चाय, सिनेमा, सट्टा आदि का भी घोर विरोध किया है।

सचमुच पाठकों को इस प्रकरण में चटपटे मसाले के अतिरिक्त जीवनोन्नति के साधन सत्य-तथ्य भी मधुरता के साथ समुपलब्ध होंगे।

—सम्पादक

अंदर ताला १

[तर्ज : ईचक दाना वीचक दाना....] 'चारसोबीस'

अन्दर ताला, बाहर ताला, ताले ऊपर ताला, अन्दर ताला ।
गोदरेज की तिजोरी पर दीवाना है लाला ! अंदर ताला...।।ध्रुव।।

चान्द जैसा गोल है, बच्चो का खिलौना है ।
रंग लाल-लाल है, चाँदी है न सोना है ।।
आ....आ.... गांव-गाँव में, नगर-नगर में जिसने डेरा डाला,
बोलो, बच्चो क्या ? पैसा' ।।

गोरा-गोरा रग है, दोनों ओर छाप है ।
पहले चोंसठ का था अब सौ बेटो का बाप है ।।
आ....आ....क्या राजा ? क्या रंक ? सभी पर इसने जादू डाला,
बोलो बच्चों क्या ? 'रुपया' !

चारों कौने राज करता चार कौने वाला है ।
जिससे नजर मिलाता उसको कर देता मतवाला है ।।
आ....आ.... झूम-झूम कर ऐसा नाचे जैसे पी हो हाला,
बोलो, बच्चों क्या ? 'नोट' !

हल्दी जैसा पीला है, सब का मन ललचाता है ।
जहाँ जाता है अपने सग-संग यह झगड़े ले जाता है ।।
आ....आ....'केवल मुनि' दुनियां मे करता अदना को भी आला,
बोलो, बच्चों क्या ? 'सोना' !
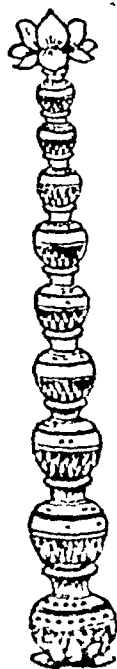
२ चाय पी रहे

[तर्ज : एक परदेशी मेरा दिल....] 'फागुन'

छोटे-बड़े सभी आज चाय पी रहे।
मीठे-मीठे जहर के सहारे जी रहे ।।ध्रुव।।

चाय नही मिलने की यही है निशानी।
सिर में है दर्द, नही चेहरे पे रवानी ।।
छाई है उदासी नही हा-हू-ही रहे....

झोंपड़ी से महलों तक चाय का ही मान है।
बड़े से बड़े का होता इसी से सम्मान है ।।
पार्टी में सब से ही आगे 'टी' रहे....

मेहमानों की आते-जाते पहली मनुहार है।
पाँच-सात मिनिट में होती तैयार है ।।
दूध-दही गया, नही लौनी-घी रहे....

काली-काली छाया से तो बच्चों को वचाईये।
आप पीएँ यही बस ! इन्हें न पिलाइये ।।
बाकी कुछ अर्जुन-भीम भी रहे....

होटलें व विक्रेता ही हो रहे आबाद है।
लाख-लाख जनता का स्वास्थ्य बरबाद है ।।
'केवल मुनि' कैसे लाज देश की रहे....

●

३

[तर्ज : कही पे निगाहें कही पे निशाना....] 'सी. आई. डी'

कहीं फिरे मनुआ, कहीं फिरे माला।
कभी ऐसी भक्ति से न, प्रभु मिलने वाला ।।ध्रुव।।

आशा के, तृष्णा के मन में खयाल हैं।
मकड़ी के तार जैसे बिछ रहे जाल है ।।
हाथों में घूम रही गट-गट माला....

धर्म-स्थान मे जो ये बगुला-भक्त जाते हैं।
कर्म-कथा करे माला निंदा की फिराते हैं ।।
राम करे, ऐसों से तो पड़े नहीं पाला....

भक्ति की शक्ति से स्वर्ग झुक जाते हैं।
भक्ति से ही भगवान घर बैठे आते है ।।
भक्ति की ज्योति से कर लो उजाला....

पहले तो पहले दृढ - आसन लगाईए।
वाणी की वीणा से फिर प्रभु-गीत गाईए ।।
'केवल मुनि' मन से पीओ प्रेम प्याला....

●

४

कैसे-जैसे

[तर्ज : प्यार में तुमने धोखा सीखा....]

सवाल—क्रोधावेग में प्राणी पागल हो जाता है कैसे ?
जबाब—बाढ़ में नदियाँ छोड़ किनारे पागल बनती जैसे !
सवाल—अभिमान में फूल के मानव बर्राता है कैसे ?
जबाब—बारिस के पानी में मेंढक टर्राता है जैसे !
सवाल—फांस डालने वाला कपटी खुद फंस जाता कैसे ?
जबाब—जाला बुनकर उसमें मकड़ी खुद फंस जाती जैसे !
सवाल—लोभी आत्मा अन्धा बनकर मिट जाता है कैसे ?
जबाब—मीठे रस के लालच में मक्खी मर जाती जैसे !
सवाल—छोड़ कषाये राग-द्वेष को मिले प्रभु से कैसे ?
जबाब—'केवल मुनि' गंगा में यमुना मिल जाती है जैसे !

कल राम राज है ! ५

[तर्ज : चुप-चुप खड़े हो जरूर....] 'वड़ी वहन'

घूमधाम छाई है, खुशी का सारा साज है।
कल राम-राज है जी, कल राम-राज है ॥ ध्रुव ॥
परिजन-पौरजन हर्ष में निमग्न थे।
उत्सव-संयोजना में सब ही संलग्न थे ॥
उन्हों के दिलों पे गिरी अनहोनी गाज है....

"प्राण नाथ ! राम को वनवास दीजिए।
राज्याभिषेक मेरे भरत का कीजिए ॥"
केकई को ऐसे कहते आई नही लाज है....

अयोध्या के नर नारी देखते ही रह गये।
प्यारे राम ! वे गए जी, वे गए जी, वे गए ॥
सोतेली-माता ने किया हाय रे ! अकाज है....

पृथ्वी-सिहासन है, लताएं ही छत्र है।
वन के है राजा-राम अमात्य-सौमित्र है ॥
भूषण - तुणीर - धनु, जटा-जूट - ताज है....

पर्ण-कुटी में सूखे पत्तो का विछौना है।
कौन जानता है मित्रो ! कल को क्या होना है ?
ऐसे होगा-ऐसे होगा 'केवल' अन्दाज है....
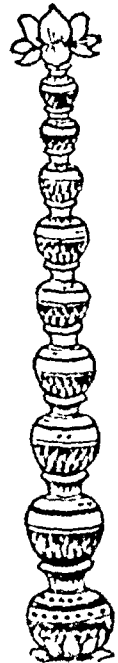
६ वनवासिनी रानी

[तर्ज : मैंने देखी जग की रीत....] 'सुनहरे दिन'

राजा ने किया अन्याय, न्याय के लाले पड़ गए।
हो, रानी को मिला वनवास, वास में कांटे गड़ गए ॥
पाँव में छाले पड़ गए ॥ ध्रुव ॥

साड़ी अस्त-व्यस्त हुई, टूटी मोहन-माला है ।
मूर्छा के भूमि गिरी, छूटी आँसू धारा है ॥
नूपुर-कुण्डल हुए टूक, हाथ के कंगन मुड़ गए....

केशर - कंचन - रंग, अंग लगी धूल है ।
मुरझाया हुआ मानों, कमल का फूल है ॥
वेणी के बिखर गए फूल, मांग के मोती झड़ गए....

शील के प्रभाव बीती वियोग की रात है ।
'केवल' रानी के हुआ, सुख का प्रभात है ॥
हुआ उदय पुण्य का सूर्य, पाप के बादल उड़ गए....

●

जीवन के दो पहलू ७

[तर्ज : चुप-चुप खड़े हो....] 'बड़ी बहन'

सुख-दुख, दुख-सुख दोनों साथ-साथ है ।
दोनो आत-जात है जी, दोनों आत-जात है ।।ध्रुव।।

दिनकर डूब गया, अंधियारा छा गया ।
उषा मुस्कराई फिर उजियाला आ गया ।
किसी वक्त दिन है, किसी वक्त रात है....

सूखा-सूखा पेड़ हुआ रंग-रूप खो गया ।
मधुऋतु आई फिर, हरा-भरा हो गया ।।
पतझड-मधुऋतु दोनो न ठहरात है....

सयोग-गिरि से वहती वियोग-तरंग है ।
दुनियाँ मे फूल और ओर काटे संग-संग है ।।
मातम कभी है, कभी आ रही वारात है....

सागर में कभी भाटा और कभी ज्वार हैं ।
सुख-दुख दोनों मानो विजली के तार हैं ।।
इन दोनों में वड़ी गहरी मुलाकात है....

सुख-दुख दोनों से ही जीवन गतिमान है।
दोनों के अस्तित्त्व से ही जीवन की शान है।।
पुण्य-पाप इन्हों के मात और तात है....

सुख के हिंडोले भूल मद में न फूलना ।
दुख के झोंको में प्रभु-नाम को न भूलना ।।
'केवल मुनि' समता ही बड़ी अच्छी बात है....

८

माखनचोर की झाँकी

[तर्ज : चुप-चुप खड़े हो...] 'बड़ी बहन'

छुप-छुप आते हो, माखन चुराते हो।
अब कहाँ जाते हो जी, अब कहां जाते हो ? ।।ध्रुव।।

पानी लेने को मैं नित्य जमना जी जाती हूं।
पीछे आके देखती हूं माखन न पाती हूं ।।
दरवाजे बन्द होते फिर कैसे आते हो....

छोटे-छोटे हाथों से कैसे खोली सांकली ?
छीके से उतारी कैसे माखन की माटली ?
बोलो जी ! जवाब दो, कैसे मुस्काते हो ?....

पकड़ लिया है तुम्हें अब कहां जाओगे ?
बोलो, मेरे श्याम ! अब किसको बुलाओगे ?
खूब जानती हूं, तुम बातों में भुलाते हो....

'केवल' यशोदाजी के पास में ले जाऊँगी।
दो इधर, दो उधर चपत दिलाऊँगी ।।
अच्छा ! लो, माखन खा लो, आंसू क्यों बहाते हो....

●

सुख-दुख दोनों से ही जीवन गतिमान है।
दोनों के अस्तित्त्व से ही जीवन की शान है।।
पुण्य-पाप इन्हों के मात और तात है....

सुख के हिंडोले झूल मद में न फूलना।
दुख के झोंको में प्रभु-नाम को न भूलना।।
'केवल मुनि' समता ही बड़ी अच्छी बात है....

•

८

माखनचोर की झाँकी

[तर्ज : चुप-चुप खडे हो...] 'बड़ी बहन'

छुप-छुप आते हो, माखन चुराते हो।
अब कहाँ जाते हो जी, अब कहां जाते हो ? ।।ध्रुव।।

पानी लेने को मैं नित्य जमना जी जाती हूं।
पीछे आके देखती हूं माखन न पाती हूं।।
दरवाजे बन्द होते फिर कैसे आते हो....

छोटे-छोटे हाथों से कैसे खोली सांकली ?
छीके से उतारी कैसे माखन की माटली ?
बोलो जी ! जबाब दो, कैसे मुस्काते हो ?....

पकड़ लिया है तुम्हें अब कहां जाओगे ?
बोलो, मेरे श्याम ! अब किसको बुलाओगे ?
खूब जानती हूं, तुम बातों में भुलाते हो....

'केवल' यशोदाजी के पास में ले जाऊँगी।
दो इधर, दो उधर चपत दिलाऊँगी।।
अच्छा ! लो, माखन खा लो, आँसू क्यों बहाते हो....

●

श्रोता
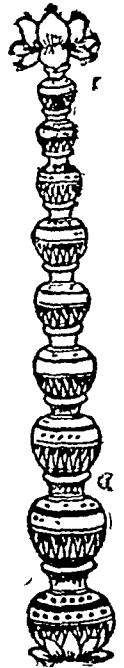
[तर्ज : चले पवन की चाल....] 'डाक्टर'

सुनाओ गुरुदेव ! व्याख्यान !
मस्त बने सब वाह्-वाह् बोले, छेड़ो ऐसी तान ।।ध्रुव।।

पांच-सात भाई पूरे नही, जिन में दो मेहमान ।
दो बच्चे-कच्चे है एक के अर्ध-वधिर है कान ।।

एक सहारा लेकर बैठा, जैसे करता ध्यान ।
उसी ध्यान में निद्रा-देवी, गले लग रही आन ।।

नव तत्त्वों के भेद न जाने, कर्त्तव्य का नहीं भान ।
सूत्र भगवती सुनना चाहें, यह कैसा अज्ञान ?

मुनियों को शिक्षा देने में, 'आनन्द' पुत्र समान ।
उनको गर कुछ कह देवें तो उठा लेय आसमान ।।

जब चाहें तब सुनले वक्ता, नहीं रेकार्ड समान ।
'केवल मुनि' जैसे श्रोता हों, वैसे हो व्याख्यान ।।

१०

जमाने के नये रंग

[तर्ज : मोहब्बत में ऐसे कदम डगमगाए] 'अनारकली'

जमाने ने क्या-क्या ? अजब रंग दिखाए।
जिन्हें स्वप्न समझते थे, सच बन के आए ।।ध्रुव।।

जो भारत की नीति थी, रीति थी भूले।
सभी पश्चिमी-रंग में, रंगते ही जाए ।।

नए लड़कों ने दे दी, फैशन को चोटी।
फिरे लड़कियाँ दो-दो, चोटी बनाए ।।

है 'सीता' की पुत्री, या लंदन की मेडम।
वह देखो जी कालेज की गर्ल जाए ।।

कभी खत्म होती न, बीबी की मांगे।
घड़ी लाए तो बोली, चप्पल न लाए ।।

पता भी न लगता, यह नर है या नारी ?
खुले सिर ओवर-कोट में जब वो आए ।।

पीयेंगे, मगर जब कहा, चाय लीजे।
तो हंस कर के बोले, कि हम 'पी' के आये ।।

मिली जब से कुर्सी, नशे में है 'केवल'।
मिनिस्टर भी राजा-सी, मौजें उड़ाए ।।

●

११ वनवासिनी

[तर्ज : वादा न भूल जाना....] 'प्यार की जीत'

अपराध तो बताओ, प्रियतम कहाने वाले ।
रानी बुला रही है, मुखड़ा जरा दिखाओ ।। ध्रुव।।

सुन करके झूठी अफवाह, नही छान-बीन करना ।
वनवास भेज देना, क्या न्याय है सुनाओ ?

निर्मल है शील मेरा, साक्षी है चाँद-सूरज ।
झूठा कलंक देकर, तुम दाग़ मत लगाओ ।।

जिसको सदा हँसाई, उसको रुला रहे हो ।
प्राणेश ! करुणा लाकर, आँसू तो पूँछ जाओ ।।

मरने से पहले करलू, जी भर तुम्हारा दर्शन ।
दर्शन की भीख देने, बस ! एक बार आओ ।।

चारों दिशा में 'केवल' चमकेगा नाम मेरा ।
हटने दो कर्म-राहू, कुछ दिन तो ठहर जाओ ।।

१२

मित्र रविवार है !

[तर्ज : छोड़ वावुल का घर....] 'वावुल'

मित्र ! रविवार है, बन्द व्योपार है, आज आना पड़ा ।।ध्रुव।।

आठ बजते ही बाजार जाता हूँ मै ।
दस बजे रात को घर पे आता हूँ मै ।।
मिलती फुरसत कहाँ ? जो मै जाऊं यहाँ, आज आना पड़ा....

आज प्रोग्राम कही और जाने का था ।
सैर करने का था, माल खाने का था ।।
याद आ ही गया, है गुरुजी ! यहाँ, आज आना पड़ा....

जो मज़ा रेडियो के चुने गीत में ।
जो मजा फिल्म में, फिल्मी सगीत में ।।
वो मज़ा यहाँ-कहाँ ? जो मैं आऊँ यहाँ, आज आना पड़ा....

यहाँ आओ तो बस त्याग-पचखान लो ।
बात ये मान लो, बात वो मान लो ।।
या तो भूखे मरो, या सामायिक करो, आज आना पड़ा....

मेरे बच्चों का भी गुरुजी ! पहचानते ।
बाप के—बाप के—बाप को जानते ॥
मिलते जहां भी कहीं, कहते आये नहीं, आज आना पड़ा....

ऐसे जैनी ! क्या धर्म को फैलायेंगे ?
कैसे आशा करें, शीश कटवाएंगे ?
'केवल मुनि' सुनो, सच्चे जैनी बनो, आज आना पड़ा....

किसको रामकहानी सुनाएँ ? | १३

[तर्ज : गम दिये मुस्तकिल....] 'शाहजहाँ'

कल थे पूँजीपति, आज शरणार्थी, कहा जाएँ ?
किसको रामकहानी सुनाएँ ? ।।ध्रुव।।

फिरते है अपना डेरा उठाए, कोई रहने को जगह बताएँ ।
कहते सब है यही, कमरे खाली नहीं, आगे जाएँ....

घर किराये दे तो मांगे पगड़ी, पगड़ी की कीमत भी तगड़ी ।
पहले था आठ में, अब मिले साठ में, क्या बताएँ....

जिंदगी खुशियों मे कट रही थी, चैन की बंसरी बज रही थी ।
सोचा था हमने क्या ? और क्या हो गया ? ख्याल आए....

आशाओं के सजे महल उजड़े, ठंछी एक घरौंदे के बिछड़े ।
कोई यहाँ गया, कोई वहाँ गया, घर बसाएँ...

कष्ट है एक सच्ची कसौटी, परखे इस पे प्रीति खरी-खोटी ।
'केवल' सहारा दिया, जिसने प्रेम किया, ना भुलाएँ....

१४ डालडा है !

[तर्ज : बेकस की आवरु को नीलाम करके छोड़ा....] 'एक ही रास्ता'

तुम कह रहे मिठाई, रंजन ही डालडा है।
इस बीसवीं सदी में सब कुछ ही डालडा है ।।ध्रुव।।

पूछा तो, उम्र बोली - 'अठारह कुल जमा है'।
तैयारी तीसरे की दो बेबी की वो मा हैं ।।
सिर पर सफद आये यौवन ही डालडा है....

चेहरे की लाज पाउडर, स्नो-क्रीम रख रहे हैं।
औ सूखी हड्डियों को कपड़े ही ढँक रहे हैं ।।
चल रहा दवा के बल पर जीवन ही डालडा है....

बाबू बनें हैं 'डेडी', मां बन रही 'मम्मी' है।
बेटा बनें है 'बाबा', थोड़ी-सी बस कमी हैं ।।
क्या नाम की कहे ? अब रिलेशन ही डालडा है....

बातों में, भाषणों में बनते हैं राष्ट्रवादी।
पैसों के मामले में पूरे हैं स्वार्थवादी ।।
नेताओं की क्या पूछो ! जन-जन ही डालडा है....

चीजों की बात ही क्या ? इन्सान भी बनेंगे ।
सूरज व चन्द्रमा भी अब डालडा ढलेंगे ।।
कलि-काल को नजर में भगवन भी डालडा है....

'केवल मुनि' ली माला, मन जा रहा है दिल्ली ।
बीच में ही उठ के भागे जो याद आई किल्ली ।।
मन क्या लगे भजन में ? जब मन ही डालडा है....

कैसी फैशन ? १५

[तर्ज : जिन्दगी है प्यार से....] 'सिकन्द्रर'

फैशन के जनून में, बाबू ! अफलातून है।
बीबी देहरादून है, आप शिमले जायेंगे।
मिसों को बुलायेंगे ॥ ध्रुव ॥

फैशन के फितूर में, धर्म-कर्म दूर है।
सुबह को जो उठेंगे, शेविंग बनायेंगे ॥
माला नहीं फिरायेंगे....

फैशन के जो कीट हैं, खाते अन्डे-मीट हैं।
सिनेमा की सीट को रिजर्व करायेंगे ॥
राज—रोज जायेंगे....

फैशन का यह ठाट है, बने फिरते लाट है।
जेब को संभालेंगे तो चार आने पायेंगे ॥
पान मुफ्त खायेंगे....

फैशन में ये हो रहे, धोबी-दर्जी रो रहे।
पैसा दे दो कह रहे, मीठी बात बनायेंगे ॥
तारीख बढ़ायेंगे....

फैशन में न केश है, जाति है न देश है।
मौज है या रेश है, इन में जर लुटायेंगे ।।
बीबी को ले जायेंगे....

फैशन मूंछ ले गई, गले फांसी दे गई।
भक्ति-नीति बह गई, किस-किस को समझायेंगे ?
'केवल' ज्ञान सुनायेंगे....

१६

प्रिय महाराणा !

[तर्ज : जब तुम्ही चले परदेश....] 'रतन'

अब कहा चले परदेश, छोड़ निज देश,
श्रो प्रिय महाराणा !
इतना तो मुझे बताना ।।ध्रुव।।

यह क्या करते हो अन्नदाता !
कुछ नहीं समझ में है आता ।
भामा को अपना समझ न भेद छुपाना....

क्या गुनाह हुआ जो छोड़ रहे ?
क्यों प्यारा नाता तोड रहे ?
मेरी धोली दाढ़ी पर करुणा लाना....

यवनों की सेना आयेगी,
मेवाड़ में लूट मचायेगी।
उस समय करेगा रक्षा कौन मर्दाना....

मैं कभी नहीं जाने दूंगा,
मैं प्रेम से तुम को रखूंगा ।
जाओ तो मेरे पर पग देकर जाना....

मां-बहिनों का सम्मान रखो,
और आर्य जाति की शान रखो।
यह कुंजी लेकर घोड़े को पलटाना....

घर-बार की भेंट स्वीकार करो,
और साध पूर्ण सरकार करो।
सेवा का मौका देकर धन्य बनाना....

पच्चीस हजार सैनिकों को,
हथियार वस्त्र और भोजन दो।
नही बारह वर्ष तक खाली होय खजाना....

मत करो हमारी तुम चिन्ता,
काफी है एक धोती-लत्ता।
खाने को कही से मिल जाएगा दाना....

ओ दानवीर ! ओ भामाशाह !
'केवल' तू धन्य है वाह-वाह !!
सोई है तेरी जाति इसे जगाना....

कैसा स्थानक ? १७

[तर्ज : मोहनगारो रे....]

स्थानक ऐसा रे ! कई गाँवों में है ढूंढा जैसा रे ।।ध्रुव।।

बारह-बारह महिना हो गया, धूलो भी नहीं काढ्योरे ।
अपणो घर समझी चिड़िया ने मालो घाल्योरे....

छिपकलियाँ ने धूम मचाई, मकड़ी तार फैलायोरे ।
खोद-खोद कर बिल चूहों ने, राज जमायो रे....

चिमगादड़ों की बासे मिगणियां, बैठ्यो भी नहीं जावे रे ।
क्षेत्र - शुद्धि बिन धर्म - ध्यान में मजो न आवे रे....

दो मकान - दो दुकान घर की चूना की बनवाई रे ।
स्थानक के खातिर टोटो है, दे नही पाई रे....

दस रुपया और रोटी कपड़ो, घर का नौकर पावे रे ।
चार आना महिनो स्थानक में, दियो न जावे रे....
साधु गया ने छोडी समाई आसन ऊँचो धरियोरे ।
या तो उदई लागी या, चूहा ने कतरियो रे....

बांड़ी पूछ की रही पूंजनी, मेली टूटी माला रे ।
मुंहपति ने दुपट्टो दोनों ही, हो गया काला रे....

फिर बोले महाराज धर्म को, फल म्हाके नहीं लागे रे ।
'केवल' दिल से कर्म करे तो, किस्मत जागे रे....

१८

भैया !

[तर्ज : रखिया बधाओ भैया....]

अखियाँ उघाड़ो भैया ! जल भर लाया हूं ।।ध्रुव।।

नौकर न बांदी है, सोना न चान्दी है।
पत्ते पलाश के लेकर, दौना कर लाया हूँ....

प्यास से तड़फे जिया, फिर भी नहीं पानी पिया।
पहले भाई को पिलाऊं दौड के आया हूं....

तेरे बिन कौन संघाती ? वन में नही कोई साथी।
द्वारका नगरी छोड़ी, तेरे संग आया हूं....

पानी पी-ले रे भाई ! रूठ न प्यारे भाई !
'केवल' मैं ऐसा भाई, किस्मत से पाया हूँ....

१९ वे दिन याद करो

[तर्ज : अब राजा भए मोरे बालम....] 'तानसेन'

अब गाली सुना रहे बेटा ! वे दिन याद करो ।.ध्रुव।।

जिस दिन तुमने जन्म लिया था, मैंने दूध पिलाया ।
पूरा रखा ध्यान तुम्हारा, अपना सुख बिसराया ।

एक दिन ब्याह में जा रही थी मैं, पहन रेशमी-साड़ी ।
उसी समय में टट्टी करके, तुमने उसे बिगाड़ी ।।

जब तुम हुए बीमार लाडले ! पल भर चैन न पाई ।
गोदी में ले बैठे-बैठ, रातें कई बिताई ।।

बेटा ! जो पालन नहीं करती, जो नहीं लाड लडाती ।
तड़फ-तड़फ भूखों मर जाते, या बिल्ली खा जाती ।।

मैंने प्रेम से तुम्हें पढाकर, करी तुम्हारी शादी ।
अब बाबू बन अकड़ रहे हो, पाकर के आजादी ।।

मात-पिता की आज्ञा माने, सेवा सदा बजावे ।
कहे 'केवल मुनि' कुल-दीपक वही, जगमें शोभा पावे ।।

२० पिता से पुत्री की माँग

[तर्ज : मेरे स्वामी ! बुलालो मुक्ति में मुझे....]

पिता ! विद्या का दान दिलाओ हमें।
शिक्षित भारत की नारी बनाओ हमें ।।ध्रुव।।

पुत्र को शिक्षित बनाने खर्च लाखों का करें।
लाडली-पुत्री को तुम अशिक्षित ही रखते अरे !
ऐसा रखते क्यों भेद बताओ हमें....

भाई को रखना ही अब बस पुत्रियों का काम है।
घर के धन्धों से उन्हे देते नही विश्राम है ।।
कैसे 'सीता' बने यह सुझाओ हमें....

पुत्र को जब तुम पढ़ाते बी० ए० और एम० ए० तलक।
टूटी-फूटी हिन्दी का भी क्या नही पुत्री का हक ?
न्याय कहाँ का है यह तो सुनाओ हमें....

रण में जाते पुत्र को कहती थी वह ललकार कर।
मुह दिखाना मात को बेटा ! धर्म जयकार कर ।।
ऐसी जननी कहाँ है दिखाओ हमें....
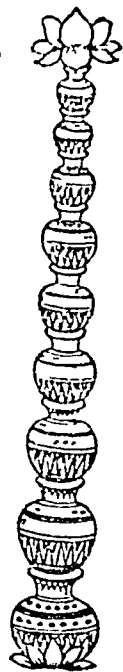
यह भी कहते हो कि "जैसी मात वैसे लाल हो"।
मात है जब मूर्खा तब कैसे जवाहरलाल हो?
कहता इतिहास क्या समझाओ हमें....

वस्त्र, जेवर, धन न चाहें, एक कृपा कीजिये।
प्रार्थना 'केवल' है विद्यादान हमको दीजिये॥
धर्म-नीति विज्ञान पढ़ाओ हमें....

दो साथी

२१

[तर्ज : पीर-पीर क्या करता रे नर !....]

गृह-जीवन के दो साथी हैं, एक पुरुष, एक नार ।।ध्रुव।।

एक पक्षी की दो पाखें है ।
एक आनन की दो आंखें है ।।
एक बिन गगन-विहार न होता एक बिन है अंधियार....

एक नाव के खेवनहार है दो ।
एक नैया के पतवार है दो ।।
ओघट - घाट जायेगी नैया, जो छूटी पतवार....

एक सूर्य है, एक कमलिनी है ।
एक चन्दा है, एक रजनी है ।।
बिना चन्द्र के रजनी का है भाल शून्य भयकार....

एक सीता है, एक रघुवर है ।
एक राधा है, एक गिरधर है ।।
दोनों से दोनों की शोभा, दोनों से शृंगार....

सुख-दुख के साझीदार है दो ।
वीणा के मंजुल तार है दो ।।
जिन की स्वर लहरी है मीठी मधुर - मधुर झंकार....
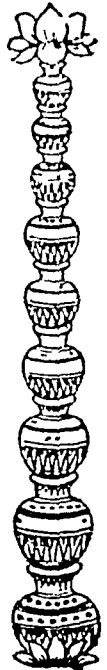
दो होकर भी एक प्राण हैं दो।
सरिता के कूल समान है दो ॥
कल - कल कर बहती है जिन में प्रणय - प्रेम की धार....

तप - संयम - धर्माचार में दो।
इस पार में दो, उस पार में दो ॥
धन्य-गृहस्थ ! वही गृहस्थाश्रम वही 'केवल मुनि' बलिहार....

२२ धनवान क्या ?

[तर्ज : इन्सान क्या जो ठोकरें....]

धनवान क्या ? दो रोटियाँ गरीव को न दे सके ।
धनवान क्या ? दुआएँ जो गरीब की न ले सके ।।ध्रुव।।

वह पेड़ कहीं अच्छा है, उस मूंजी के मुकाबिले ।
जो सामने आये हुए को छाया भी न दे सके ।।

हैवान भी कहेगा नहीं, उस आदमी को आदमी ।
जो गैर को देते हुए अच्छा भी न कह सके ।।

है नाम बका धन फना, फना में फना होगया ।
'केवल मुनि' भलाई ले, इससे अगर तू ले सके ।।

सीता का आदर्श | २३

[तर्ज : मैं उनकी वन जाऊँ रे....]

मैं वन में संग आऊं रे, मैं वन में संग आऊँ।
तुम पितृ-भक्ति, मैं पति-भक्ति का आदर्श दिखाऊँ रे !।ध्रुव।।

काँटे बीनूंगी मै पथ में।
छोड़ूंगी नही साथ विपत में ।।
चलते-चलते थक जाने पर तुमरे पांव दबाऊँ रे....

जब स्वजनों की याद सताये।
वन में मन, उन्मन अकुलाये ।।
तब मीठी-मीठी बातों से मै जी को बहलाऊँ रे....

जहां बनाओगे प्रिय ! कुटिया।
वहीं लगाऊँगी मैं बगिया ।।
मेरे स्वामी को फूलों का मुकुट बना पहनाऊँ रे...

महलों से वन होगा प्यारा।
संग बहेगी जीवन - धारा ।।
प्रेम - तरंगों में किलोल कर मैं आनन्द मनाऊँ रे....

जहां रहे प्रिय-तन की छाया।
वही रहे पत्नी की काया ।।
'केवल' इन नीति-वचनों को निशदिन नाथ ! निभाऊँ रे....

२४ सट्टेबाज़ अपनी पत्नी से ।

[तर्ज : सर जो तेरा चकराए....] 'प्यासा'

लोग तुझे बहकाए, तू बात में आ जाए ।
जल्दी से जल्दी, दे-दे नकदी, काहे घबराए-काहे घबराए?।।ध्रुव।।

रुपया लगे न पाई, मुफ्त में होय कमाई ।
दो घंटे के फेर-बदल में चाटे दूध मलाई ।।

सुन-सुन-सुन, अरी ओ री सुन ! इस धंधे में बड़े-बड़े गुन....
बाबाजी से फीचर लाया, क्यों न आजमाए....

घर-मालिक का झगड़ा, कर्जदार का रगड़ा ।
एक दिन में सब फंदा छूटे, पड़े दाँव जो तगड़ा ।।

सुन-सुन-सुन, अरी ओ री सुन ! इस धंधे में बड़े-बड़े गुन....
बाबाजी से फीचर लाया, क्यो न आजमाए...

लाऊँ फोर्ड की गाड़ी, नई सिल्क की साड़ी ।
साड़ी पहन कर ऐसी लगेगी, जैसे हो नई लाड़ी ।।

सुन-सुन-सुन, अरी ओ री सुन ! इस धंधे मे बड़े-बड़े गुन....
बाबाजी से फीचर लाया, क्यो न आजमाए....

क्या स्टुडेन्ट-क्या मास्टर ? क्या पेशेन्ट-क्या डाक्टर ?
'केवल मुनि' सब सट्टा करते, क्या मिस और क्या मिस्टर

सुन-सुन-सुन, अरी ओ री सुन ! इस धंधे में बड़े-बड़े गुन....
बाबाजी से फीचर लाया, क्यों न आजमाए....

पत्नी, सट्टेबाज़ पति से !

२५

[तर्ज . सर जो तेरा चकराए....] 'प्यासा'

जो सट्टे की राह जाए, वो चैन कैसे पाए ?
चिन्ता छिन-छिन, सूखे दिन-दिन, काहे बहकाए २ ? ॥ध्रुव॥

पास बचे ना पाई, लुट जाए सभी कमाई ।
दाने-दाने को भी तरसे, कैसी दूध मलाई ?
सुन-सुन-सुन, मेरे राजा सुन । इस सट्टे में सौ अवगुन ।
लाखों बने भिखारी इसमें फिर भी समझ न आए, काहे बहकाए....

सर पर चढ़ा किराया, बनियाँ नोटिस लाया ।
धोबी-नाई-दर्जी रो रहे, दूध वाला भी आया ॥
सुन-सुन-सुन, मेरे राजा सुन ! इस सट्टे में सौ अवगुन ।
लाखों बने भिखारी, इसमें फिर भी समझ न आए, काहे बहकाए....

बिक गई मोटर गाड़ी, फटी पहन रही साड़ी ।
आज बिचारी लाजो मर रही, फूटरमल की लाड़ी ॥
सुन-सुन-सुन, मेरे राजा सुन ! इस सट्टे में सौ अवगुन ।
लाखों बने भिखारी, इसमें फिर भी समझ न आए, काहे बहकाए....

कह-कह कर मैं हारी, मानों बात हमारी ।
'केवल मुनि' सट्टे को छोड़ो, पाओगे सुख भारी ॥
सुन-सुन-सुन, मेरे राजा सुन ! इस सट्टे में सौ अवगुन ।
लाखों बने भिखारी, इसमें फिर भी समझ न आए, काहे बहकाए....
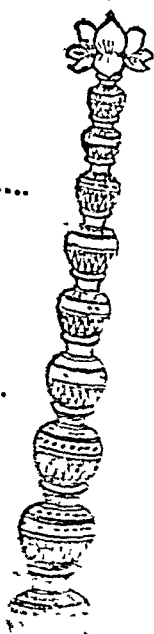
२६ भारतवासी भाई-भाई

[तर्ज : मेरा जूता है जापानी....] 'चारसौबीस'

भारतवासी भाई-भाई, करते आपस में लड़ाई ।
फिर यह कहते शर्म न आती, हिन्दी-रूसी भाई-भाई।।ध्रुव।।

प्रान्त को अपना देश मानते, देश-विदेश बताते ।
'वसुधैव कुटुम्बकम्' को यह दिन-दिन भूले जाते ।।
बेईमानी सब में छाई, करने लगे है बुराई....

कुटुम्व व्यक्ति से ऊंचा है, और जाति कुटुम्व से वढ़कर ।
जाति से ऊपर प्रान्त है, लेकिन राष्ट्र पे सब न्योछावर ।।
जब से यह भावना भुलाई, तव से लाखों आफत पाई....

राष्ट्र की सुविधा की दृष्टि से, प्रान्त वनाये जाते ।
प्रांत ही को जो राष्ट्र समझते, वे ही कलह मचाते ।।
उन्होंने ही आग जलाई, उन्होने ही जंग मचाई....

महाराष्ट्रीयन या गुजराती, मद्रासी-पंजावी ।
मालवी हो या मारवाड़ी हो, विहारी-बंगाली ।।
सब से रखना तुम मिताई, सव की है एक भारत-माई....

देश-प्रेम के मधु से भीगा, हिंद का है यह नारा ।
'काश्मीर से कन्याकुमारी' तक सब देश हमारा ॥
पाटो-पूरो दिल की खाई, इसमें सब की है भलाई....

भारत का इतिहास कह रहा, फूट से क्या फल पाये ?
सुख-शान्ति, सन्तान करोड़ों, फूट की भेंट चढ़ाये ॥
'केवल मुनि' जन रहे सुनाई, हाय ! फिर भी समझ न पाई....

चाय का संवाद

२७
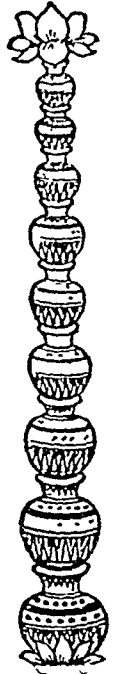
[तर्ज : ओ कान्हा ! बासुरियां फिर से बजा....] 'ताज'

लीला—चाय की प्याली पिला,
ओ शोभा ! चाय की प्याली पिला ॥ध्रुव॥

शोभा—दूध की प्याली पी आ,
ओ लीला ! दूध की प्याली पी आ ॥

लीला—चाय न पीऊं तो, चैन न आवे ।
काम न होवे, उदासी-सी छावे ॥
जल्दी से चाय बना, ओ शोभा ! चाय की प्याली पिला....

शोभा—चाय शरीर का मांस सुखाती ।
गर्मी बढ़ाती है, खून जलाती ॥
धातुएँ देती गला, ओ लीला ! दूध की प्याली पी आ....

लीला—चाय तो सखी ! मेरे प्राणों की प्राण है ।
चाय आई, तो मानों आए भगवान हैं ॥
चाय मिली, सब मिला, ओ शोभा ! चाय की प्याली पिला....

शोभा—चाय निकम्मी संतान बनाती ।
अरबों रुपयों में, आग लगाती ॥
अखबार रहे हैं बता, ओ लीला ! दूध की प्याली पी आ....

लीला—भोजन बिना दो-दो दिन भी निकाले ।
चाय बिना एक वेला न चाले ।।
सिर दर्द की है दवा, ओ शोभा ! चाय की प्याली पिला...

शोभा—पेट्रोल बिना जैसे कार वेकार है ।
चाय बिना तन की चलती न कार है ।।
खोटी आदत ली लगा, ओ लीला ! दूध की प्याली पी आ....

लीला—चाय बिना दूध भाता नहीं है ।
हजम भी न होता, सुहाता नहीं है ।।
लिपटन की पुड़िया मंगा, ओ शोभा ! चाय की प्याली पिला....

शोभा—चाय ने राष्ट्र को निर्बल बनाया ।
घी-दूध-मक्खन का खाना छुड़ाया ।।
शक्ति को कर दी है स्वाहा:, ओ लीला ! दूध की प्याली पीआ....

[लीला मान जाती है]—

चाय बिना मैं खुशी से जीऊँगी ।
'केवल मुनि' अब कभी ना पीऊँगी ।।
तेरा ही कहना सुना, ओ शोभा ! दूध की प्याली पिला....

२८

तेरे लिए

[तर्ज : मेरे लिए जहान मे चैन ना....] 'खानदान'

तेरे लिए जहान में मस्ती-भरी वहार है।
बाहुस्न-नाज़नीन का हसरत भरा पियार है ।।ध्रुव।।

खाता है दिन में तीन बार, करता है कुल्ला दूध से।
ऐसे भी है जो भूख से, तड़फ रहे लाचार हैं ।।

मेले-फटे कमीज पर, पैबन्द दस गरीब के।
तेरे यहाँ है सड़ रहे, लग रहा अम्बार है ।।

दो दिन हुए दवा नहीं, बेहोश हैं पड़ा हुआ।
टूटी-सी चारपाई पर, बेवस है और बीमार है ।।

महकेगा फूल की तरह 'केवल' परोपकार से।
जायेगे साथ ये नही, जिन पे तू जां निसार है ।।

एक दुखिया की कहानी

२९

[तर्ज : दुखिया की कहानी....]

दिन दहाड़े लुटवाई, रे लोभी-पंचों ने ।
नही करी सुनवाई, रे लोभी-पंचों ने ।।ध्रुव।।

पति मरे दो दिन न बीते, पंच आये घर पे सीधे ।
मौसर की कहलाई, रे लोभी-पंचों ने....

गृहस्थी सारी पूगी कच्ची, तीन बच्चे-एक बच्ची ।
नहीं कर सके कमाई, रे लोभी-पचों ने....

पास में पूरे न पैसे, पेट इनका पालूं कैसे ?
कैसे होगी सगाई ? रे लोभी-पंचों ने....

पंच बोले–कहा न माना, रुक जायगा आना-जाना ।
इसमें नही है भलाई, रे लोभी-पंचों ने....

विवश कर मौसर कराया, कर दिया घर भी पराया।
लड्डू में ललचाई, रे लोभी-पंचों ने....

पुत्र भी पढ़ने न पाये, विना पैसे कौन व्याहे ?
निर्धन मिला जँवाई, रे लोभी-पंचों ने....

'मुनि केवल' ध्यान दीजे, कौम घट रही खबर लीजे ।
अब तक बहुत गंवाई, लोभी-पंचों ने....

यह कैसी है सामायिक ? ३१

[तर्ज : मेरा जूता है जापानी....] 'चारसौबीस'

पांच-सात मिल के आई, माला निंदा की फिराई,
तुम्ही कह दो मेरी बहनों ! यह कैसी है समाई ? ।।ध्रुव।।

राजी बाई-रतनी बाई, साणी सुड़ी बाई ।
दोपहरी में या संध्या में, स्थानक मे सब आई ।
अब बातों की झड़ी लगाई, कच्ची पक्की सुनी-सुनाई....

एक कहे ओ प्रेम भुवाजी ! कल क्यों हुई लड़ाई ?
बड़ा मजा आया होगा पर मैं नही आने पाई ।।
आये कमला घर जमाई, गाली गाने को बुलाई....

सासु-वहु का, घर-बाहर का गीत सभी का गाया ।
साधु-सतियाँ कोई बची नहीं, सब का नम्बर आया ।।
नमक-मिरची खूब मिलाई, बन गई पर्वत जैसी राई....

निंदा-विकथा के पुराण का, कभी अन्त नहीं आता ।
नये-नये अध्याय से पोथा, दिन-दिन बढ़ता जाता ।।
तेरी-मेरी चुगली खाई, इसकी-उसकी करी बुराई....

'केवल मुनि' कितनी सामायिक, की ये गिनती करती ।
कैसी सामायिक की इसका, ध्यान न बहिनें रखती ।।
सच्ची 'पुण्या' की समाई, जिसकी प्रभु ने करी बड़ाई....